आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ. सुभाष जैन, उज्जैन

प्रमुख सलाहकार

श्री प्रेमजी डूंगरवाल

35, तिलकनगर, इन्दौर

मोबा. नं.94253-13434

संपादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46,सखीपुरा,उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं.-94250-91012

E-mail-Subash3333@yahoo.co.in

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O से **श्री अभ्युदयफाउण्डेशन**, उज्जैन के नाम सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी।

-डॉ.सुभाष जैन

अरिहंत प्रभु यह मानते हैं कि गत कितने ही भवों के कर्मों के ऋण से मैं दबा हुआ था। मैं धीरे-धीरे ऋण मुक्त हो रहा था। इसने मुझे अति शीघ्र कर्मऋण से मुक्त कर दिया। इसे मेरी शक्ति का परिचय कैसे दूँ।

आशीर्वाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्रीनवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जहां अंडप्पभवा बलागा, अंडं बलागप्पभवं जहा य।

एमेव मोहाययणं खु तुण्हा,मोहं च तण्हाययणं वयंति।।

जैसे बलाका (बुगली) अण्डे से उत्पन्न होती है और अण्डा बलाका से उत्पन्न होता है, उसी प्रकार तृष्णा मोह से उत्पन्न होती है और मोह तृष्णा से उत्पन्न होता है। ***- उत्तरा. सूत्र. 32.6***

पाथेय

हे मेरे मधुर स्वामी! अपनी महान कृपा वश तुमने किया है स्वीकार कि मैं अपने इस लघु अस्तित्व के साथ तुमसे संयुक्त हूं, तुम्हारी चेतना एवं हृदय से अभिमन्न हूं। और अब मेरी इच्छा तुम्हारी ही इच्छा का बन गई है एक माध्यम मैंने ऐसा क्या किया था जो तुमने इतनी अपूर्व प्रसन्नता मुझे प्रदान की? कुछ नहीं केवल अभिलाषा की थी, अनवरत चाहना की थी। अब हे प्रभु यह तुम्हारी इच्छा है कि यह प्रसन्नता मेरे माध्यम से अधिक से अधिक मनुष्यों में हो सके संचरित, कर सकें, उन्हें लाभांवित जिससे वे सब भी तुमसे प्रेम करें, तुम्हें पहचानें एवं सेवा में तत्पर और तुम्हारे प्रति अपने आत्मसमपर्ण की श्रेष्ठता को समझें ग्रहण करें, हे प्रेम, दिव्य प्रेम! तू विश्वभर में फैल जा। जीवन को जीवनी शक्ति दे, बुद्धि को तेजस्विता प्रदान कर, अहंकार के अवरोधों को तोड़ डाल, अज्ञान से उत्पन्न व्यवधानों को खंड-खंड कर दें और पृथ्वी पर परम अधिष्ठता के रूप में सुशोभित हो।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रूपये
आजीवन	1000/- रूपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रूपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रूपये
एक प्रति	10/- रूपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-22 माघ-अगहन फरवरी 2017 अंक (2)

विषय-सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	1
2- विषय सूची	2
3- समय तो नहीं बदला है हम अपने को जरूर बदलें (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन	3
4- छोड़ने लायक बावीस अभक्ष्य पदार्थ- प.पू.अमितगुणा श्रीजी म.सा., अपने अन्दर विशेषता रखना- रामेश्वरप्रसाद गुप्त 'इंडु'	4
5- श्री कयावन्ना-चरित्रम्-आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वरजी म.	5-6
6- तारंगा तीर्थ	7-8
7- श्री भोपावर महातीर्थ : नवरत्न का है.... चार्तुमास, 100 वीं ओली पारणा-अग्नि संस्कार - डॉ. सुभाष जैन, भलाई की दीवार : बाल जीवन	9-11
8- एग्री हं नत्थि मे कोई-आ.श्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.	12
9- पाप की सजा भारी...! -प.पू.आचार्य श्री अरूणविजयजी म.,किसका त्याग अधिक?	13-14
10-तीर्थाधिराज शत्रुंजयगिरि के पंद्रहवें उद्धार का अपूर्व इतिहास	15-17
11-धर्म पुरूषार्थ- जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरजी 'राजहंस'	18
12-नव वर्ष, पार्श्वनाथ जयंती और अहिंसा-दिवस-डॉ.दिलीप धींग	19
13-भावात्मक सशक्तिकरण का बढ़ता महत्व- प्रफुल्ल पारख, पूणे	20
14-नवकार मंत्र का प्रभाव....	21-22
15-सागर समुदाय के गौरव....., जल का मूल्य	23-24
16-भविष्यवाणियां, जो सत्य निकली.... शिवकुमार गोयल	25-26
17-जैन धर्म व श्रावक जीवन....!, वृत्ति, बुंद्धि, विवेक, भलाई की दीवार- नमिरत्नसागर म.	27-28
18-श्री सिद्धचक्र महापूजन	29
19-वर्ग पहेली क्रमांक-266	30
20-ज्ञान गंगोत्री कमांक-266 -पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म.	31
21-आगमोद्धारक भविष्य फल-फरवरी 2017-अनु दीपक जैन	32
22-शासन समाचार	33-39
23-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण,सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, संसार में तो दुःख ही होता है- पं. गुणसुंदरविजयजी गणी	40

संपादकीय

समय तो नहीं बदला है हम अपने को जरूर बदलें

काल का प्रवाह और प्रभाव तो अपनी गति से निरंतर चल रहा है न तो हम उसकी गति को तेज कर सकते है और नहीं हम उसे घटा सकते है, काल को रोकना और परिवर्तित करना मानव के लिये असंभव है परन्तु मानव का जीवन बदलता रहता है, उसमें कब क्या होगा इसे भी हम ज्ञात नहीं कर सकते है। अक्सर मानव यह सोचता है कि दुःख का समय शीघ्र ही व्यतीत हो जाये और सुख का समय हमेशा ही बना रहे लेकिन यह होता नहीं है। मानव समय को अपनी मुट्ठी में बांधना चाहता है पर समय रोकता नहीं बल्कि जैसा समय नचाता है वैसा मनुष्य को उसके साथ चलना पड़ता है। लोग कहते है कि समय बदल गया है, समय नहीं इन्सान बदल गया है, उसकी जीवनशैली, विचार धारा-कार्य व्यवहार बदल गया है, हम व्यर्थ में ही समय को दोष देते है, आप ही विचार कीजिये हमारे आसपास की दुनिया में जो बदलाव हुए है क्या समय ने किये, नहीं ऐसा नहीं, समय तो व्यतीत हो रहा है, करनेवाला तो मनुष्य है।

आज जो कुछ भी बदलाव हम देख रहे है वे सब मनुष्य के कारण हुए है। दुनिया अपने अनुसार नहीं बदली है बल्कि दुनिया को मनुष्य ने अपने अनुसार बदला है। मानव सब कुछ अपने अनुसार चाहता है, वह सबको अपने अनुसार ढालना चाहता है, टूटते घर, बिखरते रिश्ते, बढ़ते वाद विवाद इन्हें किसने पैदा किया है, अपने स्वार्थ के लिये हम सब कुछ भूल गये है, हमारा स्वार्थ जिससे सिद्ध हो वह काम करना ही चाहिये ताकि इसके लिये हमें चाहे प्रार्थना-प्रेम और वात्सल्य को छोड़ना पड़े तो छोड़ देंगे। लगता है इंसान ने अपनी इन्सानियत को छोड़दिया है। प्रतिदिन के अखबार के समाचार हमें सब कुछ कह देते है। यह सब कुछ करनेवाला व्यक्ति इसी समाज का अंग है जिसमें उसका परिवार भी रहता है फिर भी वह सब कुछ करता है जो उसे नहीं करना चाहिये।

अहिंसामय इस भारत की पुण्य भूमि ने परमाणु का नहीं बल्कि परमात्मा को जन्म देकर उसे महान बनाया है। अहिंसा के मार्ग पर चलकर उसका सच्चा पालन करनेवाला भारतीय ही होगा हमारी इस मान्यता पर अब प्रश्न चिन्ह लग रहे है, बदलते परिवेश ने हमें कहां से कहां पहुंचा दिया है। बच्चों, महिलाओं पर होनेवाले अत्याचार सुन देखकर डर लगता है कहीं हमारे बच्चे इन आताताईयों के चुंगल में नहीं फस जाये। पैसे के लिये मानव सब कुछ करने के लिये तत्पर बना है। बच्चों, बड़ों के अंग बेचने के लिये उनका अपहरण करना, अंग निकालकर मार देना? यह क्या हो रहा है। दुष्कर्म के लिये छोटे-बड़ेकी सब सीमा का उल्लंघन कर अत्याचार ही नहीं, जान ले लेना किस सीमा तक मनुष्य दरिंदा हो गया है। यह सब कल्पना के लिये विपरित लगता है और हम कहते है कि समय बदल गया है? आतंकवाद की घटना तब छोटी लगती है जब हमारे आसपास ही लोग आतंकी से ज्यादा घृणित खेलते है। लगता है धर्म और भगवान यह केवल शब्दिक अर्थ है। धर्म और भगवान का डर तो कहीं दिखता ही नहीं है, चारों ओर भय और डरावना माहौल दिखाई देता है, कब क्या हो जायेगा? यह भय बहुत ही भयानक लगता है, यात्रा अच्छे काम के लिये करने गये थे घर लौटने के लिये लाश भी नहीं मिले तो परिवार का क्या हाल होगा? कौन सोचता है इन सबके बारे में? समय नहीं आदमी बदल कर बहुत खतरनाक हो गया है।

अगर बहुत गहराई से हम चिंतन करेंगे तो अनुभव होगा कि हमारी पहचान बड़े-बड़ेतीर्थ मंदिर नहीं है, ताजमहल, कुतुब मीनार या लालकिला नहीं है, कश्मीर कन्याकुमारी, दिल्ली, मुंबई नहीं है, गंगा-जमना-सरस्वती जैसी पावन नदियां नहीं बल्कि इन नदियों में प्रवाहित होनेवाली धर्म संस्कार और जियो और जीने दो की संस्कृति है जिसमें हिंसा-अत्याचार के लिये कोई स्थान नहीं है। इससे यह संदेश सब दिखाई देता है कि हमारा देश पूर्ण रूप से अहिंसक धर्मप्रेमी मान्यता और परम्परा का निर्वाह करनेवाला देश है, हमारे यहां अत्याचार, अन्याय और स्वार्थ से जीवन जीने वाली संस्कृति नहीं रही है बल्कि दिलों को जीतनेवाली की परम्परा के हम पोषक रहे है तो फिर इन्सान इतना बेदर्द-हिंसक और स्वार्थी कैसे हो गया है।

हमारी संस्कृति चरित्र प्रधान है सदा जीवन और उच्च विचार हमारी परम्परा है, हम मूल रूप से धार्मिक जीवन जीने वाले लोग है, दूसरों को कांटा चुभे तो दर्द हमें होता है, ऐसे अहिंसक भाव के धारक है तो फिर हमारे आचार विचार रहन-सहन, रीति-रिवाज और भावों में जो हिंसक प्रवृत्ति जागृत हुई है उस पर लगाम लगाने के लिये बुद्धि जीवियों के द्वारा वैचारिक क्रांति तथा महात्माओं के द्वारा जन, मन, स्वच्छता आंदोलन की उच्च स्तर पर पहल करने की आवश्यकता प्रतीत हो रही है यही नहीं हिंसक-अत्याचारी, आतंकी प्रवृत्तियों से लगे लोगों के सामाजिक बहिष्कार तथा समाज से अलग-थलग करने के लिये स्वार्थहीन जनसहयोगी पहल की आवश्यकता भी दिखाई दे रही है। हमारे चारों ओर होनेवाले अत्याचारों, हिंसा की घटनाओं के देखने, सुनने के बाद भी हमारे चेहरे पर कोई शिकन तक नहीं आती है, बड़ी-बड़ी दुर्घटना, मृत्यु, हिंसा जैसी घटनाओं को टीवी पर देखते हुए हम खाना खाते, हंसी-मजाक करते है हम पर कोई असर नहीं होता है.... कहां गई हमारी संवेदनाएं, कहां गई हमारी इंसानियत, कुछ विचार करें।

आईये! बदलाव की बयार की अपने से ही शुरूआत करें। जहां भी संभव हो हम अपनी जागरूकता का परिचय दें। अपने अच्छे धार्मिक और व्यवहारशील होने का परिचय दें और यह सिद्ध कर दें कि समय तो नहीं बदला है हम अपने को पुनः जरूर बदल लें। इसी विश्वास से।

- डॉ. सुभाष जैन

छोड़ने लायक बावीस अभक्ष्य पदार्थ

गतांक से आगे....

✽ प.पू.अमितगुणा श्रीजी म.सा.

18- बैंगन :- सभी जाति के बैगन अभक्ष्य है उसमें बीज बहुत होते है, उसकी टोपी में सूक्ष्म जीव होते है, जिसके खाने से नींद बहुत आती है तथा अतिविकार निर्ध्वस परिणाम उत्पन्न होते है अतः अभक्ष्य कहा है।

20- अजाने फलः- जिसका नाम जाति गुण व द्वीप कोई भी जानता न हो तथा खाने में अपसिद्ध हो, ऐसे फल एवं फूल अभक्ष्य होते है उनके गुण व दोष की जानकारी नहीं होती है यदि विष फल हो तो आत्मघात होता है अतः उनका त्याग करना श्रेष्ठ है।

21- तुच्छ फल :- जो असार पदार्थ है तृप्ति कारक नहीं है बहुत फल खाने पर भी तृप्ति नहीं होती है खाने का थोड़ा व फेंकने का ज्यादा जैसे छोटे बोर, गुंदे, जामुन वि.सभी प्रकार के कोमल (कच्चा) फल तुच्छ जानवर त्याग करना उत्तम है।

22- चलित रस- जिसका स्वाद बदल जाता है वह 'चलित रस' कहलाता है को ही (जिसका स्वाद बिगड़ गया हो) गए तथा बासी वस्तु का समावेश इसमें होता है। चलित रसवाले पदार्थ में रूप रस, गंध, स्पर्श वि. बदल जाते हैं। स्वाद में खारापन अथवा अरूचिकर लगता है इसमें विविध वस जन्तु लालिया जीव फूलन वि निगोद के अनंत जीव उत्पन्न हो जाते है, अनंत जीवों की हिंसा के कारण चलित रस को अभक्ष्य माना है।

बाटी, बाफला रोटी, दाल, भात, शाक, खिचड़ी, सिरा, लापसी, भजिया, पराठे पुडले, बड़े, नरम-पुड़ी ढोकले वि. रात में रखने पर बासी गिनाते है उसमें पानी का अंश होने से लालिया जीव उत्पन्न हो जाते है, खाने से जीवों की हिंसा और आरोग्य का नुकसान होता है अतः बासी वस्तु खाना वर्ज्य है। रखना भी वर्ज्य है, दूसरे दिन कुत्ता, गाय वि. गरीबों को देने में भी दोष है।

अपने अन्दर विशेषता रखना

✽ रामेश्वरप्रसाद गुप्त 'इंदु', बड़गांव-झांसी (उ.प्र.)

दोष देखे न द्वेषता रखना।
अपने अन्दर विशेषता रखना।।
आप जब तक सजीव दुनिया में,
मन के मंदिर में देवता रखना।
एक मानुष का तन मिला तुमको,
सत्य जीवन मनुष्यता रखना।
काम मद मोह लोभ में फंसकर,
अब नहीं छल कलेषता रखना।
दूर रहना बुराई से जग में,
कष्ट सहकर भी श्रेष्ठता रखना।
रंग देखो न रूप को देखो,
प्रीत मय रीत जोषिता रखना।
तर्क रखना कुर्तक मत करना,
एक में भी अनेकता रखना।
रख सरलता विचार भाषा में,
तुम सरसता सहेजता रखना।
प्रेम पावन परम्परा रख के,
'इंदु' गुरू ज्ञान शिष्यता रखना।।

महात्मा रामानुजाचार्य अपनी शारीरिक दुर्बलता के कारण नदी में स्नान करने जाते समय, जाते हुए लोगों का सहारा लेकर जाया करते थे। जाते समय वे ब्राह्मण के कंधे का सहारा लेते और आते समय शूद्र के कंधे पर हाथ रखकर आते।

लोगों ने आश्चर्यपूर्वक पूछा- भगवन्! शूद्र के स्पर्श से तो आप अपवित्र हो जाते हैं, फिर स्नान का महत्व क्या रहा?

आचार्यजी मुस्कराए उन्होंने कहा- स्नान से मेरी देह मात्र शुद्ध होती है। मन का मैल तो अहंकार है। जब तक मनुष्य में अहंकार शेष है, तब तक उसे मन का मलीन ही कहा जाता है। मैं शूद्र का स्पर्श करके अपने मन की मलीनता स्वच्छ करता हूं। मैं किसी से बड़ा नहीं, सब मुझसे ही बड़े है, शूद्र भी मुझसे श्रेष्ठ है, इसी भावना को स्थिर करने के लिये शूद्र का सहारा लिया करता हूं।

उत्तर युक्तियुक्त था,पूछने वालों का ठीक समाधान हो गया।

शरीर ही नहीं मन को भी पवित्र रखने की व्यवस्था करनी चाहिये।

श्री कयावन्ना-चरित्रम्

✻ आचार्य श्री जयानंदसूरीश्वरजी म.सा.

गतांक से आगे....

अब एक दिवस कयवन्ना ने देवदत्ता के द्धारा लाये हुए आभरण को किसी दुकान में बेचकर उसके अर्ध-भाग को दोनों पत्नियों के निर्वाह के लिये स्थापित किया था और अर्ध-धन से व्यापार करने की इच्छा कर रहा था। अब एक दिन किसी एक जल-जहाज के व्यापारी का जहाज जाने जा रहा है, इस प्रकार सुनकर उस जहाज में बैठकर व्यापार करने की इच्छा से देशान्तर जाने की इच्छावाला हुआ था। इसलिये ही घर की व्यवस्था कर और दोनों पत्नियों को बुलाकर कहने लगा कि- हे देवीयों! अब धन के उपार्जन के लिये देशान्तर जाने की इच्छा कर रहा हूं, इसलिये तुम दोनों तब तक मेरे वियोग को सुख से सहन करो और अपने आचार पालन में तत्पर आप दोनों ही अवसर पर धर्म की भी आराधना करें और यथा-अवकाश समाज की स्त्रियों को एकत्रित कर अपने सद् विचार का भी प्रवर्त्तन करें। हे प्रेयसीयों! आप जैसी कला-कुशल और चतुर स्त्रियों को मैं अन्य क्या कहूं?

इस प्रकार दोनों स्त्रियों से संभाषण कर वह सायंकाल में घर से चलने लगा था। उस अवसर पर दोनों स्त्रियों ने कहा कि- हे प्राणनाथ! आप जाओं इस प्रकार कहने के लिये कैसे भी जीभ उठ नहीं रही है, परन्तु इस प्रकार से मांगलिक अवसर में अपशकुन न हो, इसलिये उसे भी सुख पूर्वक ही हम दोनों कह रही है और अब आनंद से उत्पन्न हो रहे नयन-जल को भी यह अमंगल है इस प्रकार के भय से उसे भी हम दोनों नहीं छोड़ती है किन्तु केवल यह ही आन्तरिक हर्षोद्‌गार विलास कर रहा है कि आप कुशल होते हुए अपनी इष्ट-सिद्धि कर और शीघ्र से यहां आकर हम दोनों को आनंदित करें, शासन-देवता आपके मार्ग को सुखमय करें और विघ्नों को नष्ट करें और देशान्तर में सदा ही आप सावधान रहे, और लेश-मात्र भी हमारे लिये दुःखित न बनें और गृह आदि की भी चिंता न करें तथा कदापि हम दोनों को न भूलें। मैं ऐसा जानता हूं कि साक्षात् लक्ष्मी-सरस्वती के आशिष के समान मानता हुआ कयावन्ना किसी अन-अनुभूत आनंद को ही प्राप्त किया था, इसलिये ही प्रमोदित हुआ यह उस आनंद से कल्लोलित किया गया वहां से प्रयाण किया और जहाज प्रभात में चलेगा, इसलिये रात्रि के समय कहीं पर रूककर विश्रान्ति करनी चाहिये, इस प्रकार की बुद्धि से नगर से बाहर एक देवालय में प्रवेश किया और वहां उसने एक भग्न प्रायः मंच और अत्यंत जीर्ण बनी एक बिछौनी देखी थी,उससे उस बिछौनी को ही मंच के ऊपर रखकर सो गया था।

अब सुख से सोया हुआ यह कयवन्ना स्वप्न में गृह-लीला और व्यापार को देख रहा था तथा अर्धरात्रि के समय में चारों ओर अंधकार-समूह के फैल जाने पर और सकल मनुष्य के निद्रा-देवी की गोद में सो जाने पर, लोगों के शब्दों से रहित और अति-भयंकर ऐसे मध्य-रात्रि के समय में थोड़ी-ही दूरी में आती हुई पांच स्त्रियां दिख रही थी। वहां पर एक स्त्री हाथ में दीपक को धारण की हुई थी और इधर-उधर देखती हुई वे पांचों स्त्रियां उस मंदिर के समीप में आयी। उन स्त्रियों में एक वयो-वृद्ध थी और चार तारूण्य से परिपूर्ण थी। हाथ में दीपक धारण की हुई वृद्ध-स्त्री उस देवालय में आकर मंच के ऊपर सोये हुए एक पुरूष को देखा और आकृति से उस पुरूष को भव्य और कुलीन जाना। तत्पश्चात वृद्धा ने उन चारों ही तरूणीयों को बुलाकर आज्ञा दी कि- हे तरूणीयों! आज भगवान प्रसन्न हुए है और मेरा मनोरथ सिद्ध हुआ है। शीघ्र ही तुम खाट सहित सुख से सोये हुए पुरूष को उठाकर अपने घर ले जाओ और विलंब मत करो। इस प्रकार वृद्धा की उक्ति को सुनकर उन्होंने तत्काल ही वैसा किया। वह वृद्धा दीपक से मार्ग को दिखाती हुई आगे चलने लगी। वे उस खाट को लेश-मात्र भी नहीं कंपाती हुई और मौन को ही धारण करती उस वृद्धा के पीछे चलने लगी। वृद्धा के भय से शीघ्र से उन्होंने पुरूष सहित उस खाट को अपने घर प्राप्त कराया।

हे भव्यों! वे युवतियाँ कौन थी? इस प्रकार के निवेदन बिना तुमको कथा का आस्वाद प्राप्त नहीं होगा, यह मानकर उनका परिचय दिया जाता है कि- ये उस वृद्धा के पुत्र की पत्नियां थी। उसी रात्रि में दो-तीन घड़ी पूर्व ही उस वृद्धा का एक तरूण और निःसंतान पुत्र साँप ने डंसा हुआ मरण प्राप्त हुआ था और उसके गृह में बड़ी समृद्धि थी। उस समय के राज-नियम के भय से यदि संतान रहित पुत्र मर जाय तो सर्व धन को राजा ही आत्मसात करेगा, अथवा चोर ही इस सर्व धन का अपहरण करेगा, ऐसे भय से उस वृद्धा ने ऐसा प्रयास किया था। वह वृद्धा स्त्री-जातीय होकर भी अपने औजस् और मति से एक बार महान ओजस्वी पुरूष को जीतने में समर्थ थी। पुत्र-वधुओं पर भी अपने प्रताप को वैसे स्थापित किया था कि जैसे उसके आदेश बिना वें एक पद भी चलने के लिये समर्थ नहीं बनी और उसके आगे कुछ-भी कहने के लिए समर्थ नहीं हुई और उस वृद्धा के आदेश से ही उन्होंने यह भी आचरण किया था। इसकी बिल्ली नयन के समान नेत्र को और राक्षसी समान मुख को देखकर ही वे युवतियां अत्यंत डरती थी, इसलिये ही दासी के समान वे उस वृद्धा के आदेश से संपूर्ण कार्य को भी करती थी।

तत्पश्चात प्रभात हो जाने पर और सूर्य के अपने स्वर्ण तुल्य किरणों से संपूर्ण पृथ्वी को स्वर्ण-आभावाली करने पर कयवन्ना जाग उठा। तब दृष्टि को ऊँची कर चारों दिशाओं में फेंकता हुआ एक अति-देदीप्यमान, सुंदर और दिव्य गृह में सुख से आसीन अपने को देखा और उस पलंग के नीचे बैठी हुई तथा अनिमेष-दृष्टि से खुद को ही देखती हुई चार युवतियों को देखी। क्योंकि उस वृद्धा ने उस कयवन्ना के साथ आलाप आदि करने के लिये उन युवतियों को आदेश दिया था। एक अपूर्व देव-विमान की उपमावाले भवन को और दूसरा वहां पर आश्चर्य करनेवाले चित्र आदि शोभा को देख-देखकर यह आश्चर्य-चकित हुआ। तब उसने विचार किया कि- क्या यह स्वप्न सत्य है अथवा असत्य है? अर्थात् में जाग रहा हूं अथवा सो रहा हूं? पूर्व में कभी-भी जो नहीं देखी गयी है, ये तरूणियाँ कौन है? और यह किसका भवन है? इतनी संपत्ति, ये अत्यंत सुंदर स्त्रियाँ और यह विमान तुल्य भवन, यह सब मेरा नहीं था, इस प्रकार जब वह विचार कर रहा था, तब वहां वह वृद्धा आकर के कहने लगी कि- हे वत्स! आज तुझे जागने में इतना प्रमाद कैसे हुआ है? और प्रति-दिन सूर्योदय के पहले ही उठकर तुम प्रभातकार्य को करते थे तथा काम-विलास के आयास से शिथिल बनी इन तेरी स्त्रियों ने भी तुझे नहीं जगाया हैं? हे पुत्र! उठो और शीघ्र से दिन के कार्य को करो।

इस प्रकार कयवन्ना के मन में उत्पन्न आश्चर्य रूपी समुद्र को उस वृद्धा की प्रपंच कल्पना ने उच्छालित किया था, इसलिए वह कयवन्ना गंभीर विचार में पड़ा कि मैं इस गृह का स्वामी नहीं हूं और यह वृद्धा मुझे पुत्र कह रही है, परन्तु यह कदापि नहीं घटता है। मैं कैसे रंभा जैसी इन चारों स्त्रियों को अपनी मानूं? मेरी तो दो ही पत्नियां है और वे दोनों भी इनसे भिन्न ही है। ऐसी विपरीतता सहसा ही कैसे हुई है? अथवा क्या मैं ही वह कयवन्ना हूं? अथवा अन्य हूं? इस प्रकार संशय के उत्पन्न होने पर कितने ही अपने निर्णीत किये हुए लक्ष्यों को देखने से निश्चय किया कि वह कयवन्ना मैं ही हूं। परन्तु किसलिये अथवा किसने ऐसी अद्‌भूत माया रचना की है, यह नहीं जान पा रहा हूं और सुषप्त अवस्था में वैसा स्वप्न देखने से जो भविष्य की कल्पना करूं तो वह भी नहीं घटता है क्योंकि निद्रित को ही स्वप्न की संभावना है किन्तु मैं अब जाग चुका हूं अथवा अज्ञान में भ्रांति होती है किन्तु मैं अज्ञानी नहीं हूं। इस प्रकार की विविध कल्पना से कयवन्ना ने जो समाधान करने योग्य है उसे जाना।

इस ओर वे चारों युवतियाँ रहस्य में जाकर के परस्पर कुछ मंत्रणा करने लगी थी। उनमें से प्रथम युवती ने कहाकि- हे बहनों! हम समस्तों को भी यह रण्डा स्व-समान ही करने की इच्छा कर रही है? क्या लाये गये इस पुरूष को पति करने के लिये हम योग्य है? दूसरी युवती ने कहा कि- अरे! इस प्रकार कभी-भी नहीं होगा। क्या एक ही भव में दो भव बने? कुलीन स्त्रियों को कदापि ऐसा करना योग्य नहीं है और जो नीच-कुल में जन्म लेती है उनको ही ऐसा घटता है और हम तो सत्-कुल में उत्पन्न हुई है तो जिस किसी भी पुरूष के साथ कैसे पति-संबंध को करें? तीसरी ने कहा कि- हे सखियों! यह सर्व सत्य है किन्तु यह रंडा जो कहेगी वह ही सभी को करना पड़ेगा और उसके विरूद्ध तो एक पद भी हम चलने के लिये समर्थ नहीं है अथवा न ही उसके आगे थोड़-भी कहने की शक्ति धारण करती है। चौथी युवती ने कहा कि- हे सखियों! यदि यह नरपिशाची हमारे हृदय को भी काट ले, तब भी उसके आगे हम कुछ भी करने में समर्थ नहीं बनेंगी।

इस प्रकार उनके बातचीत करने पर वह वृद्धा वहां आई और उसे देखकर वे मौन हुई। परन्तु इसने उनकी मुख आदि चेष्टा से जाना कि यें कुछ परामर्श कर रही है, उससे प्रचण्डता करती हुई वह उनसे इस प्रकार कहने लगी कि यहां मिलकर तुम क्या पका रही हो? तुम सत्य जानो कि मेरे परोक्ष में तुम्हारे द्वारा किया गया विमर्श भी कदापि फलित नहीं होगा और जिसे करना चाहती हो उसे मेरे समक्ष ही विचार करो। मेरी आज्ञा के बिना तुम एक कदम भी नहीं चल सकती हो और आज पर्यंत मुझ समान तुम्हारे उतने वर्ष नहीं हुए है, इसलिये ही अब तुम्हें व्यावहारिक कौशल्य कैसे उत्पन्न हो? यदि आज मुझे यह मार्ग स्फुरित नहीं हुआ होता तो कल तुम्हें भोजन करने में भी कठिनता हो और सकल धन-भवन आदि राजसात ही हुआ होता इसलिए ही मेरे द्वारा जो किया गया है वह विचार कर ही किया गया है, वहां लेश-मात्र भी तुम संशय मत करो अथवा न ही मस्तकों को धूनाओं किन्तु भविष्य में श्रेयस्कर मेरी शिक्षा को सहर्ष स्वीकार कर तुम लाएं हुए अत्यन्त योग्य इस पुरूष पर भर्त्ता की बुद्धि करो और इसे बहुत और अति-गाढ़प्रीति दिखाओ। मैं भी पुत्र-स्नेह को ही दिखाऊंगी जिससे यह शीघ्र तुम्हारे चिर और बहुत परिचय से तथा गाढ़प्रेम से सर्व ही अपने अतीत को विस्मरित कर देगा और मैं दूसरों के भवन में रह रहा हूं अथवा विजातीय में निवास कर रहा हूं, इत्यादि मन में सकल कल्पना ही कदापि उत्पन्न नहीं होगी और मैं जिस गृह में पूर्व में था, वह गृह यह नहीं है तथा ये मेरे कुटुम्ब वर्ग से अन्य है, इत्यादि सर्व भावना ही जैसे स्वप्न के समान लगे, वैसे तुम करो। परिणाम में हितकर यह ही मेरा उपदेश है और इसे तुम सभी अवश्य ही ग्रहण करो नहीं तो भविष्य में बड़ी हानि होगी, इसे तुम सत्य जानो।

(आगे और भी है...!)

तारंगा तीर्थ

गतांक से आगे....

सभामंडप के एक आले (गोखले) में आचार्य की एक गुरूमूर्ति बिराजमान है। उसके नीचे नाम या लेख नहीं है परन्तु संभव है कि वह श्री हेमचंद्राचार्य की मूर्ति हो। फिलहाल उसे गौतमस्वामी के रूप में पूजा जाता है।

छः चोकियों के घूमट का दिखावा मनोहर है। उसकी छत में सामान्य किंतु सुरेख अंकित है। शृंगारचोकी की छत में भी महान नक्काशी की गई है। इन सभी शिल्पकलाओं को देखकर कुछ पल के लिये तो मुग्ध हो जाते है।

मंदिर के तीन स्तर है और मंजिलों की संरचना कुछ क्षण के लिये भ्रमित कर दे ऐसी है। मंदिर को सुरक्षित रखने के लिये इन स्तरों में 'केगर' नामक लकड़ी का उपयोग किया गया है। ऐसी लकड़ी का उपयोग अन्य मंदिरों में शायद ही देखने को मिलता है। यह लकड़ी आग में नहीं जलती, बल्कि आग लगने से उसमें से पानी निकलने लगता है।

शिखर तक पहुंचने के लिये दीवार का मार्ग है और बीच में स्थित विशाल गोलाकार मंडप में 11 प्रतिमाएं और एक ध्वजदंड पुरूष की आकृति दिखाई देती है। इस भव्य मंडप की कलाकृति अद्‌भूत है।

मंदिर की पूर्व दिशा के द्वार के पास दायें हाथ की और एक देहरी में श्री अजितनाथ भगवान की चरणपादुकाओं की बड़ी जोड़ी है साथ ही बीस विहरमान जिन की 20 जोड़ियां है। इनके पास ही एक देहरी में श्री विजयसिंहसूरि तथा श्री सत्य विजय पंन्यास आदि की चरणपादुकाओं की 9 जोड़ी है। अन्य एक देहरी में प्राचीन पाषाण से निर्मित चौमुखजी की प्रतिमा है।

उसके पास चौमुखजी का शिखर युक्त एक मंदिर है। उसमें पीले रंग की चार चौमुख मूर्तियां हैं। उनके पास सहस्त्रकूट का एक बड़ा जिनालय है। मंदिर के मध्य भाग में ही आरस पत्थर में सहस्त्रकूट की उत्कीर्णित संरचना है, जिसमें 1024 जिनों की मूर्तियां उत्कीर्णित हैं।

इस मंदिर के चारों कोनों में आरस पत्थर पर विभिन्न संरचनाएं की गई है। 1- समवसरण की रचना में चौमुखजी की चार मूर्तियां बिराजित है। 2- दूसरे कोने में चरणपादुकाओं की जोड़ी है उनके बीच में, चार छोटे आकार के खंभे खड़ेकर उन पर एक स्तूप जैसा आकार बनाया गया है उस स्तूप में एक और बीस स्थानाक यंत्र का पट्टा उत्कीर्ण किया गया है। उसके एक और मधुबिंदु का भाग आलेखित है। दूसरी ओर सिद्धचक्र भगवान का यंत्र उत्कीर्णित है। इसी प्रकार चौदह राजलोक का भाव अंकित किया गया है। 3- तीसरे कोने में अष्टापद की संरचना है और 4- चौथे कोने में सम्मेतशिखर का भाव उत्कीर्णित है। सहस्त्रकूट मंदिर के पास ही नंदीश्वरद्वीप की संरचना का एक शिखरबंद बड़ा मंदिर है। मंदिर के मध्य भाग के आरंभ में जंबुद्वीप आदि सात समुद्र की संरचना की गई है। नंदीश्वर द्वीप के बावन जिनालयों के बावन पर्वतों का प्रदर्शन कर उन पर चौमुखजी बिराजमान किये गये हैं।

सहस्त्रकूट का मंदिर वि.सं.1873 में और नंदीश्वर द्वीप का मंदिर वि.सं. 1880 में श्री संघ ने बनवाया है। इससे संबंधित शिलालेख विद्यमान है। मुख्य मंदिर के पीछे श्री कुंथुनाथ भगवान का शिखर युक्त मंदिर है। पास के कोने में एक विशाल चबूतरे पर छोटी-छोटी देहरियां में भिन्न-भिन्न साधुओं की चरण पादुकाएं स्थापित की गई हैं।

बरसों के प्रवाह के साथ काल के थपेड़ों और समय के बहाव ने मंदिर को जीर्ण-शीर्ण बनाकर रख दिया.... कहीं मुस्लिम आक्रमणकारी शासकों के जुल्मों ने भी इसे नुकसान पहुंचाया। कला के उत्कृष्ट नमने रूप बाहरी विस्तार के शिल्प के रूपकाम क्षतिग्रस्त हो गये। घिस गयें.... और मिट्टी-बरसात की वजह से पर्तें जमती गयी.... मिट्टी के ढेर चिपक गये.... शिल्प के अंग क्षतिग्रस्त होकर बदसूरत होने लगे। कहीं आधे हाथ खंडित हो गये.... कहीं शिल्प की उंगलियां टूट गयी। कहीं कंधों में दरारें पड़ गयी.... और खूबसूरती का यह नजारा बदसूरती का लिबास ले बैठा। इसी दौरान स्थानिक लोगों ने इसकी सुरक्षा के उद्‌देश्य से या कहीं ये और ज्यादा काले न हो उठे.... इसलिये इस पर चूने की परतें चढ़ा दी। पर्त दर पर्त के चढ़ते चूने ने समूचे शिल्प को ढंक दिया.... आवृत्त बना दिया। व्यवस्था की समस्या और स्थानीय छोटे-छोटे शासकों ने इसे जागीर समझ कर उपेक्षित बना डाला। समीप के गाँवों के जैन संघ ने इस तीर्थ की व्यवस्था को बनाये रखने की भरसक कोशिश की.... टींबा.... सतलासणा.... वाव गाँव के लोगों ने काफी समय इसे संभाला। आखिर वि.सं. 1977 (इस्वीसन 1921) में टींबा जैन संघ और तारंगाजी जैन श्वेतांबर तीर्थ कमेटी ने इस तीर्थ का पूरा व्यवस्था भार आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी ने सुपर्द कर दिया। पेढ़ी ने धीरे-धीरे इस तीर्थ की व्यवस्था का पुनर्गठन किया। महत्वपूर्ण कार्य था मंदिर के जीर्णोद्धार का।

इस्वीसन् 1963 में इस तीर्थ के गौरवरूप श्री अजितनाथ स्वामी जिनालय के जीर्णोद्धार के बारे में पेढ़ी के तत्कालीन प्रमुख सेठ श्री कस्तुरभाई लालभाई ने अन्य ट्रस्टीयों के साथ लंबा विचार विमर्श किया। शिल्प और स्थापत्य के निष्णात स्थपतियों से, सोमपुरा से चर्चा की और जीर्णोद्धार की समूची कार्यवाही का भार पेढ़ी के साथ जुड़े हुए प्रख्यात सोमपुरा मनसुखभाई को सौंपा गया। मनसुखभाई और उनकी पूरी टीम ने इस कार्यवाही का मंगल प्रारंभ करते हुए तारंगा की पहाड़ियों के बीच अपने डेरे डालें।

वैसे देखा जाये तो यह पूरी कार्यवाही अत्यंत मेहनत, धैर्य, परिश्रम और सतर्कता से भरीपूरी थी। पहले पहल तो शिल्पकाम की पुतलियों के अंगोपांग, खंडित.... क्षतविक्षित अंगोपाग को और उनके हिस्सों को प्लास्टर ऑफ पेरिस से निर्मित करवा कर उन्हें लगाकर जमा कर देखा.... एकदम उपयुक्त एवं बराबर लगने पर वैसा ही मूलरूप का संगमरमर.... पाषाण और पत्थर मंगवा कर उन्हें नक्काशा गया.... तराशा गया और बाद में उन्हें इस तरह से जोड़ा गया कि कहीं किसी तरह का संधान या जुड़ाव दिखायी न दे। संधियां जोड़ खोजने पर भी न मिले। यह सारा कार्य उतना सरल या आसान था नहीं.... पर इधर सेठ कस्तुरभाई कलापारखी बुद्धि.... दीर्घदर्शिता, स्थापत्य से संबंधित विशद जानकारी और उन्हें जो निष्णात शिल्पी सोमपुरा कारीगर मिले.... इन सब की बदौलत असंभव लगनेवाली बात संभव हो उठी। कारीगरों ने वास्तव में शिल्प की पुनर्स्थापना में जान डाल दी। चतुर्विध संघ के परम पूज्योदय से पूज्य आचार्य भगवंत, मुनि भगवंतों के आशीर्वाद के साथ साथ तीर्थ के प्रति असीम श्रद्धा-भक्ति व अहोभाव रखनेवाले आराधकों, साधकों एवं भक्तों की सूक्ष्म ऊर्जा ने काम किया। कला के पार्खी मेहनती कारगरों की दिन-रात की मेहनत रंग लायी.... और शिल्प स्थापत्य का विलुप्त हो रहा खजाना पुनर्जीवित हो उठा। हालांकि इसमें 15 बरस जितना लम्बा समय लगा। इस जमाने में 15 लाख रूपयों का व्यय भी हुआ पर सब सार्थक हो उठा। आज भी दक्षिण की और के स्थापत्य में शिल्पी ने 3-4 मूर्तियां खंडित.... व नुकसान हुई ज्योंकि त्यों रखी है ताकि दर्शक व कला पारखी लोगों को अंदाजा लग जाए कि जीर्णोद्धार कितनी मेहनत व परिश्रम का परिणाम है।

मंदिरजी के ऊपर शिखर के हिस्से में करीबन तीन मंजिलों से भी ज्यादा हिस्सा आज भी सुरक्षित है। वहां पर भी स्थापत्य व कला के कुछ बेनमून शिल्प है। वह नजारा भी बड़ा ही भव्य एवं विशालरूप लिये है। सुरक्षा, रख रखाव वगैरह को मद्दे नजर रखते हुए फिलहाल वह पूरा विभाग बंद रखा जाता है।

शिखर तक बीच बीच में सहारे के रूप में केगर नाम की लकड़ी के खंभे टेढ़े-मेढ़े-तिरछे व सप्रमाण रूप में रखे गये है। इस लकड़ी की विशेषता है कि इसे जलाने पर धुंए की बजाय इसमें से पानी टपकता है। वर्तमान में इसे तीर्थ का काफी विकास हुआ है।

आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी के द्वारा तीर्थ की समग्र व्यवस्था सुचारू ढंग से चल रही है। आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न स्वच्छ व साफ-सुथरी नई धर्मशालाओं की वजह से यात्रियों को जरा भी परेशानी नहीं होती। जैन यात्रिक भाई बहनों के उपरांत भी बड़ी तादाद में अन्य लोग भी इस तीर्थ की यात्रा करने, जिनालय के शिल्प स्थापत्य को देखने व प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेने आते रहते है। तारंगा के पर्वतीय शैक्षणिक या वन्य युक्त अभयारण्य को देखने आनेवाले गुजरात की स्कूलों के सैकड़ें बच्चे यात्रा के दौरान जिनमंदिर के दर्शनार्थ आते हैं।

यहां पर सुविधा संपन्न भोजनशाला की व्यवस्था एक स्वतंत्र ट्रस्ट संभालता है। भोजनशाला में केन्टीन व भाताखाता की व्यवस्था भी बहुत ही अच्छी तरह से होती है।

तलहटी की उत्तरी दिशा में दो ढाई कि.मी. पर तारणमाता का प्राचीन मंदिर भी है। श्वेत पाषाण में से निर्मित तारण देवी की प्रतिमा प्राचीन है। इसके समीप एक गुफा में धारण माता का मंदिर भी निर्मित है। इसमें कुछ बौद्ध मूर्तियां बिराजमान है। वायव्य कोण में स्थित गुफा 'जोगीड़ा की गुफा' के नाम से प्रसिद्ध है। इस गुफा में बोधिवृक्ष के तले लाल पत्थर से निर्मित चार बुद्ध प्रतिमाएं निर्मित है। प्रतिवर्ष कार्तिका एवं चैत्री पूर्णिमा के दिन यहां पर मेला लगता है।

आश्विन शुक्ला 10 यहां के तीर्थ के मूलनायक भगवान अजितनाथ की प्रतिष्ठा का दिन है। यह दिन काफी धूम धाम से मनाया जाता है.... इसी दिन मंदिर पर नई ध्वजा चढ़ाई जाती है। बारिश के दिनों में मेघराजा पूरे मंदिर के बाहरी हिस्से को धो धो कर खिला खिला सा बना डालते हैं। तब इसे देखने का आनंद ही और होता है। इसी तरह चांदनी रात में सुहानी चांदनी की रोशनी में नहाये हुए इस शिखरयुक्त मंदिर को देखना भी एक अद्भूत अनुभव है।

यहां पर कोटिशिला, सिद्धशिला एवं मोक्ष बारी नामक 3 टूंके भी है। **साभार : श्री आनंद कल्याण**

श्री भोपावर महातीर्थ : नवरत्न का है....

-डॉ.सुभाष जैन

चार्तुमास, 100 वीं ओली पारणा-अग्नि संस्कार

चरम तीर्थ का परमात्मा श्री भगवान महावीर स्वामीजी की श्रमण परमात्मा के पथगामी परम कृपालु पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा एक ऐसे आत्मकेता संत थे आत्मस्थ जीवन को पूर्ण कर गुरूदेव ने संसार से मुक्ति पर अपने को तो स्वतंत्र कर लिया लेकिन निर्मोही बनकर हम सबको मोहित कर गये। जिनके प्रातःकरण से सदैव ममताभरी करूणा का आहत झरता था ऐसे गुरूदेव का चले जाना आज भी मन को स्थिर बनाये हुए है। पूज्यपादश्री की याद आज भी आँखों से झलक जाती है।

शैले-शैले न माणिक्यं मौक्तिम न गजे गजे।
साधवः न हि लोकेषु, चन्दने ने बने बने।।

प्रत्येक पहाड़ पर माणिक्य रत्न नहीं पाये जाते है और न ही हर हाथी के गंडस्थल में मोती पाये जाते है, चन्दन भी सभी जंगलों में पैदा होता है, इसी तरह इस दुनिया में गुरूदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा जैसा सच्चा संत दुर्लभ है, ऐसे विरले आत्मरूपी, कर्मयोगी तपस्वी संत संसार में बहुत कम ही जन्म लेते है, ऐसे संत तो हम जैसे भड़के लोगों को धर्म मार्ग बताने के लिये परमात्मा के प्रतिनिधि के रूप में ही संसार के आत्मकल्याण के लिये आते है और अपना काम कर चले जाते है। पूज्यपाद गुरूदेवश्री ने दृढ़ निश्चय से संयम एवं साधना के कठोर अग्निपथ का वरण अपने लिये किया था और संपूर्ण जीवनभर आपश्री इस पथ पर अंतिम श्वास तक चलते रहे। आपश्री ने सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र के अलाव में स्वयं को पकाकर अपने जीवन पात्र को कीर्तियुक्त कुन्दन की तरह द्युतिमान बनाया था ताकि उसमें तप, त्याग, शील, संयम, ज्ञान, ध्यान का क्षीर स्थिर रह सके। आपश्री इस लक्ष्य सिद्धि में सफल रहे। आपश्री ने साध्य को अपनी साधना से प्राप्त कर लिया था पर संसार की विडंबना ने आपश्री को हम से छीन लिया था। साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका को जब आपश्री के संसार छोड़ने के समाचार मिले तो किसी को भी इस बात का विश्वास नहीं हुआ था परन्तु होनी को स्वीकार करना पड़ता है।

हमारे देश की यह गौरवपूर्ण परम्परा रही है कि जब भी धार्मिकता का ह्रास होने की स्थिति बनती है तब ऐसे महाऋषियों का जन्म हुआ है जिन्होंने भावी पीढ़ि को ज्ञान सद्मार्ग एवं अध्यात्म की राह दिखाई है। इस गौरवशाली श्रृंखला जैन जगत के अध्यात्म रूपी प्रकाशपूंज मेरे परम पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा का नाम हमेशा आगे था और आगे रहेगा। पूज्य गुरूदेवश्री ने भविष्य की बुलंद धरातल पर ज्ञान, अध्यात्म और तपरूपी नींव का पत्थर इतना मजबूती के साथ रखा कि उस पर भक्तों को अपने योगदान का सदाचार और सद्मार्ग का भवन खड़ा करना आसान है, इसीलिये पूज्यपाद गुरूदेव हमेशा ही हमारी यादों में रहेगा।

सम्पूर्ण जैन जगत को प्रभावित करनेवाले गुरूदेव मालवा के होने से मालवा की पुण्यभूमि और धर्मिष्ठों से विशेष वात्सल्य रखते थे, व्यक्तिगत रूप से 500-600 गांव-नगर के लोगों के नामों से गुरूदेव परिचित थे जब भी कोई दर्शन लाभ प्राप्त करने आता तो आपश्री उसे देखते ही नाम से पुकार लेते थे, वह व्यक्ति आश्चर्यचकित हो जाते। म.सा. मेरा नाम भूले नहीं है और अच्छे से जानते है, पूज्यश्री किसी से अच्छी तरह बात करते थे तो उसे लगता कि म.सा. मुझे कितना प्यार करते है, मुझे कितना अच्छी तरह से जानते है परन्तु ऐसा नहीं था गुरूदेव तो सभी से इसी तरह अच्छा व्यवहार करते थे, सभी को अच्छी तरह से जानते थे इसका मुख्य कारण यह था कि गुरूदेव कभी भी बंद कमरे में नहीं रहे वे सम्पूर्ण जीवनकाल में उपाश्रय में पाट पर ही बैठते-बैठते बात करते और आने-जानेवाले से मिलते थे इसलिये भक्त गुरूदेव और गुरूदेव भक्तों से अच्छी तरह परिचित रहते थे। ऐसे महान संत के व्यक्तित्व, कार्यों की समीक्षा होना अभी बाकी है, कुछ चीजें जब हम से खो जाती है या दूर हो जाती है तभी हमें उनकी कीमत पता चलती है तभी हम उनका मूल्य समझ पाते है।

पूज्य गुरूदेव ने मालवा के क्षेत्रों में जो धर्म प्रभावना की है वह अद्भूत है, विहार के मार्ग में न आने वाले गांव, शहरों में वे भक्तों के कहने पर 15-20 किलोमीटर तक जाने के लिये इंकार नहीं करते थे, युवा शिष्यरत्न जरूर कभी-कभी म.सा. से कहते थे कि साहेबजी! 15-20 किलोमीटर का चक्कर लगेगा

आप तो रहने दो। पर साहेबजी! शिष्यों से कहते-इधर फिर हम कब आयेंगे। आये है तो चलो हमारा काम ही शासन प्रभावना का है फिर वहां के मंदिर, श्रावकों के बारे में बताते तो सहज ही सब तैयार हो जाते थे।

विश्व विख्यात श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ के लिये मालवा से जितने भी छःरिपालित संघ का आयोजन अभी तक हुआ है उसमें सर्वाधिक पैदल यात्री संघ पूज्यपाद आचार्य भगवंत मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में आयोजित हुए है, यह अपने आप में गौरव और अभिमान करनेवाली बात है। श्री नागेश्वर महातीर्थ के श्री दीपचंदजी साहब भी गुरूदेव को बहुत मानते थे और निमंत्रण पर गुरूदेव के कार्यक्रमों में सम्मिलित होते थे, गुरूदेव की कहीं सब बातों को भी श्री दीपचंदजी साहब स्वीकार कर रहे है।

इसी तरह श्री भोपावर महातीर्थ के प्रति गुरूदेवश्री का विशेष आर्कषण था जबभी गुजरात से मालवा और मालवा से गुजरात की ओर विहार होता था तो गुरूदेव भोपावर महातीर्थ में परम तारक 16 वें तीर्थंकर परमात्मा श्री शांतिनाथ प्रभु को झुंहारने, वंदन करने और अपने जीवन के क्षण परमात्मा की भक्ति में बिताते थे। पूज्य गुरूदेव के श्री भोपावर महातीर्थ से जुड़े तीन प्रसंगों से आपको अवगत कराना चाहूंगा इससे भोपावर महातीर्थ के प्रति गुरूदेव की असिम श्रद्धा-भक्ति प्रकट होती है। पूज्यपाद गुरूदेव श्री गुजरात से विहार कर मालवा पधारे थे, राजगढ़पधारे यहां तो पूरा नगर ही गुरूदेव का दीवाना है और रहेगा। गुरूदेव के प्रति अट्टू श्रद्धा, विश्वास, अपनत्य भक्ति क्या नहीं है, राजगढ़वालों की गुरूदेव के प्रति समर्पण भाव। सब कुछ गुरू आज्ञा में न्यौंछावर करने को भक्त तैयार रहते थे तो गुरूदेव राजगढ़ से श्री भोपावर महातीर्थ पधारे यहां पर भी महोत्सव का आयोजन था, संयोग से मैं भी गुरूभक्ति का मजा लेने भोपावर ही था, चार्तुमास निकट आ रहा था परन्तु अभी तक गुरूदेव ने चार्तुमास की घोषणा नहीं की थी अनेक श्रीसंघों के साथ राजगढ़ संघ भी चार्तुमास कराने का प्रबल इच्छुक था पर गुरूदेव ने किसी को भी कुछ नहीं बतलाया था यहां तक कि पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. को भी कोई खबर पर चर्चा नहीं थी कि चार्तुमास कहां होगा, सभी बेचैन थे। पूज्य आचार्य श्री प्रातःकाल दादा के दरबार में गये वहां भक्ति भावना कर मंदिरजी से बाहर आये ढोलवाला ढोल बजा रहा था, गुरूदेव ने सबको आमंत्रित किया और घोषणा कर दी कि आगामी चार्तुमास भोपावर महातीर्थ में होगा। राजगढ़वाले तो प्रसन्न हो गये, राजगढ़ नहीं तो क्या हुआ भोपावर ही सही। सभी गुरूदेव की घोषणा से आश्चर्यचकित रह गये थे। सबने तहत्ति कर स्वीकार किया।

दूसरा प्रसंग गुरूदेव की 100 वीं ओलीजी के पारणा का है, भोपावर महातीर्थ में ही भव्य महोत्सव के साथ पारणा महोत्सव मनाया जा रहा था उस समय मैं भी भोपावर ही था, गुरूदेव की 100 वीं ओलीजी पर आगमोद्धारक विशेषांक का प्रकाशन किया था, भोपावर में ही विमोचन का आयोजन रखा गया था, प्रतिदिन विविध आयोजन, पूजन-महापूजन के आयोजन हो रहे थे अगले दिन प्रातः गुरूदेव को 100 ओली का पारणा होना था इसके साथ ही साध्वी श्री नवरत्नाश्रीजी को भी 100 ओली का पारणा था सभी प्रातःकाल के इंतजार में थे, अत्यन्त उत्साह, उमंग के साथ साध्वीजी का पारणा तो हो गया, पूज्य गुरूदेवश्री भी पारणा पर उपस्थित रहे परन्तु गुरूदेव का पारणा नहीं हुआ सभी आश्चर्य चकित थे। मैं शंखेश्वर महातीर्थ में पर्युषण महापर्व की आराधना के लिये गया था तब नियमित चर्चा के दौरान पूज्य साध्वीवर्या शशिप्रभा श्रीजी 100 ओली के पारणा के बारे में जो बतलाया वह यह है कि-

भोपावर तीर्थ प.पू.आ.देवेश नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. का वर्धमान तप की 100 वीं ओली का पारणा महोत्सव चारों और आनन्द सागर लहरा रहा था। सैकड़ें साधु-साध्वी के साथ हजारों भक्तगण का सैलाब भी उमड़ा था साथ में सागर समुदाय के साध्वीजी तपस्वी नवरत्नाश्रीजी म.सा. को भी 100 वीं वर्धमान तप की ओली का पारणा था। उत्सव पूर्णता की ओर आया व पारणा का दिन नजदीक आया। पारणे के दिन उत्साह पूर्वक साध्वीजी म.सा. नवरत्ना श्रीजी का पारणा हुआ परन्तु पोरसी पोरसी साठपोरसी व पुरीमठ्ठ तक प.पू. आचार्यदेव श्री का अभिगृह पूर्ण न हुआ व पारणा नहीं हुआ। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने दिल दिमाग को लगा रहा था व हर प्रकार की अजमाइश कर रहा था। इधर साहेबजी तो स्वाध्याय, नवकारवाली में आनन्द मना रहे थे। अचानक किसी को याद आया कि सभी नुस्खे अजमालिये लेकिन सभी निष्फल, तो ऐसा करो कि 100 ओली जिन्हें हो गई है वे लोग जाओ, कहीं तपस्वी को तपस्वी का अभिग्रह हो और सभी साथ में जाओ, हो सके नरावह किमीया बैठ जाय और हुआ यही प.पू. नित्यवर्धनसागरजी म.सा., पूज्य चन्द्रयशा श्रीजी म., पूज्य मार्दवताश्रीजी म. व पू.पुण्योदया श्रीजी

म.सा. चारो एक साथ गये व पारणे के लिये विनंती की। पूज्यश्री ने चिट्ठी बताई कि 100 ओलीवाले 4 व्यक्ति आकर कहेंगे तब पारणा करूंगा। लगभग तीन-साढ़े तीन बजे पूज्यश्री ने एकाशना किया-

ऐसे थे गुरूदेव नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा।

अंतिम प्रसंग आप सबको ज्ञात ही है कि गुरूदेव ने अपनी देह का आत्मा से त्याग दक्षिण भारत में चार्तुमास (चैन्नई) में पूर्ण करने के बाद मैसूर की ओर विहार के समय किया था, गहन चर्चा और विचार विमर्श के बाद देह का विर्सजन अग्नि संस्कार मालवा में और मेरा ऐसा मानना है कि गुरूदेव की इच्छानुसार भोपावर महातीर्थ में करने का निश्चय किया गया। देर रात विमान से देह को इन्दौर लाया गया, प्रातःकाल विशेष वाहन से देह को सीधे राजगढ़ ले जाया गया जहां अपार जनसमूह ने अश्रु भरे नेत्रों से अंतिम बिदाई दी फिर भोपावर तीर्थ आकर यात्रा पूर्ण हुई जहां अग्नि संस्कार की अंतिम बोलियां हुई और संध्या को अग्नि संस्कार की क्रिया पूर्ण हुई। आचार्य परमेष्ठी पद पर विराजमान 36 गुण भण्डारी आचार्य देवेश की यहां भोपावर में आकर मालवा के अंचल में अपने को समाहित कर लिया। वात्सल्यमूर्ति करूणासागर उदार विचारों के धनी गुरूवर संसार से विदा हो गये लेकिन लोगों दिलों में आया सदैव विराजमान रहेंगे। आपश्री का मंगल आर्शीवाद सब पर बना रहेगा और हमारे दिलों में हमेशा जीवित रहेंगे। इसी शुभभाव के साथ आपश्री की प्रथम पुण्यतिथि माघ-5 (17-1-2017) पर सादर भावांजलि।

बाल जीवन

✻ मंत्रजाप दृढ़विश्वास।
पंचम भजन जो वेद प्रकाश।।
उनके चेहरों की मुस्कान से जाना,
बाल जीवन को महकाना है,
इनको शिक्षित बनाना है।
देश का भविष्य है बच्चे, इनको हम संवारेंगे।
देंगे इनको हर मौका, कभी नहीं हारेंगे हम।।
बुद्धिहीन को बुद्धि देती, अज्ञानी को ज्ञान।
शिक्षा से ही बन सकता है, भारत देश महान।।

✻ राजा अग्निमित्र और श्रेष्ठि सोमपाल मित्र थे। उनमें बहस हो गई। सोमपाल ने कहा- राज्य का संरक्षण उपयोगी तो है, पर अनिवार्य नहीं। ईश्वरप्रदत्त विभूतियों और साधनों से मनुष्य बहुत मजे में रह सकता है। राजा ने उग्र होकर चुनौती दी, अच्छा एक वर्ष नगर में मत घुसना, जंगल की सीमा में रहना। अंदर आए तो जेल में डाल दूंगा। हार मान लो तो प्रतिबंध हटा दूंगा और यदि एक वर्ष में कुछ उल्लेखनीय करके दिखा दोगे, तो मैं हार मान लूंगा।

सोमपाल सीमित साधन लेकर जंगल में प्रवेश कर गए। वहां एक निराश लकड़्हारा मिला। श्रम बहुत करने पर भी परिवार का पोषण ठीक से नहीं कर पाने से दुःखी था। सोमपाल ने उसे उत्साहित किया, कहा, मित्र तुम मुझे श्रम से सहायता देना, मैं तुम्हें विचार से सहायता दूंगा। दोनों मिलकर बड़ा काम कर लेंगे। लकड़्हारा राजी हो गया।

सोमपाल ने उससे कुल्हाड़ी ले ली। स्वयं लकड़ी काटने लगे और उसे नगर के समाचार लेने भेज दिया। प्राप्त सूचनाओं के आधार पर वे उसे जलाऊ और इमारती लकड़ी बेचने भेजने लगे। धीरे-धीरे काम बढ़ निकला, अधिक मजदूर बुलाकर अधिक काम होने लगा। नगरवासी उस व्यवस्था का लाभ उठाने लगे। तभी पता लगा कि विशाल यज्ञ होनेवाला है। सोमपाल ने यज्ञीय समिधाओं तथा सुगंधित वनौषधियों का संग्रह कर लिया। यज्ञ संयोजकों को सूचना मिली, तो अच्छे मूल्य पर तैयार वस्तुएं खरीद ली गईं। इसी प्रकार नगर की ढेरों आवश्यकताएं सोमपाल के तंत्र से पूरी होने लगीं।

राजा को सूचना मिली तो उस तंत्र के पीछे कौनहै, यह खोजा गया। राजा अपने मित्र से मिलने स्वयं गये। प्रेम से मिले, पूछा- तुम तो शहर में घुसे नहीं, यह सब कैसे विकसित किया? सोमपाल बोले- मित्र यह मेरी विचारशक्ति और लकड़्हारे की शरीर शक्ति का संयोग है। इसी के संयोग से वन-संपदा नगरवासियों के काम में आई और एक वर्ष का समय हम सबके लिये बहुमूल्य बन गया।

एग्री हं नत्थि मे कोई

मैं अकेला हूं। मेरा कोई नहीं।

✽ आ.श्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

बारह धर्म भावनाओं में चौथी एकत्व भावना है। उस संबंध में कवि कहता है-

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यों कबहू या जीव को साथी सगा न कोय।।

जन्म-जन्मान्तर की यात्रा करता हुआ जीव अकेला ही माता के गर्भ में आता है। गर्भकाल के सवा नौ मास पूरा होने पर वह अकेला ही जन्म लेता है। हां, पूर्व जन्म में किये हुए पुण्य-पाप अवश्य ही उसके साथ आते है। बाकी परलोक से कुछ भी नहीं लाता। माता-पिता के रक्त-मांस आदि अवयवों से उसका शरीर बनता है। जन्म लेते समय शरीर पर एक धागा भी नहीं रहता। जन्म के पश्चात सचमुच एक नये संसार की रचना होती है। वस्त्र पहनाये जाते है। माता दूध पिलाती है। डॉक्टर, नर्स तथा माता आदि परिजन उसकी देखभाल कर पालन-पोषण कर बड़ा करते हैं।

बालक किशोर बनता है। पढ़ाई-लिखाई करता है। युवा होने पर विवाह होता है। पत्नी आदि परिवार बढ़ता है। एक से दो, दो से चार। इस प्रकार संसार का विस्तार करता जाता है। नौकरी, व्यापार आदि करके धन कमाता है। रहने के लिये सुन्दर आलीशान बंगला बनाता है। अच्छी से अच्छी गाड़ियाँ खरीदता है। भौतिक सुख-सुविधाओं के अपार साधन जुटाता है। दिन-रात कमाना, मौज-मस्ती और सोना इस प्रकार उसकी जिन्दगी की गाड़ी चलती रहती है।

सद्‌गुरूदेव, ज्ञानी पुरूष उसे शिक्षा देते है-''भाई! दिन-रात कमाने-खाने के चक्कर में पड़कर तेली के बैल की तरह जिन्दगी की धुरी पर घूमता रहेगा या कुछ धर्म करनी करने का समय भी निकालेगा? शरीर की, परिवार की, समाज की चिंता और देखभाल में ही जीवन मत गुजार। कुछ क्षण शांत-एकांत में बैठकर प्रभु भजन भी कर। परमात्मा का स्मरण कर। सामायिक, देववन्दन, जिन-पूजन, गुरू दर्शन, दान, सेवा आदि सत्कर्म भी कर। शरीर, धन, परिवार आदि मरते समय यही रह जायेंगे। प्राण निकलते ही शरीर को छोड़कर आत्मा परलोक में अकेला ही जायेगा। शरीर रूपी माटी यहीं पड़ी रहेगी। धन भी यहीं पड़ा रह जायेगा। माता, पत्नी घर के दरवाजे पर तुझे छोड़ देंगे। परिवारजन श्मशान तक तुझे कंधों पर ढोकर ले जायेंगे और जलाकर राख कर देंगे। सब कुछ यहीं पर धरा रह जायेगा।

धरा रहेगा धन वैभव सब, खड़ा रहेगा सब परिवार।
चिता जलेगी मरघट पर जब, हो जायेगा तन यह छार।।

कहते हैं, महमूद गजनवी ने 17 बार भारत पर आक्रमण किया। भारत के मंदिरों की अपार धन-संपत्ति लूटी, मंदिरों को तोड़ा। हजारों-लाखों मासूम लोगों का खून बहाया। भारत से अपार स्वर्ण और हीरे-जवाहरात आदि लूटकर ऊंटों पर लादकर अपने देश को ले जा रहा था। रास्ते में ही बीमार पड़गया। असाध्य रोग जब मौत बनकर सामने आया तो सुल्तान भयाक्रांत हो उठा। सेना, धन, हकीम कोई भी उसकी जान नहीं बचा सके तो पागल सा हो उठा। अपने दोनों तरफ सोने-चांदी, जवाहरात के ढेर लगवाये। एक तरफ सेना को खड़ा किया। एक तरफ नौकर-चाकर को खड़ा कर एक-एक चीज को देखता और रोता, आँसू बहाता बोला- मैंने दुनिया को लूटा, इतनी दौलत जमा की। क्या इसमें से कुछ भी मेरे साथ नहीं जायेगी?

वजीर ने कहा- 'हजूर! एक फूटी कौड़ी भी आपके साथ नहीं जायेगी। सब कुछ यहीं धरा रह जायेगा।'

सुल्तान फूट-फूटकर रो पड़ा- हाय! यह सारी धन-दौलत छोड़कर मुझे अकेला खाली हाथ इस दुनिया से जाना पड़ रहा है।

ज्ञानियों ने ठीक कहा है-

एक उत्पद्यते तनुमा-नेक एक विपद्यते।
एक एव हि कर्मचिनुते सैककः फलमुश्नुते।

- शांत सुधारस, 4/2

यह जीव परभव से अकेला आता है, अकेला ही मरता है। जैसा कर्म संचित करता है, बस, वही परभव में उसके साथ जाता है।

भगवान फरमाते है-

एगो अहमंसि, नत्थि मे कोई।

- आचरांग सूत्र, 1/81

मैं इस संसार में अकेला हूं। कुछ भी मेरा नहीं है। सब कुछ यहीं रह जायेगा।

✽ अरिहंत का शासन अर्थात् अभयदान की सरिता। जैसे जल-जीव को जीवनशक्ति देता है वैसे जिनशासन जीवात्मा को अभयदान देता है। एक अपेक्षा से जल से भी अभयदान का विशेष महत्व है।

पाप की सजा भारी...!

गतांक से आगे...!

✻ प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

श्रुत (ज्ञान) का अभिमान-

संसार में सभी जीवों को स्व स्व कर्मानुसार कम ज्यादा बुद्धि मिलती है। सभी की बुद्धि, सभी का ज्ञान समान नहीं है। अपने-अपने ज्ञानावरणीय कर्म के कम-ज्यादा क्षयोपशम से सभी जीवों को कम-ज्यादा बुद्धि मिलती है। बुद्धि का आधार भोजन पर नहीं ज्ञानवरणीय कर्म पर है। अतः बुद्धिशाली को अपने ज्ञान का अभिमान कभी भी नहीं करना चाहिये। ज्ञानी भी अभिमान करके बाजी हार जाता है। नए ज्ञान की प्राप्ति से वंचित रहता है। शास्त्रों में बात आती है कि.... स्थूलिभद्र जैसे ज्ञानी महात्मा को जब उनकी बहन साध्वीजीयां सेणा, वेणा, रेणा आदि वन्दना करने गई तब स्थूलिभद्रजी को ऐसा अभिमान चढ़ा कि मैं मेरी बहनों को दिखाऊं तो सही कि मैं भी कुछ हूं? इस अहं भाव से उन्होंने गुफा में सिंह का रूप लिया और बहनें तो देखकर डर कर भाग गई। गुरू महाराज ने इसका रहस्य समझ लिया। साध्वीयों को फिर वंदनार्थ भेजी। लेकिन स्थुलिभद्र जैसे को भी ज्ञान न पचा। अरे यह कलियुग का असर देखकर गीतार्थ ज्ञानी गुरू ने स्थुलिभद्र को आगे के चार पूर्वों का अर्थ से पाठ (ज्ञान) नहीं दिया। किसका नुकसान हुआ? केवल थोड़े से अभिमान के कारण कितना बड़ा नुकसान? कैसे ज्ञानी महात्मा को भी मद कितना सताता है।

आचार्यश्री को काफी ज्ञान था अतः कई शिष्य बार-बार उनसे प्रश्न पूछकर संतोष पाते थे, ऐसे में आचार्यश्री को अभिमान हो गया। अहं भाव के कषाय में ऐसे कर्म बांधे कि आगामी जन्म में 'मारूष-मातुष' के दो शब्द भी पाठ करना मुश्किल हो गया। वर्षों तक पाठ करते रहने पर भी दो शब्द याद नहीं हुआ। अन्त में साढ़े बारह वर्ष आयंबिल की तपश्चर्या करनी पड़ी तब जाकर केवलज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञानी को अभिमान गिरा देता है। अभिमान का काम ही है पतन करना-गिराना। फिर उसे आश्रय देने वाला चाहे ज्ञानी हो या रूपवान हो या धनवान हो या तपस्वी हो या चाहे जो भी कोई हो। अभिमान सभी का पतन करता है। ज्ञानी की शोभा इसी में है कि वह ज्यादा-नम्र-विनम्र-विनयी बने। श्रेणिक जैसे सम्राट ने भी चोर को सिंहासन पर उच्चासन पर बैठाकर विद्या ग्रहण की तब आई। आज तो उल्टी विपरित स्थिति है। अभिमान वृत्ति से विद्या नहीं आती।

ज्ञानं मददर्पहरं माद्यति यस्तेन तस्य को वैद्यः?।
अमृतं यस्य विषायति, तस्य चिकित्सा कथं क्रियते?।।

अरे! जो ज्ञान ही अभिमान का नाश करने वाला था वही (ज्ञानी) ही यदि अभिमान करने लगा तो फिर उसका तो वैद्य कौन बनेगा? जैसे यदि अमृत भी किसी को प्रतिकूल विष को असर करें तो, तो फिर उसकी चिकित्सा कैसे की जाय? ब्रह्मा भी नहीं कर सकता। अतः ज्ञानी का ज्ञानीपना इसी में है कि जितना ज्यादा ज्ञानी है उतनी ही ज्यादा नम्रता-विनम्रता रखें उसी में उसकी शोभा है।

सा विद्या या मदं हन्ति, सा श्रीर्याऽर्थिषु दीयते।
धर्मानुसारिणी या च सा बुद्धिरभिधीयते।।

विद्या (ज्ञान) वही है जो मान-अभिमान का नाश करें लक्ष्मी वही सार्थक है जो दीन-दुखियों को दी जाय और जो धर्मानुसारिणी बुद्धि है वही श्रेष्ठ है अतः अभिमान से बचने में ही हमारी शोभा है।

अभिमान भी चार प्रकार का हैः-

1- अनन्तानुबंधी 2- अप्रत्याख्यानीय

3- प्रत्याख्यानीय मान 4- संज्वलन

वैसे यदि देखें तो अभिमान तो अभिमान ही है। फिर भी सभी जीवों के अभिमान में तरतमता का भेद है। किसी का अभिमान कम है तो किसी का ज्यादा है। किसी का मान ज्यादा लम्बे काल तक चलने वाला है तो किसी का कम काल तक चलता है। किसी का मान नरम होता है तो किसी का ज्यादा कड़क होता है। इसी तरतमता के कारण चार भेद होते हैं। उपमा के दृष्टांत से समझ में आए इसलिये समझाया गया है।

1- अनन्तानुबधी मान :-

जैसे देखिए-पत्थर का स्तंभ है वह जिन्दगी भर कभी भी नहीं मुड़ेगा। नहीं झुकेगा। वैसे अनन्तानुबंधी मान कषाय वाला जो अभिमान में रहता है वह आजीवन भर कभी भी नहीं झुकता, क्रोध की तरह इसकी भी समय मर्यादा आजीवनकाल की है। इसके कारण नरक गति होती है।

2- अप्रत्याख्यानीय मान :-

दूसरा- अप्रत्याख्यानीय मान पत्थर के खंभे से कुछ नरम अपनी हड्डी के जैसा है। अभिमान में अक्कड़ता कितनी रहती है इसकी मात्रा देखने के लिये उपमा पदार्थों से दी जाती है। जैसे

हड्डी भी मजबूत है यह भी नहीं मूड़ती। लेकिन यदि प्रयत्न किया जाय तो आसन-व्यायाम-अंगमरोड़ की कसरत करते रहने से एक वर्ष के अंत में तो अस्थियां भी मुड़ती है। सर्कस के कलाकारों को जिस तरह बचपन से ही प्रतिदिन अंगमरोड़ की कसरत कराई जाती है तो उनका शरीर किस तरह रबर की तरह गोल-गोल मुड़ता है, घुमता है। उसी तरह यह दूसरा अप्रत्याख्यानीय मान एक वर्ष की अवधिवाला अस्थि जैसा है जो साल भर बाद झुकता है।

3- प्रत्याख्यानीय मान :-

तीसरा प्रत्याख्यानीय मान लकड़े के खंभे जैसा है। लकड़ तो अस्थि से भी कम कड़क है। प्रयत्न करने पर चार मास में भी मुड़ जाता है। उसी तरह प्रत्याख्यानीय मान चार महिने तक की अवधि में भी झूकता है। अतः काष्ठवत् कहा है।

4- संज्वलन मान :-

यह तो बिल्कुल आसान अभिमान है। यह बांस की बेंत जैसा है। यद्यपि बांस की बेंत सीधी कड़क रहती है फिर भी जब जिस तरफ मोड़े तब उस तरफ मुड़ती है। यह संज्वलन मान कषाय भी वैसा ही है। अभिमान आ तो जाता है लेकिन तुरन्त नम्रता भी आ जाती है। समझाने पर.... तुरन्त चरणों में झूक भी जाता है। ज्यादा से ज्यादा इसकी काल मर्यादा सिर्फ 15 दिन की ही रखी गई है।

बाहुबली का अभिमान :-

यद्यपि उत्कृष्ट वैराग्य भाव से युद्ध के मैदान में ही अपनी मुष्टि को सिर पर रखकर केशलोच कर दीक्षा ले ली। लेकिन मान-अभिमान इतना बढ़ा कि अभी तो समवसरण में प्रभु के पास नहीं जाऊंगा। क्योंकि मेरे पहले 98 भाईयों ने दीक्षा ली है जो मेरे से छोटे है और उनको वंदन करना पड़ेगा इसलिये केवलज्ञान होने के बाद जाऊंगा ताकि मैं ही बड़ा कहलाऊंगा और सभी चारित्र में बड़े होते हुए भी छोटे बन जाएंगे फिर मुझे कभी किसी को वंदन करना नहीं पड़ेगा। सोचिए केवलज्ञान के ऊंचे से ऊंचे पवित्र भाव के लिये भी बीच में अभिमान आ गया! भाव खराब नहीं थे.... भाव तो बहुत ऊंचे थे लेकिन बीच में मान खराब था। केवलज्ञान की प्राप्ति के लिये वे काउस्सग्ग ध्यान में खड़े भी रहे.... कहां तक? कितने समय तक? पूरे 12 महिने.... एक वर्ष तक काउस्सग्ग में खड़े रहे। सोचिए हमको एक घंटा भी खड़ा रहना पड़े तो अखरता है। पक्षियों ने दाढ़ी में घोंसले बना दिये। पैरों पर घास की लताएं वेलों की तरह बढ़ गई। ऐसे समय मौका देखकर पिता तीर्थंकर श्री ऋषभदेव प्रभु ने ब्राह्मी-सुंदरी साध्वीजियों को भेजी जो पूर्वाश्रम की बहनें थी। उन्होंने आकर इतना ही कहा कि- 'वीरा मारा! गज थकी उतरो.... गज चढ़े केवल न हुए रे' हे बंधु! आप हाथी पर से नीचे उतरो। हाथी पर चढ़ने से केवलज्ञान नहीं होता है। अपनी बहन साध्वीयों के शब्द सुनकर एक-एक बाहुबलीजी का मन चौक उठा। अरे! ये साध्वीयां है और झूठ क्यों बोलती है? कहां है हाथी? मैं कहां हाथी पर बैठा हूं? ये क्या बात करता है? समझदार को तो ईशारा काफी होता है। स्वयं ही समझ गये हां, हां सही बात है। मैं अभिमान रूपी हाथी पर चढ़ा हुआ हूं.... तो तो केवलज्ञान कहां होगा? अरे रे मेरी भूल है! तुरन्त नम्र बन गए....अच्छा-अच्छा अभी जाता हूं मेरे 98 भाई सभी आयु में मेरे छोटे हुए तो भी क्या हुआ, चारित्र में तो बड़े ही है। मैं अभी जा के वंदना करूंगा। बस आत्मा जागृत होने के बाद कहना नहीं पड़ता। नमस्कार के लिये जाने के लिये पैर उठते ही केवलज्ञान हो गया। सिर्फ एक कदम उठते ही अर्थात् केवलज्ञान कितना पास में था? इतना समीप.... होते हुए भी अभिमान के पतले आवरण से भी रूक तो जाता है।

किसका त्याग अधिक?

एक सम्राट किसी संत के चरणों में पहुंच गया। राजा प्रणाम करने लगा और बोला, भर यौवन में आपके त्याग को कोटि-कोटि वंदन। राजा के प्रणाम का जवाब देते हुए संत ने कहा- राजन्! मेरी अपेक्षा तो तुमने अधिक त्याग किया है अतः वास्तव में नमस्कार के पात्र तुम हो। तुमने आत्मा के अनंत व अक्षय आनंद को छोड़कर क्षणिक व तुच्छ विषय-सुख को स्वीकार किया। इस विराट विश्व के अखंड आत्म साम्राज्य को तिलांजलि देकर चार दीवारी में रहे हुए महल में संतोष धारण किया है।

अनंत शक्तिमान आत्मा के आवास को छोड़कर गटर की गंदगी से भरे देह में आवास किया है। राजन्! मैंने तो क्षणिक सुख को छोड़कर शाश्वत सुख पाया है। मर्यादित राज्य-भूमि को छोड़कर अनंत का साम्राज्य प्राप्त किया है।

बोलो! त्याग तुम्हारा अधिक या मेरा। वंदन के पात्र तुम हो या मैं?

संत के इस सवाल व जवाब को सुनकर राजा दंग रह गया।

तीर्थाधिराज शत्रुंजयगिरि के पंद्रहवें उद्धार का अपूर्व इतिहास

भारत वर्ष में मुस्लिम राज्य की स्थापना के बाद उन्होंने देश में अनेक हिन्दुधर्मियों को और धर्म स्थानों को नष्ट किया है, शत्रुंजय महातीर्थ भी उनसे नहीं छूटा है। सं.1369 के वर्ष में खिलजी वंश के अल्लाउद्धीन की सेना ने मुख्य मंदिर को नष्ट किया और देवाधिदेव आदिनाथ प्रभु की परम पवित्र प्रतिमा को भंग किया। उस समय गुजरात की राजधानी पाटण शहर में ओसवाल जाति के देशल शाह और उसके पुत्र समरसिंह (समरो शाह) रहते थे। वे देव, गुरू, धर्म के संपूर्ण उपासक, जैन नररत्न, बुद्धिमान, राजकीय पहुंचवाले और धनाढ्य पुण्यशाली पुरूष थे। दोनों श्रद्धालु पिता-पुत्र ने उस तीर्थ के विध्वंस की वास्तविकता जानी तो उन्हें अपार दुःख हुआ और उस समय के उपकेश गच्छ के धुरंधर आचार्यश्री सिद्धसेनसूरि के उपदेश से इन पुण्यशाली आत्माओं को तीर्थ के उद्धार की तीव्र उत्कंठा उत्पन्न हुई और गुरूवर्य से सहायता मांगी। अल्लाउद्धीन खिलजी का अलपखान नामक पाटण शहर का संचालन करनेवाला सूबेदार था, समरसिंह उसका प्रतिपात्र और विश्वसनीय मित्र था, पिता देशलशाह के आदेश से तीर्थोद्धार के कार्य हेतु सावधान होकर श्री सिद्धसेनसूरी के पास जाकर जब तक शत्रुंजय तीर्थ का उद्धार पूर्ण कर न सकूं तब तक ब्रह्मचर्य का पालन करूंगा, दिन में दो बार भोजन ग्रहण नहीं करूंगा, खेल (पीठी) तेल और पानी इन तीन वस्तुओं से स्नान नहीं करूंगा, एक बार खाऊंगा और भूमि पर शयन करूंगा। इस प्रकार अभिग्रह धारण कर पिता के पास आकर सारी बात कही। धन्य है ऐसे पुण्यशाली उत्तम नर को! इसके पश्चात मणि, मोती, वस्त्र, स्वर्ण और अलंकार इत्यादि उत्तम वस्तुओं की भेंट-सौगात लेकर अनुज्ञा प्राप्ति हेतु व संतोष प्रदान करने के लिये सूबेदार अलखपान के पास समरसिंह आया। प्रणाम करके सौगात दी जिससे खान प्रसन्न हुआ और आने का कारण पूछा। समरसिंह ने कहा कि- 'आपकी सेना ने हमारे शत्रुंजय तीर्थ का विध्वंस किया है और हमारे सभी धार्मिक कार्य अवरूद्ध हो गए है, इसलिये मुझे तीर्थ का उद्धार करना है, इस कार्य हेतु आपके आदेश की आवश्यकता है। यह सुनकर अलखपान अत्यंत प्रसन्न हुआ और इच्छित कार्य को करने की आज्ञा दी, इसके लिये उसने समरसिंह को सही सिक्का कर अपना आदेशपत्र दिया और आदेशपत्र के साथ स्वर्ण का मणिमोती जड़ित शिरस्त्राण सहित तसरीफ देकर समरसिंह को अपना कार्य सिद्ध करने के लिये कहा। खान को प्रणाम कर उसके द्वारा दिए गए उत्तम अश्व पर सवारी कर अलखपान के सेवक बहेराम मलिक के साथ अपने घर आया। विभिन्न उपहार द्वारा बहेराम मलिक को संतुष्ट किया। वहां से समरसिंह नगरजनों के साथ गुरू के पास आया, वहां गुरू महाराज को वंदनादि कर समस्त बात विस्तार से बताई। गुरू महाराज ने उसका भाग्य उत्तम जानकर स्वयं भी आनंदित हुए। समरसिंह ने वहां कि भूतकाल में वस्तुपाल मंत्री ने मूर्ति के लिये सम्माण खान की आरस की शिला मंगवाई थी और जानकारी के अनुसार वह भूगर्भ में अक्षत है उसकी प्रतिमा बनवाऊँ?

गुरू ने कहाकि- वह श्रीसंघ को सौंपी हुई है इसलिये चर्तुर्विध संघ की आज्ञा लेकर बनाई जा सकती है, इसलिये वैसा करो।

इसके पश्चात समरसिंह ने श्री नेमनाथ प्रभु के मंदिर में सभी आचार्यों, श्रावकों और संघ के अग्रगण्यों को एकत्रित किया और हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि धर्म के शत्रु म्लेच्छों ने श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति की प्रतिमा भग्न की है। तीर्थ और तीर्थ नायक का उच्छेद होने के कारण श्रावकों के समस्त धर्म अस्त हो जायेंगे। मंत्री वस्तुपाल ने मम्माणखान से जो आरसशिला मंगवाई थी वह आज भी भूगर्भ में अक्षत पड़ी हुई है इसलिये आपकी आज्ञा हो तो उससे अथवा दूसरी शिला मंगवाकर मैं तीर्थराज की प्रतिमा बनवाऊँ।

आचार्य-संघपति और श्रावक आदि समरसिंह की प्रशंसा करते हुए बोले कि- यह अति भयानक समय है इस कारण मंत्रीश्वर के विपुल धन-द्रव्य के व्यय द्वारा लाई गई वह शिला इस समय बाहर निकालना उचित नहीं है, इसलिये भले ही वह जहां है वहां ही रहे और आप आरासण की खान से अन्य दूसरी शिला मंगवाकर नवीन प्रतिमा बनवाओ, संघ ने प्रसन्नता के साथ कहा। श्रीसंघ की आज्ञा शिरोधार्य कर घर पर आकर पिता देशलशाह को संपूर्ण वृत्तांत सुनाया।

श्रेष्ठि समरशाह ने पिता की आज्ञा से आरासण की खान से शिला मंगवाने हेतु प्रार्थना पत्र के साथ सौगात लेकर अपने विश्वसनीय सेवकों को भेजा, वे कुछ ही दिनों में ही त्रिसंगपुर पहुंच गए। वहां महिपालदेव नामक राजा राज्य करता था जो कि आरासण की खान का स्वामी था। राजा शैवधर्मी था तथापि जैनधर्म के प्रति श्रद्धालु था। उसके राज्य में कोई भी हिंसा नहीं करता था। उस राजा का पाताशाह नामक मंत्री था।

समरसिंह के सेवकों ने वहां पहुंचकर राजा को भेट सौगात के साथ प्रार्थनापत्र दिया। राजा की आज्ञा से मंत्री ने प्रार्थनापत्र पढ़कर सुनाया। राजा महिपालदेव ने समरशाह को धन्यवाद दिया और आरासण की खान अपने आधिपत्य में है तथा इस प्रकार के पुनित काम में उसे याद किया गया है, यह जानकर स्वयं को धन्य मानने लगा। महिपालदेव ने मंत्री को सूचित करते हुए कहा कि भेट-सौगात वापिस लौटा दो, क्योंकि ऐसे पुनीत पुण्यकार्य हेतु धन नहीं लिया जा सकता, इतना ही नहीं अपितु इसके पश्चात जिनबिंब के लिए शिलादल ग्रहण करनेवाले से लिया जानेवाला कर भी आज से सदैव के लिए मैं बंद करता हूं और इस कार्य हेतु कोई भी सहायता चाहिए वह भी अवश्य दूंगा। ऐसा कहकर राजा मंत्री और समरसिंह के सेवकों के साथ आरस की खान पर गया और आरस निकालने वाले व्यक्तियों को बुलाकर सन्मान के साथ जिनबिंब के लिए एक बड़ी शिला निकालने का मूल्य निर्धारित किया। शुभ मुहूर्त में खान की पूजा कर कार्य प्रारंभ किया और उस शिला को निकालने वालों का वस्त्र, तांबुल, भोजन आदि से समरसिंह के सेवकों ने सन्मान किया और साथ ही एक भोजनशाला भी खोली। इसके पश्चात मंत्री को वहां रखकर अपने नगर में आया, तथापि नित्य प्रतिदिन अपने सेवकों को भेजकर समाचार मंगवाता, सूचनाएं देता। कुछ ही दिनों में शिला बाहर निकली उसे पानी से धोकर साफ करने पर उसके मध्यभाग में एक दरार दिखाई दी, इसकी सूचना समरसिंह को मिलने पर उसने दूसरी शिला निकालने की सूचना भेजी, दूसरी शिला निकालने पर भी ऐसा ही हुआ, इस कारण राजा, मंत्री और समरसिंह के सेवक भी दुःखी हुए और वे सभी देव की आराधना करने हेतु अट्ठम तप कर डाभ (कुश) के बिस्तर पर सोने लगे। तीसरे दिन शासन देवताओं ने अमुक स्थान पर शिला निकालने की सूचना दी और उस प्रकार करने से स्वच्छ निर्मल और निर्दोष शिला निकली। इसके समाचार समरसिंह को देने पर उन्होंने स्वर्ण के दाँत सहित जिहवा और दो पट्ट वस्त्र समाचार देनेवाले को भेंट स्वरूप दिये और चतुर्विध संघ को एकत्रित कर यह आनंदप्रद समाचार सभी को सुनाया। संघ ने जिनबिंब के निर्माण का आदेश समरसिंह को दिया।

सम्पूर्ण मुख्य प्रासाद को म्लेच्छों ने नष्ट किया है और देवकुलिकाएं जो आसपास है वे भी गिरा दी है, इस कारण इन सभी को नवीन बनवाकर प्रतिष्ठा करवानी होगी। इस पुण्य की प्राप्ति के लिये सभी को यथायोग्य कार्य का विभाजन करना चाहिये। इसलिये यह कार्य श्री संघ ने अलग-अलग व्यक्तियों सुपुर्द कर भिन्न-भिन्न धर्म कार्य करने के लिये सौंपे। इसी प्रकार मुख्य प्रासाद का निर्माण करने हेतु किसी भाविक श्रावक द्वारा आज्ञा मांगने पर जिनबिंब का निर्माण करवानेवाला ही मुख्य प्रासाद निर्मित करवाए वही अधिक शोभास्पद है ऐसा कहकर श्रीसंघ ने दोनों को निर्मित करने का समरशाह को आदेश दिया।

पातामंत्री ने स्वर्ण के कंगन और वस्त्रदान से सूत्रधारों को संतुष्ट किया तथा महिपालदेव राजा ने अखंड शिला निकली है ऐसा ज्ञात होने पर प्रसन्न होकर खान के स्थल पर आया और साक्षात् जिन ही हो ऐसा मानकर चंदन पुष्पादि द्वारा शिला की पूजा की। पश्चात उस शिला को सूत्रधारों से उतरवाकर आरासण में उसका प्रवेश महोत्सव किया। इसके बाद अपने मंत्री पाताशाह को कुछ आवश्यक सूचनाएं देकर राजा अपने नगर में लौट आया।

मंत्री ने शिला को एक बड़े रथ में स्थापित की, उसे ठीक से रखवाकर कई व्यक्तियों और बलवान बैलों द्वारा खिंचवाकर बड़े परिश्रम से पर्वत से नीचे उतारी और आगे चलने पर कुमारसेना गाँव के समीप वह रथ रूक गया। उस समय त्रिसंगमपुर के आसपास लोगों ने वहां पहुंचकर महोत्सव किया और यह समाचार पाटण समरसिंह को भेजा, जिससे वे बहुत प्रसन्न हुए व अलग-बगल के गाँवों से सम्मान के साथ शक्तिशाली बीस बैल मंगवाकर लोहे से जड़ा हुआ शकट तैयार करवाकर कुमारसेना गाँव भेजा। शिला को उसमें रखकर गाड़ा चलाने पर वह टूट गया, तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ इस कारण मंत्री खिन्न हो गया और यह समाचार समरसिंह को मिलने पर उन्हें भी चिंता हुई। इसी बीच शासनदेवी ने प्रत्यक्ष होकर कहा कि-झंझा नामक गांव में देव अधिष्ठित मजबूत शकट है वह तुम्हें मिलेगा जिससे तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा। इतने में ही उस देवी का पूजारी वहां आ पहुंचा और उसने समरसिंह से कहा कि देवी ने मुझे आदेश दिया है कि समरसिंह को जाकर कहूं कि मेरे शकट से सरलता से शिला ले जायी जा सकती है, इस प्रकार वह शकट वहां भेजा। उसमें शिला रखवाकर अपने राज्य की सीमा तक पहुंचवाकर पाताशाह मंत्री अपने नगर में लौट आया। शिला अनुक्रम से खेरालु गांव से होकर भांडु गाँव में पहुंची, यह समाचार देशलशाह को मिलने पर श्री सिद्धसूरीजी और पाटण के लोगों सहित वे भांडु गांव आए और देशलशाह ने चंदनादि द्वारा पूजा की और अपने नगर में लौटे। शिला प्रत्येक गांव और नगर में पूजाती हुई अनुक्रम से

शत्रुंजयगिरि के पास आ पहुंची, जहां श्री पालीताणा के संघ ने अगवानी कर सत्कार पूजन महोत्सव आदि किया। देशलशाह के परिवार ने उसका स्वागत किया और पाटण जाकर सूचना दी। देशलशाह ने उन व्यक्तियों को वापिस उस शिला को श्री शत्रुंजय गिरि पर चढ़ाने की सूचना देने हेतु भेजा और साथ ही पाटण से प्रतिमा निर्माण करनेवाले सोलह बुद्धिशाली शिल्पियों (कारीगरों) को भेजा और जूनागढ़ से बालचंद्र नामक मुनि को शत्रुंजय बुलवाया वे शीघ्र ही वहां आए। उन्होंने शकट पर से शिला उतरवाकर पर्वत पर चढ़ाने की व्यवस्था की। कंधों पर उठानेवाले चौराशी व्यक्तियों को एकत्रितकर, लकड़ी, रस्सी द्वारा शिला को मजबूती से बांधकर कंधों पर रखवाई और छः दिन में शत्रुंजय पर्वत के ऊपर चढ़ा दी।

कहा जाता है कि जावडशाह ने इसी प्रकार शिला को छः महिने में चढ़ाया था। अब प्रतिमा निर्माण का कार्य प्रारंभ किया गया। शिल्पियों की भोजन-शयनादि की उत्तम व्यवस्था की गई। बालचंद्रमुनि की सूचना अनुसार प्रतिमा तैयार होने पर मुख्य स्थान पर लाई गई। कई बार दुर्जनों ने कितनी ही बाधाएँ पहुंचाई परन्तु देशलशाह के पुण्य प्रभाव से, साहणपाल की बुद्धि से, और समरशाह के सत्व से दुर्जन भी दुर्जनता छोड़कर कार्य में सहायक हुए। बिंब को मूल स्थान पर स्थापित कर पाटण में देशलशाह को समाचार भेजे, यह सुन देशलशाह ने समरशाह से कहा कि -अब चतुर्विध संघ के साथ यात्रा पर जाकर प्रतिष्ठा करें जिससे कृतकृत्य हो जाएँ।

पश्चात् पिता पुत्र दोनों श्री सिद्धसेनसूरीजी के पास उपाश्रय में आए, वंदनादिकर बोले कि- आप पूज्य के उपदेशरूपी जल से सिंचित हुआ हमारा आशारूपी वृक्ष जो अंकुरित हुआ था, वह श्रेष्ठ जल से सिंचित होने के कारण अब फलदायी हुआ है, उसकी प्रतिष्ठा करने के प्रसादरूप श्रेष्ठ मनोरथ को आप सफल करें। साथ ही विध्वंस से भग्न हुए मुख्य मंदिर के शिखर का उद्धार भी कलशपर्यंत परिपूर्ण करवाया गया है तथा देव की दक्षिण दिशा में अष्टापद की आकृतिवाला चोवीश जिनेश्वरों से युक्त नवीन चैत्य भी निर्मित करवाया है। बलानक मंडप में स्थित सिंह का भी उद्धार करवाया है इसके साथ ही आदिजिन के पीछे के भाग में विहरमान तीर्थंकरों का नवीन चैत्य भी बनवाया है। स्थिरदेव के पुत्र लुंढक ने चार देवकुलिकाएं और जैत्र और कृष्ण नाम के संघपतियों ने उस जिनबिंब सहित आठ श्रेष्ठ देहरियां बनवाई हैं। पेथड की कीर्तिलता तुल्य सिद्ध कोटाकोटि चैत्य जो तुर्कों ने तोड़ दिया था, उसका उद्धार हरिशचंद्र के पुत्र शाह केशव ने किया है। इसी प्रकार देवकुलिकाएं लेपादि जो अन्य नष्ट हुए थे उन सभी को पुण्यशालियों ने निर्मित करवाया है, इस प्रकार तीर्थ में सभी स्थान पूर्ववत् हो गये हैं और कलश की, दंड की तथा अन्य सभी अर्हतों की प्रतिष्ठा अब करवानी है। इत्यादि विषयवस्तु देशल शाह ने कही।

पश्चात देशलशाह ने आचार्यों, ज्योतिषियों और श्रावकों आदि को बुलवाकर प्रतिष्ठा का मुहुर्त निकलवाया। मुहुर्त का निर्णय होने पर निमंत्रण पत्रिका मुख्य ज्योतिषी के पास लिखवाई और उसका सत्कार कर उत्सव किया। प्रतिष्ठा का समय आने पर देशलशाह ने सभी देशों में अपने कुटुंबीजनों, पुत्रों, पौत्रों और मंत्री आदि को भेजकर संघ को निमंत्रण भेजा। इसके बाद देशलशाह ने यात्रा योग्य रथ जैसा एक देवालय बनवाया, पौषधशाला में जाकर आचार्य महाराज से अपने ऊपर वासक्षेप डलवाया।

पश्चात् सर्वोत्तम दिन में, शुभ वार और नक्षत्र में देवालय में प्रस्थान करने का देशलशाह ने विचार किया। शुभ दिन में पौषधशाला में सभी संघों को एकत्रित किया। देशलशाह वासक्षेप डलवाने हेतु गुरू के सन्मुख बैठे, गुरू ने उनके भाल पर तिलक किया और उनके शीश पर वासक्षेप डाला और इसके बाद समरसिंह पर वासक्षेप डाल- ''तू संघपतियों में अग्रणी हो ऐसा आर्शीवाद दिया।''

पोष शुक्ल 7 के शुभ दिन संघ का प्रयाण समय था। उस समय गृह देवालय में स्थित आदिनाथ प्रभु की प्रतिमा को लेकर देशलशाह ने उसे रथ में स्थापित किया और उस रथ में दो श्वेत वृषभ जोड़े कि उसी समय एक सौभाग्यवती स्त्री श्रीफल, अक्षत भरा हुआ थाल लेकर सामने आई। उसने देशलशाह तथा समरशाह के सिर पर अक्षत फैंके। श्रीफल हाथ में दिया और ललाट पर कुंकुम का तिलककर पुष्प की माला गले में पहनाकर आर्शीवाद दिया। पश्चात् वाद्ययंत्रों की नादध्वनि के साथ रथ आगे चलने पर अनेक शुभ सगुन हुए। पाटण में तो रंग जमा हुआ था। भाग्य से ही कोई घर बचा होगा।

शंखारिका गांव से संघ के साथ पाटण पहुंचकर पौषधशाला में जाकर सभी सूरी महाराजों को समरशाह ने वंदन पूर्वक संघ के साथ पधारने की विनंती की और प्रत्येक घर जाकर सभी श्रावकों को आदरपूर्वक साथ में चलने की प्रार्थना की जिससे सभी लोग शीघ्र ही आ गए। **(आगे और भी है....!)**

- साभार : श्री आनंद कल्याण

धर्म पुरूषार्थ

* जैनाचार्यश्री जितरत्नसागरजी 'राजहंस'

पांचवां अंग-धार्मिक सम्पत्तियाँ

गतांगों में धार्मिक सम्पत्ति के पांच भाग बताये थे। उनमें चार का विवेचन समझ चुके है आप। आज पांचवा धर्म द्रव्य समझिये।

5- धर्मद्रव्य :- धर्म के किसी भी कार्य के लिये एकत्रित किया गया द्रव्य धर्मद्रव्य कहलाता है। ऐसा सामान्य अर्थ किया जा सकता है। साधारण द्रव्य से भी यह द्रव्य सामान्य कोटी का है। इसमें सात क्षेत्रों के अलावा अन्य भी खातों का समावेश होता है।अमुक कार्य में खर्च करने को निश्चय के साथ एकत्रित किया द्रव्य निश्राकृत द्रव्य कहलाता है।

अमुक समय में ही खर्च करने के लिये एकत्रित किया गया द्रव्य कालकृत द्रव्य कहलाता है।

पोषधशाला द्रव्य

अमारी घोषणा द्रव्य

अनुकम्पा द्रव्य-जीवदया द्रव्य

ये सभी धर्मद्रव्य में आते है।

सात क्षेत्र सुपात्र है और उसमें नीचे के खाते का द्रव्य ऊपर के खाते में उपयोग किया जा सकता है किंतु अनुकम्पा द्रव्य ऊपर के किसी भी सुपात्र में नहीं वपराता है।

अनुकम्पा के द्रव्य में भी ऊपर की कक्षा के जीवों का द्रव्य नीचे की कक्षा के जीवों के लिये वापरा जा सकता है किंतु नीचे के जीवों का द्रव्य विकासवाले जीवों की अनुकम्पा में नहीं वापरा जा सकता है।

गरीब मानव अपने भाग में से कुत्ते को रोटी डाले तो कुत्ता वह रोटी खा सकता है किंतु कुत्ते की रोटी में से गरीब मानव भाग नहीं पड़ सकता। यह सुक्षम विवेक दृष्टि से विचारने जैसा है।

चार पुरूषार्थ की संस्कृति की रचना में मानवों की दया का समावेश हो ही जाता है अतः उसके लिये अलग से दया का चिंतवन करना आवश्यक नहीं है। आज मानवों की दयापात्र हालत है उसमें मानवकृत शोषण ही कारण भूत है।

चार प्रकार की संस्कृति की रचना में मानवों की दया का समावेश हो ही जाता है। अतः मानवों के लिये अलग से दया की याचना करने की आवश्यकता नहीं है। आज मानवों की जो दयापात्र हालत है उसमें मानवकृत शोषण ही कारणभूत है।

एक प्रजा दूसरी बहुतसारी प्रजा का शोषण करें, शोषण चालू ही रखे एवं फिर दूसरे प्राणियों की अनुकम्पा के लिये एकत्रित द्रव्य मानव के उपयोग में लेने के प्रयास करें उसमें मानवता की क्या महत्ता है? पश्चिम के सुज्ञ-श्वेत प्रजाजनों को यह विचारने जैसी बात है।

सात क्षेत्रों में सभी के आगे 'सु' शब्द समझना है। देव-द्रव्य -सुदेव द्रव्य अर्थ में रूढ़ समझना है। कुदेव, कुगुरू श्रावकाभास आदि में सुपात्र क्षेत्र का द्रव्य नहीं वपराता है। अनुकम्पा से उनके दुःखों को दूर कर उन्हें शाता पहुंचानी यह बात अलग है एवं सुपात्र समझकर भक्ति से द्रव्यार्पण करना यह बात अलग है।

सुश्रावक क्षेत्र की श्रावक से अर्जी लेकर उसे अरजदार बनाकर अनुकम्पा की कक्षा में रखना कदापि उचित नहीं है। सुश्रावकादि की भक्ति वात्सल्य होना चाहिये। परन्तु श्रावक-श्राविका अनुकम्प्य बने यह स्थिति जहां से प्रारंभ हो और दोष प्रारम्भ हो वहीं से उस दोष का निवारण करने का कर्त्तव्य सुश्रावकों की, मार्गानुसारी सद्‌गृहस्थों की तथा गुरूजनों एवं सर्वसज्जनों का है। इस तरह धार्मिक सम्पत्तियों का संक्षिप्त में निर्देश दिया और इस तरह धर्मपुरूषार्थ के पांच स्तम्भों की भी संक्षिप्त जानकारी दी। मूलभूत पांचों स्तम्भ के पेरा में दूसरे सभी धर्मों के स्तम्भों का समावेश होता है। इन पांचों स्तम्भों की रचना उन्नत मनोदशा बनाने के लिये है। आध्यात्मिक विकास के योग्य मनोवृत्ति बनाने के लिये है।

यदि आध्यात्मिक विकास जैसी कोई वस्तु ही दुनिया में नहीं हो तो फिर विचारने जैसा कुछ भी नहीं रहता है। फिर गम्यागम्य भक्ष्याभक्ष, विकास, ध्वंस, अच्छा खराब इन भेदों का भी अवकाश ही नहीं है फिर तो किसी को भी अपराधी नहीं घोषित किया जा सकता एवं उसे सजा करने की व्यवस्था भी अस्थान हो ही जाती है।

अतः सुव्यवस्था को उत्तेजन एवं कुव्यवस्था का नाश करने का प्रयास विश्व के मूलभूत सिद्धांत के आधार पर निर्भर है। इसमें भ्रांति, गैरसमझ आदि हो तो यह अलग बात है।

नव वर्ष, पार्श्वनाथ जयंती और अहिंसा-दिवस

✻ डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई

जैनधर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान श्रीपार्श्वनाथ भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक महापुरूष है। प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी और सभी भारतीय भाषाओं में भगवान श्रीपार्श्वनाथ के हजारों स्त्रोत, भजन,गीत, काव्य आदि मिलते है। सर्वाधिक मंदिर, मूर्तियां, स्तुतियाँ, यंत्र, मंत्र आदि तीर्थंकर पार्श्वनाथ के प्राप्त होते हैं। भारतीय मूर्तिकला और चित्रकला के विकास में भगवान श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमाओं और चित्रों का विशेष स्थान है। पौष कृष्ण दशमी को देशभर में भगवान श्रीपार्श्वनाथ जन्म कल्याणक श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया जाता है। देश में भगवान पार्श्वनाथ के कई प्रसिद्ध मंदिरों पर मेले लगते हैं। तारीख की दृष्टि से भगवान श्रीपार्श्वनाथ जन्म कल्याणक प्रायः दिसंबर के अंतिम सप्ताह से लेकर जनवरी के प्रथम सप्ताह में आता है।

आजकल जैन समाज में कुछ संतों की निश्रा में एक नई परम्परा चल पड़ी है, वह है- जनवरी की पहली तारीख को साधु-साध्वियों के सान्निध्य में ''नववर्ष महामांगलिक'' का कार्यक्रम। किसी भी निमित्त से जप-तप, सामायिक-स्वाध्याय आदि आराधनाएं होती है तो अच्छा ही है। यदि ऐसी आराधना से हमारा अपना कोई सांस्कृतिक पर्व या तिथि जुड़ जाए तो सोने में सुहागा हो जाए। इसी दृष्टि से अनुरोध है कि नववर्ष की आराधना को भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक से जोड़ा जाए। इससे हमारी नववर्ष आराधना निम्न रूपों में हो सकती है:-

1- तारीख की दृष्टि से कुछ दिन पहले,

2- तारीख की दृष्टि से कुछ दिन बाद,

3- कभी-कभी नये वर्ष की पहली तारीख को ही पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक का सुयोग बैठ जाता है।

इस वर्ष तारीख की दृष्टि से श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती (पौष कृष्ण दशमी) 23 दिसम्बर को है। आजकल समाज में एक परम्परा और गतिमान है कि संतों के जयंती समारोह निकटतम रविवार को आयोजित किये जाने लगे हैं। इस दृष्टि से यदि नववर्ष के नाम पर होनेवाला महामांगलिक का आयोजन श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती को ही कर लिया जाए तो यह जैन समाज में सांस्कृतिक जागरण और एकता की दिशा में बड़ा कदम होगा। जैन समाज में पार्श्वनाथ जयन्ती श्रद्धा, भक्ति, उत्साह और उत्सव के साथ मनाई जाती है। यदि जैन संघों तथा संतो के सान्निध्य में होने वाले नववर्ष महामांगलिक कार्यक्रम श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती को ही सम्पन्न किये जाये तो यह सचमुच ''महामंगलकारी'' कार्य होगा। क्योंकि जप-तप व साधना के क्षेत्र में पौष बदी- दसम की तिथि का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। ''महामांगलिक'' के साथ ही जप-तप, सामायिक आदि आराधनाएं भी सहज जुड़ जायेंगी। श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती पर श्रद्धा के साथ शुरू किये गये जप-तप तथा नये कार्य विशेष सुफलदायी बनते हैं।

भगवान श्रीपार्श्वनाथ ने अंधविश्वासों का प्रतिवाद किया। अहिंसा, करूणा, समता और क्षमा का उपदेश दिया। संस्कृति, लोक-संस्कृति और अहिंसा की दृष्टि से श्रीपार्श्वनाथ जयंति का अत्यधिक महत्व है। अहिंसा-पर्व और लोक-उत्सव के रूप में उनकी जयन्ती मनाई जाती है। इस दृष्टि से श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती के साथ एक बात का और निवेदन है। वह है, इस पावन दिवस पर अपने-अपने क्षेत्र (प्रदेश, संभाग, जिला, नगर, कस्बा, ग्राम आदि) में शासकीय स्तर पर अगता (अहिंसा-दिवस) घोषित करवाना। इसे अमारि-प्रवर्तन भी कहते हैं।

यह ऐतिहासिक सत्य है कि जैन दिवाकर चौथमलजी महाराज ने अनेक रियासतों और क्षेत्रों में श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती पर अनेक अहिंसा-दिवस घोषित करवाये। उनकी सत्प्रेरणा से घोषित अहिंसा-दिवसों का पूर्णतः अनुपालन होता था। अहिंसा-दिवस के दौरान संबंधित क्षेत्र में पशु-पक्षी वध और मांस-मछली के क्रय-विक्रय पर पूर्ण कानूनी प्रतिबंध रहता था और सभी बूचड़खाने बिल्कुल बन्द रहते थे। जैन दिवाकरजी की प्रेरणा से विशाल मेवाड़ रियासत एवं अनेक रियासतों और राज-ठिकानों की ओर से महावीर जयन्ती की भांति श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती पर भी स्थायी अहिंसा दिवस घोषित थे। इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2008 में नगर परिषद उदयपुर तथा राजस्थान सरकार की ओर से अहिंसा दिवस घोषित किये गये थे। बाद में उदयपुर नगर निगम की ओर से भी ऐसे पवित्र आदेश जारी किये गये।

अहिंसा-दिवस की परम्परा मात्र जीवरक्षा ही नहीं, अपितु पर्यावरण-रक्षा से भी जुड़ी है। सभी श्रद्धालुओं, अहिंसा-प्रेमियों और पर्यावरण-रक्षकों से निवेदन है कि वे श्रीपार्श्वनाथ जयंती पर अपने-अपने क्षेत्र में अहिंसा-दिवस घोषित करवाएं और उसका समुचित पालन करवाएं। ऐसा करके हम गहरे अर्थों में नववर्ष भगवान श्रीपार्श्वनाथ जयंती और भारतीय संस्कृति की उपासना कर सकेंगे।

भावात्मक सशक्तिकरण का बढ़ता महत्व

* प्रफुल्ल पारख, पूणे

भाव-प्रधान्यता मानव मनोवृत्ति का अनन्य हिस्सा है जो हमारे जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करता है, भावात्मक अभिव्यक्तियां प्रेम, सुख, दुख, क्रोध, घृणा जैसे विविध माध्यमों से प्रकट होती है, जिसका अनुभव हम सभी दैनिक जीवन में करते है,सैद्धांतिक रूप से भाव एक वैचारिक स्थिति है जो स्वभावतः उत्पन्न होती है, जो न तो सुविचारित ही होती है, और न ही सुनियोजित, भावात्मकता, सही अर्थों में मानव का श्रृंगार है, जो उसे नव रूप प्रदान करती है, किसी भी अर्थ में भाव, मानव के बलशाली या दुर्बल होने का प्रतीक नहीं है, भावों का खुलकर प्रदर्शन मानव की निखालस व निर्मल छवि का परिचायक है, पुरूष हो या महिलाएं प्रकृति-प्रदत्त भाव स्थितियां, लिंग भेद से अबाधित दोनों में ही समान रूप से पायी जाती है, किन्तु समस्या तब उत्पन्न होती है, जब समाज लिंग भेद के आधार पर भाव प्रदर्शन में सीमाओं का निर्धारण करने लगता है।

किशोरावस्था में किशोर और किशोरियां दोनों ही उनमें विकसित हो रहे पुख्त वय के रूपांतरणों को महसूस करने लगते है, वस्तुतः यह स्थिति मानव विकास के शारीरिक एवं वैचारिक संक्रमणकाल का दौर है, जो यौवनारंभ एवं वयस्कता का संधिस्थल है, किशोरावस्था में हारमोन परिवर्तन व भावनात्मक खलबलियों के कारण किशोर और किशोरियां सामान्य जीवन जीने में अनेक दुभरताओं का सामना करते है, प्रायः हम पाते है कि विकसित हो रहे इन परिवर्तनों के फलस्वरूप उनमें से कुछ अंतर्मुखी होकर संकोची व कुछ बहिर्मुखी होकर आक्रामक हो जाते है, ये दोनों ही स्थितियां भ्रामक अवस्था की परिचायक है, उनकी कश्मकश, समस्याओं या वैचारिक स्थितियाँ को समझना माता-पिता सा शिक्षकों हेतु अत्यंत ही कठिन होता है, ये तो अवस्था है जहां समयानुकूल मार्गदर्शन, आत्मीयता व देखभाल के अभाव में वे गुमराह हो सकते हैं।

युग परिवर्तन के इस दौर में सर्वाधिक दुष्प्रभाव परिवार नाम की संस्था पर पड़ा है, एक ओर परिवार का कार्य क्षेत्र उद्देश्य एवं उसकी परिभाषा भी बदली है वहीं दूसरी ओर परिवार के सदस्यों के मध्य सामंजस्यता का अभाव एवं संवादहीनता की स्थितियों का निर्माण हो रहा है, वैयक्तिक विचारधाराओं से सिंचित आज की नयी पीढ़ी उन व्याधियों से ग्रसित है जो भावनात्मक विकारों को जन्म देती है, जिससे परिवार एवं समाज में असंतुलन विकसित हो रहा है। नई पीढ़ी की जीवनशैली, उस पर पाश्चात्य संस्कृति का गहरा प्रभाव, नव-तकनीक का आगमन आदि ऐसे अनेक विकट विषय है जिससे परिवार के सदस्यों के मध्य गहरी वैचारिक खाईयां निर्मित हुई है जो किशोर और किशोरियों हेतु मानसिक दबाव का कारण है, यही मानसिक दबाव नयी पीढ़ियों में वर्ष प्रतिवर्ष आत्महत्याओं की दर में वृद्धि का मूलभूत कारण है, जिसके आने वाले वर्षों में अधिक गंभीर रूप धारण करने की संभावनाएं है।

किशोरियों के मामले में विशेषकर सामाजिक प्रतिबंधों के चलते समस्या मात्रागत रूप से गंभीर बन जाती है, जो उनमें भावात्मक कुंठाओं को जन्म देती है, सामान्यतः यह पाया गया है कि किशोरावस्था में अधिकांश किशोरियों भावात्मक नकारात्मकताओं से ग्रसित रहती है। भारत में ही नहीं दुनिया का कोई भी देश विकसित हो या अर्धविकसित, महिलाओं की समानताओं का मुद्दा महत्वपूर्ण बनता जा रहा है व समाज में व्याप्त असमानताओं के विरूद्ध जंग छिड़ चुकी है। संयुक्त राष्ट्र संघ की महिलाओं द्वारा अपनाया गया ''प्लेनेट 50-50'' कार्यक्रम, समस्त विश्व की महिलाओं हेतु वर्ष 2030 तक समानुभूतिगत सामाजिक व अन्य स्थितियों की बहाली का संदेश दे रहा है। लिंग के आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव समाप्त करने का स्वप्न, मानवीय आधारों के मद्देनजर महत्वपूर्ण व आवश्यक कार्यसूची में सम्मिलित है व अब किशोरियों को बाल्यकाल से ही उन्हें प्रहारात्मक भावात्मकता के प्रतिकार हेतु सशक्त करने की आवश्यकता है। यह सशक्तिकरण बहु-आयामी होना चाहिये जिसमें भावात्मक सुदृढ़ता के साथ-साथ आर्थिक व सामाजिक मुद्दों का भी समावेश होना चाहिये, क्योंकि अध्ययनों से ज्ञात होता है कि पुरूष एवं महिलाएं दोनों ही भावात्मक घर्षणों से गुजरते है किंतु महिलाओं में प्रतिकार क्षमताएं कम होने के कारण भावात्मक दुर्घटनाओं की वे प्रायः शिकार हो जाती है, अतः यह महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है कि किशोरियों को बाल्यकाल से ही भावात्मक रूप से सशक्त कर यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि उनका विकास समझ एवं अन्वेषण संभव हो सके, भावात्मक स्थितियों के प्रति समझ एवं भावनाओं पर नियंत्रण व स्वयं के विचारों की स्पष्ट व योग्य तरीके से अभिव्यक्ति हेतु शिक्षा अनिवार्य है।

परिस्थितिजन्य कारणों एवं अज्ञानतावश, आज की यह नयी पीढ़ी मानव के भावात्मक पहलुओं के महत्व से अनभिज्ञ है, यही संभवित कारण है कि मानव संवेदनहीन होता चला जा रहा है कि मनुष्यों का स्थान यंत्र मानव ले रहे है तथा समाज रोबोटिक सोसायटी का स्वरूप धारण कर रहा है, इन परिस्थितियों में वैश्विक स्तर पर मानवीय धरोहरों की सुरक्षा हेतु गंभीर प्रयासों की आवश्यकता है, जिसमें महिलाओं की भावात्मक स्थितियों के सशक्तिकरण को प्राथमिकता मिलनी चाहिये।

नवकार मंत्र का प्रभाव....

यहां पेश किये गये अर्वाचीन दृष्टांत नवकार महामंत्र के उत्तम आराधक पू.पं.श्री अभयसागरजी म.सा. द्वारा संपादित ''महामंत्र ना अजकला'' पुस्तक से साभार उद्धृत किये गये हैं।

छोटा सा गांव उसका संकड़ा मार्ग। लोकवर्ण के नाम से पहचानी जाती एक कोम के महात्मा का गांव में आगमन हुआ। उका भगत के नाम से प्रसिद्ध इन महात्मा के दर्शन करने हेतु आसपास के गांवों से इनके अनुयायी बड़ी संख्या में इकट्ठे हुए। सभी रास्ता रोककर बैठे थे। उका भगत के पैर से स्पर्श करने की स्पर्द्धा चल रही थी।

श्रीकांत को स्टेशन की तरफ जाने की जल्दी थी। उसे समय पर स्टेशन पहुंचकर, शहर की ओर जाने वाली गाड़ी पकड़नी थी। उसे रास्ता रोककर बैठे और खड़े रहे जनसमूह के बीच में से जाना था। वह दो हाथ जोड़कर स्वयं को मार्ग देने की विनंति समूह को कर रहा था, किंतु मार्ग नहीं मिल रहा था। इतने में उका भगत की आवाज सुनाई दी-श्रीकांत को जाने दो, इसे मार्ग दो, इसे श्मशान पहुंचने में देरी होगी।

भगत की आज्ञा हुई इसलिये जन समुदाय ने तो उसे मार्ग दिया, किंतु श्रीकांत के पैर रूक गये।

''श्मशान में? -उसने भगत से पूछा।

जवाब में भगत कुछ नहीं बोले, केवल थोड़े से मुस्कराए। भगत! मैं तो अपने मित्र दिव्यकांत के विवाह में जा रहा हूं। श्मशान में नहीं। श्रीकांत ने कहा। कैसा विवाह और कैसी बात! जाओ, जल्दी जाओ, अन्यथा गाड़ी रवाना हो जायेगी और तुम पीछे रह जाओगे। उका भगत इतना ही बोले। उन्होंने श्रीकांत को स्टेशन की ओर जाने का ईशारा किया। गाड़ी रवाना हो जाए, इससे पहले स्टेशन पहुंचने की जल्दी थी, इसलिये श्रीकांत ने वहां से पैर उठाए।

वह समय पर स्टेशन पहुंचा, टिकिट लेकर बैठा और गाड़ी रवाना हो गई। किंतु श्रीकांत के मन में उका भगत की श्मशान वाली बात ऐसी बैठ गई कि विवाह में भाग लेने का जो आनंद था, वह लुप्त हो गया। दिल में कंपन बैठ गई। उका भगत की भविष्यवाणी श्रीकांत के अंतःकरण को सताने लगी। गाड़ी तो अपनी हमेशा की गति से आगे बढ़ रही थी, किंतु उसे लगा कि ड्राईवर गाड़ी बहुत धीरे चला रहा है। आखिर शहर आया। टेक्सी करके श्रीकांत ने दिव्यकांत के घर की ओर दौड़ लगाई।

उसे वहां पहुंचते ही शादी के गीत के बजाय मृत्यु की सिसकियां सुनाई देने लगी। विवाह के दिन ही केवल दो घंटों की अप्रत्याशित बीमारी से दिव्यकांत की आत्मा दिव्य धाम की तरफ चल पड़ी थी।

डॉक्टर तो दस इकट्ठे हुए थे किंतु दिव्यकांत की बीमारी का निदान कर सकें उससे पहले ही दिव्यकांत के प्राणपंखेरू उड़ गये थे। उस उका भगत की भविष्यवाणी सही हुई थी। विवाह का आनंद लेने के बदले श्रीकांत को श्मशान जाना पड़ा। मित्र की मृत्यु के बाद श्रीकान्त अपने गांव वापिस आया, उस दौरान उसके दिमाग में एक ही विचार उमड़ रहा था। उस उका भगत के पास ऐसी कौन सी विद्या है, जिसके कारण वह ऐसी सत्य भविष्यवाणी बोल सके?

यह विद्या तो अति अद्भूत है। ऐसी शक्तियां प्राप्त की जाए, तो जिंदगी सफल हो जाये। ऐसी इच्छा श्रीकांत के मन पर कब्जा कर बैठी थी। श्रीकांत को जांच करने पर इतना जानने को मिला कि उका भगत मेलड़ी माता के उपासक थे और वार त्यौहार, समय बेसमय उनके मुंह से निकलती भविष्यवाणी सही होती थी। भविष्य कथन कर सकने की शक्ति प्राप्त करने की प्रबल उत्कंठा श्रीकांत के हृदय में जाग गई थी। उसने उका भगत के पास से वह विद्या, किसी भी प्रकार से प्राप्त करने का निश्चय किया।

भगत का पता प्राप्त कर श्रीकान्त उका भगत के गांव की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचकर जिस मोहल्ले में भगत रहते थे, वहां पहुंच गया। भगत का घर कहां है, ऐसा किसी से पूछने से पहले ही पास में स्थित झोपड़ी के बंद दरवाजे के पीछे से एक आवाज आई! आओ, आओ, श्रीकांत भाई! तुम आए तो सही! श्रीकांत के आश्चर्य का पार न रहा। यह आदमी क्या सर्वज्ञ है? झोपड़ी में बैठा-बैठा बंद दरवाजे के पीछे से नाम लेकर पुकारता है। भगत की बहु ने झोपड़ी का दरवाजा खोला। श्रीकांत अंदर आया। निकाल दो, श्रीकांत भाई! यह विचार तुम्हारे मन में से निकाल दो, तुम्हारे जैसे का इसमें काम नहीं। उका भगत गंभीरता से बोले।

भगत मुझे यह विद्या प्राप्त करनी है। - श्रीकांत बोला।

मुझे पता है। इसके बिना तुम यहां दौड़े नहीं आते। किंतु तुम्हारे लिए इसमें पड़ने जैसा नहीं है, तुम्हारा यह काम नहीं है। जैसे आए हो वैसे वापिस जाओ। जो करते हो, वही करते रहो।

भगत मना करते रहे, वैसे-वैसे श्रीकांत मजबूत बनता गया। मुझे तो विद्या प्राप्त करना ही है। वापिस जाने के लिये नहीं आया। **'कार्य साधयामि वा देहं पातयामि'** मर जाऊंगा वह मंजूर है किंतु अब तो यह विद्या प्राप्त करने से ही छुटकारा है। श्रीकांत जिद्द पकड़कर वहीं बैठ गया।

किंतु श्रीकांत भाई! इसमें भारी हिम्मत की आवश्यकता पड़ेगी। दिल में थोड़ा सा भी डर लगा, तो फिर जीवन का खतरा है। भगत ने कहा।

हिम्मत का अभाव नहीं है और डर तो मैं रखता ही नहीं। वीतराग प्रभु की शरण है। आप, आपको ठीक लगे वह रास्ता बताओ।श्रीकांत ने जवाब दिया।

श्रीकांत के चेहरे के सामने थोड़ी देर देखकर उका भगत बोले- भाई यह तो मैली विद्या! हम रहे मिथ्यात्वी लोग! हमको तो सब चलता है, तुम्हारे से यह सहन नहीं होगा।

मैली हो या घेली, मुझे यह विद्या प्राप्त करनी ही है, दृढ़तापूर्वक श्रीकांत ने फिर से जवाब दिया।

उका भगत थोड़े मुस्कराए, फिर बोले- ठीक है, मैं लिखाता हूं, वे सभी वस्तुएं बाजार से ले लेना। मंत्र तो छोटा ही है। अमावस की रात में, ठीक बारह बजे, यहां के श्मशान में पहुंच जाना। मैं बता रहा हूं, वह सब व्यवस्था करके, फिर मंत्र पढ़ने लगना। तुमको भयभीत करने की कोशिश की जायेगी, मगर डर गए तो तुम्हारी लाश वहां रहेगी। नहीं डरे, मजबूत रहे, तो एक घंटे के बाद 'मांग, मांग, मांगे वो दूं' ऐसी आवाज सुनाई देगी। किंतु आवाज सुनते ही मत मांगना। उसको कहना कि साक्षात् उपस्थित नहीं होंगे, दर्शन नहीं दोगे, तब तक नहीं मांगूंगा। सफेद वस्त्रों में वह मानव के आकार में, हाजिर होगा। वहां अग्नि जलती होगी, उसके प्रकाश में उसकी परछाई नहीं पड़ेगी। बस, पैर धरती से 18 अंगुल ऊपर होंगे और परछाई न पड़ती हो तो समझ लेना कि वह स्वयं हाजिर है, फिर मांग लेना।

श्रीकांत ने जेब में से डायरी और लेखनी निकाली और बोला- लिखाओ, वस्तुओं के नाम लिखाओ।

किंतु श्रीकांत भाई! मेरी बात मानो! इसमें जीवन का खतरा है और तुम जैसे गौरे वर्णी का यह काम नहीं। जाने दो, यह बात छोड़ दो। भगत ने फिर से श्रीकांत को विनंति की। किंतु भविष्यफल कहने की शक्ति में श्रीकांत का मन ऐसा चिपक गया था, जैसे शहद में मक्खी चिपके।

उसने अपनी जिद्द नहीं छोड़ी।

भगत ने बाद में, उसे खरीद के लाने की वस्तुओं की सूची तैयार करवाई। उसकी विधि समझाई, फिर श्रीकांत के कान के पास अपना मुंह लाकर उसके कान में एक मंत्र सुनाया। यह सब तो बहुत सरल काम है। श्रीकांत हर्ष से बोल उठा। जवाब में भगत फिर से मुस्कुराए।

श्रीकांत अमावस्या की काल रात में श्मशान पहुंच गया। भगत की बतायी सारी वस्तुएं वह साथ लाया था। उसने लकड़ियों का ढेर कर, उसे अग्नि में जलाकर और उसमें घी होम कर मंत्रोच्चार शुरू किया।

दस मिनट में ही भयंकर चीखें सुनाई देने लगी। चित्र-विचित्र आवाजें आने लगी। जो मण्डला ति. बनाकर श्रीकांत उसमें बैठा था, उसके बाहर कंकालों की वर्षा होने लगी। चारों ओर खून की बौछारें उड़ने लगी। डाकणों और शाकिनिओं की हुंकारें पड़कारें एवं गर्जनाएं होने लगी!

कच्चा-पक्का हो तो हृदय ही बंद हो जाये, ऐसी भयानक परिस्थिति खड़ी हो गई किंतु श्रीकांत भी कच्चे दिल का आदमी नहीं था, वज्र हृदयी और दृढ़निश्चयी उस आदमी की नजर, प्राप्त होने वाली सिद्धि पर भी, उसने इन सभी तूफानों की कोई परवाह नहीं की। उसने जरा भी घबराये बिना मंत्रोच्चार एवं घी का होम चालू ही रखा।

आधे घंटे बाद तो इस तूफान ने भयंकर रूप धारण कर लिया। एक ओर विकराल भैंसे दौड़ते नजर आये। दूसरी तरफ से कई सर्पों की फुफकारें सुनाई देने लगी। सिंह की गर्जनाएं सुनाई देने लगी। प्रकृति ने तांडव मचाया हो, ऐसे मृत्युनादों की परंपरा श्रीकांत के कर्णपट को छेदने लगी, किंतु वह डरा नहीं, डिगा नहीं।

'कार्य साधयामि वा देहं पातायामि' ऐसा मजबूत संकल्प कर आये इस बहादुर आदमी ने जरा भी डिगे बिना। मंत्रोच्चार क्रिया, पूर्ण स्वस्थता और एकाग्रतापूर्वक चालु ही रखी। पन्द्रह मिनट बीत गए, कंकालों के ढेर अदृश्य होने लगे। खून से रंजित भूमि पुनः मूल रंग में प्रकट हुई। आवाजें बंद हुई, डरावना वातावरण बदल गया। उसके बदले हवा में इत्र की खुशबू आने लगी। दूर-दूर घंट बज रहा हो, वैसी आवाजें आने लगी, संगीत के कई वाद्ययंत्र चारों और बजने लगे। **(आगे और भी है....!)**

सागर समुदाय के गौरव

गच्छाधिपति आचार्य श्री हेमसागर सूरीश्वरजी महाराज

गच्छाधिपति पूज्य आचार्यदेव श्री हेमसागर सूरीश्वरजी म. का जन्म सौराष्ट्र प्रदेश के जीरा गांव निवासी दोशी श्री देवचन्द्रजी पुरूषोत्तमदासजी के कुल में सौ. झमकदेवी की रत्न-कुक्षी से वि.संवत् १९६१ चैत्र सुदी-८ को हुआ। आपका नाम हीराचन्दभाई था।

व्यवहारिक धार्मिक शिष्य तथा संस्कार प्राप्ति के लिये आपश्री सुरत में रहे, जहां आपका आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री से सम्पर्क हुआ। आप बचपन से ही उच्च संस्कारों के धनी थे। वि.संवत् १९८१ में आपके पिता श्री देवचन्द्रभाई पूज्य आगमोद्धारकसूरीजी के पास अजीमगंज में दीक्षा अंगीकार कर मुनिराज श्री देवसागरजी म. बन गये। वंश परम्परा में प्राप्त धार्मिक संस्कारों के कारण आपने भी वि.संवत् १९८४ वैशाख सुदी ११ को अहमदाबाद में पूज्य आगमोद्धारक सूरीजी के सान्निध्य में दीक्षा अंगीकार की और मुनिराज श्री हेमसागरजी बन गये।

ससत गुरूकुलवास में रहकर व्याकरण, काव्य, न्याय, आगम आदि के विविध शास्त्रों में दक्षता प्राप्त की।

वि.संवत् १९९९ कार्तिक बिदी २ को कपड़वंज में पूज्य आगमोद्धारकश्री द्वारा आपको पंन्यास पद प्रदान तथा वि.संवत् २०२७ माघसुदी १३ को पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री माणिक्यसागर सूरीश्वरजी म. द्वारा सुरत में आचार्यपद पर आरूढ़ किया गया।

आपश्री ने साहित्य क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किये है। आपने संस्कृत-प्राकृत ग्रंथों को गुजराती अनुवाद कर मुद्रित करवाये। प्राचीन हस्तलिखित पत्रों का संशोधन-संपादन पूज्य आचार्य श्री विमलसूरीजी म. विरचित 'पउमचरियं' जैन रामायण का सम्पूर्ण गुजराती अनुवाद, पूज्य आचार्य श्री हरिभद्रसूरीजी म. रचित 'उपदेशक' महाग्रंथ का अनुवाद, पूज्य हेमचन्द्राचार्य म. रचित 'योगशास्त्र' का अनुवाद, पूज्य आचार्य श्री रत्नप्रभ सूरीजी म. कृत १४०० श्लोक प्रमाण प्राकृत 'उपदेशमाला' का अनुवाद, 'उपदेशमाला' दो घट्टी टीका की प्रेस कॉपी, 'महानिशीय श्रुतस्कंध' का अनुवाद, पूर्वाचार्य कृत अंतिमसाधना, साधु-साध्वी क्रिया सूत्र उपरांत पूज्य आगमोद्धारकसूरीजी के तात्विक-आगमिक प्रवचनों की प्रेस कॉपी तैयार कर भाग १-२३-४-५ के रूप में प्रकाशित करवाये।

कपड़वंज में अंजनशलाका प्रतिष्ठ, वेजलपुर सिद्धचक्र मंदिर की प्रतिष्ठा सिद्धचक्र तीर्थ में, मोतीशा सेठ की टूंक में तथा आगम मंदिर में सिद्धचक्र गणधर मंदिर के भूमिगृह में अनेक प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा, पालीताना के आरीसा भवन में प्रतिष्ठा आदि महोत्सव एवं अनेक दीक्षा, संघ विगेरे कार्यक्रम आपकी निश्रा में सोल्लास सम्पन्न हुए।

वि.संवत् २०३१ में आपश्री को सागर समुदाय के गच्छाधिपति पद से विभूषित किया गया।

वि.संवत् २०१७ आसोज सुदी-८ अहमदाबाद में चतुर्विध संघ समक्ष नवकार महामंत्र का स्मरण करते हुए आपश्री दोपहर ४.२० मिनिट पर इस नश्वर देह का त्याग कर परलोक सिधारे। प्राण पखेरू उड़ गया और पिंजरा खाली रह गया।

गच्छाधिपति आचार्यश्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज

जिनशासन रूपी नीलाकश के चमकते सितारे गच्छाधिपति आचार्य देव श्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज का जन्म वि.संवत् १९६० भाद्रपद सुदी ८ के शुभ दिन वीसनगर में हुआ। धर्मपरायण श्रावक श्री गगलभाई की धर्मपत्नी सौ. मोतीदेवी की कुक्षी ऐसे अनन्य असाधारण रत्न को धारण कर धन्य बनी। 'पूत के पाँव पालने में' कहावत के अनुसार आपका नाम 'डाह्यालाल' रखा गया जिसका हिन्दी अर्थ होता है समझदार।

माता-पिता ने बचपन से ही उनमें सुन्दर संस्कारों का आरोपण किया। समय के साथ डाह्याभाई धार्मिक क्रियाएं तथा अध्ययन में प्रगति करते हुए 'दूज केचांद' की भांति बड़े होने लगे।

व्यवहारिक अध्ययन पूर्ण कर वे व्यवसायार्थ बम्बई गये। तथापि धर्म के रंग में रंगे रहे। मोहमयी नगरी की मोहकता से मोहित हुए बिना कल्याण मित्रों के साथ धार्मिक क्रियाओं से निरंतर जुड़े रहे। श्री चिमनलाल पटवा के नेतृत्व में कल्याण मित्रों की मंडली में नवपद ओली, स्वाध्याय, शास्त्र-श्रवण रास-श्रवण आदि अनेक प्रवृत्तियों को अंजाम देते हुए आपके अंतर में संयम के अंकूर प्रस्फूटित होने लगे। विराग जगा और विराग का यह चिराग पूर्ण प्रभा से प्रज्वलित होकर प्रकाशित हो उठा।

दीक्षा के साथ ही आपश्री विनय-वैयावच्च, जप-तप, ज्ञान-

ध्यान आदि प्रवृत्तियों में आकंठ डूब गये। पूज्य गुरूदेवों के सान्निध्य में रह, अल्प समय में ही आपने न्याय, तर्क, व्याकरण तथा आगम शास्त्रों का ज्ञान अर्जित कर निपुणता प्राप्त कर ली। आपश्री की प्रवचन पटुता से आकृर्षित हो, सैकड़ें जीवात्माएं संयम पथ की अनुगामी बनी।

वि.सं. १९९९ आसोज वदी-३ खंभात में आपको गणि-पंन्यास पद एवं वि.संवत् २००७ माघ सुदी १३ सुरत में तत्कालीन गच्छाधिपति आचार्य श्री माणिक्यसागरसूरीश्वरजी महाराज द्वारा आपके गुरूदेव की आचार्य पदवी के प्रसंग पर आपको भी वाचकपद से विभूषित किया गया। विशिष्ट गुणों के धनी होने से वि.संवत् २०१८ वैशाख सुदी १० के शुभदिन उज्जैन (म.प्र.) में गुरूदेव आचार्य श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज के वरद्हस्त स्वयं की इच्छा न होते हुए भी आपको आचार्य पद पर आरूढ़ किया गया।

शासन की बागडोर हाथ में आते ही आपश्री ने अपनी समस्त शक्तियां शासन के कार्यों में समर्पित कर दी। जैन शासन के महत्वपूर्ण कार्यों में आपके समकालीन अन्य आचार्य धुरंदर भी समय-समय पर आपकी सलाह को सागर समुदाय के गच्छाधिपति से अलंकृत किया गया।

पूज्यश्री ने अपने जीवनकाल में श्री शंखेश्वर आगम मंदिर तथा श्री पालीताना जम्बुद्वीप मंदिर आदि ७ मंदिरों की अंजनशलाकाएं तथा २४ मंदिरों की प्रतिष्ठाएं सम्पन्न की। आपने ३१ उपधान तप करवाकर हजारों आत्माओं को जिनमार्ग का पथिक बनाया। पूज्यवर्य नवपद के अखण्ड आराधक थे। १७ वर्ष की छोटी आयु से ८३ वर्ष की प्रौढ़ आयु तक आप सतत आयंबिल तप द्वारा नवपद ओली की अखण्ड आराधना करते रहे। जो जैन समाज के सामने एक आदर्श के रूप में प्रस्थापित हुई। आपके स्वशिष्यों की संख्या कुल १६ थी।

वि.संवत् २०४३ आषाढ़ सुदी- ६ को अहमदाबाद में रात्रि ८.११ मिनिट पर प्रतिक्रमण करते-करते आपने नश्वर देह का त्याग किया। ६७० से अधिक श्रमण-श्रमणियों के निश्रादाता स्वर्ग सिधारे। आपकी अंतिम संस्कार भूमि वीतराग सोसायटी में आपके स्मरणार्थ गुरूमंदिर बनवाया गया है।

जल का मूल्य

ग्रीष्म की भयंकर ज्वाला से प्राणिमात्र सन्तप्त थे। नदी, नालों, सरोवरों, तालों, आदि का जल सुख गया था। वृक्ष तपन से दग्ध थे और जीव-जन्तु आकुल। धरती इन्द्रदेव की कृपा से वंचित थी। ऐसी स्थिति में रोहिणी तट पर शाक्यों और कोलियों में रोहिणी के जल के उपयोग पर विवाद छिड़ गया। विवाद ने गंभीर रूप धारण कर लिया और वह युद्ध में परिणत हो गया। दोनों एक-दूसरे के प्राणों के शत्रु हो गये। उसी समय भगवान बुद्ध ने कपिलवस्तु में रोहिणी के तट पर अपना डेरा डाला था। बुद्ध का समाचार सुन वे वहां गये और उन्होंने प्रश्न किया, किस बात का कलह है आप लोगों में?

रोहिणी के जल का झगड़ा है, भन्ते! दोनों ओर से सम्मिलित उत्तर आया।

भला बताओ तो, जल का क्या मूल्य है? भगवान ने दोनों ओर के सेनापतियों तथा सैनिकों से प्रश्न किया।

कुछ भी नहीं, भन्ते! जल बिना मूल्य के हर स्थान पर अनायास मिल जाता है। उन्होंने दृष्टि नत किये उत्तर दिया-

और क्षत्रियों का क्या मूल्य है। उन्होंने फिर प्रश्न किया?

क्षत्रियों का मूल्य लगाया नहीं जा सकता। वे नितान्त अनमोल है। दोनों पक्षों ने उत्तर दिया।

तो फिर अनमोल क्षत्रियों का रक्त साधारण जल के लिये बहाना क्या उचित है? कभी नहीं झगडेंगे। उत्तर मिला और दोनों में समझौता हो गया।

एक लड़का जंगल में गया हुआ था। चारों ओर सुनसान, उस बियाबान जंगल में हवाओं और पेड़ों के झूमने की ही आवाज आती थी। वह लड़का डरा और चिल्लाया, भूत! तो उसकी आवाज पहाड़ियों से टकराकर लौट आई और उसे सुनाई दिया-भूत! लड़का सचमुच भूत है। अब की बार उसने मुट्ठियां कसी और जोर से चिल्लाया, तू मुझे खाएगा। पहाड़ों से टकराकर उसकी आवाज फिर लौट आई और उसने यही समझा कि भूत मुझसे पूछ रहा है। तब वह बोला, हाँ मैं तुझे खाऊँगा। यही आवाज जब फिर उस तक लौटी तो लड़का डरकर अपने घर चला गया और उसने अपनी माँ से सारी बात कह दी। माँ ने वस्तुस्थिति समझकर कहा, बेटा अबकी बार तुम जंगल में जाओ तो उस भूत से कहना मेरे प्यारे दोस्त मैं तुझे प्रेम करता हूं। दोबारा जब वह जंगल में गया तो चिल्लाया, मेरे अजीज दोस्त। पहाड़ों से उन्हीं शब्दों की प्रतिध्वनि सुनाई दी और लड़के ने समझा, इस बार भूत उसे डरा नहीं रहा है। फिर वह बोला- मैं तुझे प्यार करता हूं। पहाड़ों से यही बात फिर टकराकर लौटी तो लड़का खुशी से नाच उठा। क्रिया की प्रतिक्रिया प्रकृति का एक शाश्वत नियम है।

भविष्यवाणियां, जो सत्य निकली

✽ शिवकुमारजी गोयल

सुविख्यातकार साहित्यकार डॉ. हरिशराय बच्चन ने अपनी आत्मकभा **'क्या भूलूं क्या याद करूं'** में अपने नाना की भविष्यवाणी की सत्य घटना का विस्तार से वर्णन किया है-

बच्चनजी के नाना मुंशी ईश्वरीप्रसादजी इलाहाबाद की कचहरी (न्यायालय)- में सरकारी सेवा में थे। वे परम सात्विक एवं ईश्वर भक्त थे। बच्चनजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है-नानाजी को कचहरी के काम के सिलसिले में दौरे पर भी जाना पड़ता था। उनका सेवक माताभीख उनके साथ जाता था। वहीं उनका खाना भी बनाता था। एक दिन माताभीख ने लौकी की रसेदार सब्जी और पूड़ी बनायी और थाली परोसकर नानाजी के सामने रख दी। नानाजी ने भोजन कर लिया और अपने काम पर बैठ गये। जब माताभीख खाने को बैठा तो पहला कौर मुंह में डालते ही उसने थूक दिया। वह लौकी तितलौकी (कड़्वी) थी, जिसके कारण जायका खराब हो गया था। मुंह में डालते ही कड़्वी लगी, अतः माताभीख हाथ जोड़कर नाना के सामने खड़ा हुआ और बोला- हुजूर, कसूर माफ होय, आज लौकी बड़ी कड़्वी बनी और आप खाय लिहोन! नाना ने कहा- तुम्हारा कोई कसूर नहीं, लौकी के भीतर की बात तुम कैसे जानते? आज मेरे लिये भगवान् का यही हुक्म था। जब मैंने उसका भोग भगवान को लगा दिया तो मैं उसे खुद खाने से कैसे इन्कार करता? **यदन्नः पुरूषो भवति तदन्नः तस्य देवता।**

बच्चनजी लिखते हैं- एक बड़े ज्योतिषी ने एक वर्ष पूर्व नाना की मृत्यु की भविष्यवाणी कर दी थी। उसने घड़ी और तिथि बतला दी थी। देहावसान की भविष्यवाणी सुनकर भी वे चिन्तित नहीं हुए। उन्होंने नाना को आगाह कर दिया था। वे उसी दिन से तरह-तरह के पूजा-व्रत में लग गई। निश्चित दिन भी आ गया। नानी जप करने के लिये आसन पर बैठ गयी। नानाजी ने दैनिक दिनचर्या का पालन किया। कचहरी जाने का समय हुआ तो नानी ने रोका, लेकिन नानाजी ने हंसकर कहा- जिनके साथ जिन्दगीभर काम किया है, उनसे विदा तो ले आऊँ? पूरे दिन काम करके वे घर लौटे। थोड़ी देर बाद उन्होंने छाती में दर्द की शिकायत की और साँस तोड़ दी।

साहित्यकार, वैद्य गुरूदत्तजी की आपबीती- लाहौर में जन्मे सुप्रसिद्ध उपन्यासकार तथा आर्य समाज की विचारक वैद्य गुरूदत्तजी ने अपने जीवनकाल में विपुल साहित्य की रचना की थी। वे अमेठी के राजा रणंजयसिंह के निजी सचिव भी रहे थे। उन्होंने अपनी 'भाग्यचक्र' नामक पुस्तक में अपने संस्मरण दिये हैं।

श्री गुरूदत्तजी उन दिनों अमेठी (उ.प्र.) में राजा के फार्म हाऊस की व्यवस्था देखते थे। वे 'भाग्यचक्र' में लिखते है-सन् 1930 ई. की बात है। एक दिन पास के किसी गाँव का कोई पण्डित फार्म हाउस में आया। मेरा जन्मदिन और समय पूछकर मेरी कुण्डली बनायी और गणना करने के बाद बताया कि- मुझ पर शनि की दशा पड़ी है और यह साढ़े सात वर्ष तक रहेगी। इस काल में धन-जन, मान, प्रतिष्ठा सब में मुझे हानि होगी। आर्य समाजी परिवार के संस्कारों के कारण मैं फलित ज्योतिष में विश्वास नहीं करता था। मैंने उसकी भविष्यवाणी को हंसी में उड़ा दिया, किंतु कुछ ही दिन बाद मेरे सामने संकट आने लगे। साढ़े सात वर्ष तक मैं संकटों से घिरा रहा। मकान से निकाल दिया गया। राजा की नौकरी से हटना पड़ा। 31 दिसंबर सन् 1936 ई. को द्वितीय पुत्र का निधन हो गया। लाहौर लौट आया। जीवनयापन के लिये एक मित्र के साथ ढाबा चलाया, उससे गुजारा नहीं हो पाया। आटा पीसने की चक्की खोली, उसमें भी हानि हुई। शनि की साढ़े साती ने सब कुछ छीन लिया।

देवीभक्त की चेतावनी- 5 जनवरी सन् 1937 ई. को लाहौर में अपनी वैद्य की दुकान पर बैठा हुआ था। एक ब्राह्मण देवता रामनाम की ओढ़नी-ओढ़ेहुए दुकान के बाहर खड़े दिखायी दिये। वे बोले- मैं यह कहने आया हूं कि लाहौर छोड़ दीजिये, यहां आपके लिये सुख-सुविधा नहीं है। शीघ्र ही यहां से अन्यत्र चले जाइये। मैंने कहा- साधन जुटाने पर ऐसा ही करूंगा।

अगले माह फरवरी की 5 तारीख को फिर पण्डितजी आये और बोले- आप अभी तक गये नहीं। मैंने विनम्रता से कहा- नई जगह जाने के लिये साधन चाहिये। मैं साधन बटोरने का प्रयास कर रहा हूं।

अगले 5 मार्च को वे तीसरी बार दुकान पर फिर आये तथा बोले- साधन आपके पास आनेवाला है। अवसर न खोइयेगा। पण्डितजी के लौटने के बाद 9 बजे डाक से पत्र आया। दिल्ली से आनन्दस्वामीजी ने लिखा था। मुझे सरदार जसवन्तसिंह से पता चला है कि आप लाहौर में तंग है और कहीं अन्यत्र जाना चाहते हैं। इधर मैं नईदिल्ली स्थित कनॉट पैलेस पर मद्रास होटल के नीचे दुकान (वैद्यक) करता हूं। मैं यह दुकान छोड़ रहा हूं। यदि आप तुरन्त यहां आ जाए तो मैं यह स्थान आपको दिला सकता हूं।

मैं जैसे-तैसे कुछ रूपयों का जुगाड़ करके दिल्ली जा पहुंचा। उधर शनि की साढ़ेसाती के दिन खत्म हो रहे थे और मुझे मद्रास होटल के नीचे ठिकाना मिल गया। मेरी वेद्यकी की दुकान चल निकली।

वैद्य गुरूदत्तजी ने मुझे बताया था कि यहीं मेरी लेखन में रूचि पैदा हुई। एक उपन्यास लिखा, प्रकाशक ने उसे छापा तथा वह चल निकला। मेरा उत्साह बढ़ने लगा।

मुझे अचानक अमेठी के फार्म हाउस में साढ़े सात वर्ष पूर्व ज्योतिषी द्वारा की गई भविष्यवाणी याद हो आयी। उसकी साढ़े सात वर्ष तक शनि के प्रकोप की बात सत्य लगने लगी। रामनामी दुपट्टा ओढ़े हुए पण्डितजी के तीन बार लाहौर में दुकान पर आकर लाहौर छोड़ देने का आग्रह तथा साधन आ रहे हैं, यह कहना भी याद हो उठा।

साहित्यकार श्री गुरूदत्तजी एक बार कृपाकर हमारे निवास-स्थान पर पधारे थे। पिताजी को उन्होंने ज्योतिषी की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होने की घटना विस्तार से सुनायी थी। उन्होंने बताया 1939 में मैं दिल्ली से कुछ दिन के लिये लाहौर गया तो रामनामकी ओढ़नीवाले पण्डितजी का पता लगाकर उनके निवास-स्थान पर धन्यवाद-ज्ञापन करने पहुंचा। मैं फल लेकर गया था। पण्डितजी अष्टभुजी दुर्गा के विग्रह के समक्ष बैठे पूजा-साधना कर रहे थे। मैंने उन्हें प्रणाम कर फल सामने रख दिये-बोला! आपने तीन बार अनायास ही मेरी दुकान पर आकर लाहौर छोड़ने का आग्रह किया था। आखिरी बार 5 मार्च सन् 1937 ई. को कहा था- 'साधन आनेवाला है, तुरन्त चले जाना। आपके लौटने के कुछ देर बाद ही डाक से पत्र आया। वह साधन ही था। मैं आपके कृपापूर्वक किये गये आग्रह के कारण ही लाहौर छोड़कर दिल्ली पहुंचा। वहां मेरा काम चल निकला है। आपको धन्यवाद देने आया हूं।'

पण्डितजी यह सुनकर बोले- यह कृपा मेरी नहीं, भगवती की थी। उन्होंने मुझे स्वप्न में भरोसा दिया था कि कृष्णा गली के सामने किस्मत का मारा व्यक्ति वैद्यकी कर रहा है। वह सफल नहीं हो रहा था। उससे कहो कि लाहौर छोड़दे। इसलिये भगवती को ही धन्यवाद-ज्ञापन करो, फल उन्हीं के समक्ष भेंट कर दो।

वैद्यजी बताते है-मैं आर्य समाजी होने के नाते भगवती तथा मूर्तिपूजा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, किंतु स्वयं की आंखों-देखे इस चमत्कार को भला कैसे नकारता? मेरे हाथ बरबस भगवती के सामने झुक गये।

गुरूदत्तजी ने पिताजी को बताया कि- दिल्ली में सन् 1938 ई. में एक बार एक मद्रासी सज्जन श्री विजयराघवाचार्यजी, जो सेवानिवृत्त पोस्टमास्टर जनरल थे। मुझसे औषधि लेने आये। उन्होंने मेरे मस्तक की रेखाओं को गौर से देखा तथा बोले- मैंने तंत्रविद्या का गहन अध्ययन किया है। स्वयं उसकी साधना एवं अभ्यास किया है। आपके मस्तिष्क की रेखा देखकर मैं कह सकता हूं कि सरस्वती की माया छिपी हुई है। उसे प्रकट करने का उपाय आपको बताता हूं। श्री विजयराघवाचार्यजी ने एक कागज पर लक्ष्मी-सरस्वती का आवाहन-मन्त्र लिखा-

**या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता वसतु मम गृहे सर्वमांगल्यपयुक्ता।।**

इस आव्हान-मन्त्र के साथ उन्होंने मन्त्र लिखा-

ओं श्री ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै सकल सौभाग्यं मे देहि स्वाहा।। और कहा, इसका प्रतिदिन जप किया करो। उन्होंने बताया। श्रींका अर्थ है लक्ष्मी, ह्रींका अभिप्राय दुर्गा और क्लींका अभिप्राय है सरस्वती। आवाहन में कहा गया है- परमात्मा! ये तीनों विभूतियाँ मुझे प्राप्त हों।

मैंने जप शुरू किया तथा दिनोंदिन लेखन में मुझे सफलता मिलने लगी।

वैद्य गुरूदत्तजी ने पिताजी को यह भी बताया कि- एक बार सन् 1921 ई. में परलोकगत आत्मा के माध्यम के द्वारा यह भी भविष्यवाणी कर दी थी कि- हमारी माताजी का निधन सात वर्ष बाद अगस्त 1928 ई. में होगा। मैंने यह अपनी डायरी (दैनन्दिनी)- में लिखा था और वास्तव में सात वर्ष बाद अगस्त में ही अचानक वे परलोक सिधार गयी।

✽ एक भक्त- यदि ईश्वर ही सब कुछ करते हैं तो फिर लोग भला और बुरा, पाप और पुण्य, यह सब क्यों कहते हैं? तब तो पाप भी उनकी ही इच्छा से होता होगा? श्री रामकृष्ण परमहंस- ''पाप और पुण्य हैं, पर वे स्वयं निर्लिप्त हैं। वायु में सुगंध भी है, दुर्गंध भी, परन्तु वायु स्वयं निर्लिप्त है। ईश्वर की सृष्टि ऐसी ही है। भला-बुरा, सत और असत, दोनों यहां है, जैसे पेड़ों में कोई आम का पेड़ है, कोई कटहल का, कोई किसी और चीज का। देखो न! दुष्ट आदमियों की भी आवश्यकता पड़ती है। जिस तालुके की प्रजा उद्दंड होती है, वहां एक दुष्ट आदमी भेजना पड़ता है, तब कहीं तालुका ठीक से चल पाता है।''

जैन धर्म व श्रावक जीवन...!

श्रावक यानी जिनका जीवन श्रेष्ठ हो, श्रद्धा, विवेक, क्रिया से युक्त जिनका विचार व आचरण हो उन्हें श्रावक माना गया है। जिनेश्वर की आज्ञा में श्रद्धा व तद्‌नुरूप विवेकपूर्वक जो क्रिया करता हो वही श्रावक है। श्रावक का जीवन सहज ही धर्ममय होता है। सादगी, सदाचार, सेवा समता, समन्वय एवं सहिष्णुता जैसे गुणों से ओत-प्रोत जीवन जीनेवाला व्यक्ति जैन धर्म की दृष्टि में श्रावक है। वर्तमान में प्रायः हमारे जीवन में अधिकतर व्याप्त है चंचलता, असंतोष, महत्वाकांक्षा, अहंकार एवं इन्द्रिय लोलुपता आदि इनसे छुटकारा पाकर ही श्रावक जीवन में प्रवेश पाया जा सकता है। क्रोधादि कषाय आत्मा के शत्रु है वैसे ही आवेश व उत्तेजना होगी तो विवेक का संतुलन डगमगा जायेगा, अतः सर्वप्रथम जीवन को स्वच्छ व स्थिर बनाना चाहिये तभी लक्ष्य की और प्रयाण संभव है। आत्मा का अनुसंधान ही श्रावक का परम पुरूषार्थ है, आत्मा की अनुभूति में ही परम आनंद है।

आत्मा स्वभाव से शुद्ध दर्पण स्वरूप है, जो मात्र चैतन्य, ज्ञाता व दृष्टा है। आत्मा अरूपी है, हवा की तरह जो केवल अनुभवगम्य है। आत्मा के अभाव में शरीर मिट्टी के समान है, अतः आत्मा के अस्तित्व का ही मूल्य है, यद्यपि आत्मा देखी नहीं जा सकती वह दूध में मक्खन की तरह विद्यमान है, जिस प्रकार शरीर में रहा हुआ दर्द देखा नहीं जाता, मात्र महसूस किया जा सकता है। बिजली के तार में रहने वाला करन्ट दिखाई नहीं देता परन्तु उपयोग में लाया जा सकता है, ठीक इसी तरह आत्मा दिखाई नहीं देती परन्तु वही शरीर की चेतना है, उसी चेतन शक्ति को कर्म रूपी पुद्‌गल के संयोग से मुक्त करना ही आत्म अनुसंधान का अंतिम लक्ष्य है। आत्मा अंतरंग का दीपक है, जिससे ज्ञान रूपी अखण्ड बत्ती है जिसे मात्र पुरूषार्थ से प्रज्वलित किया जा सकता है, यही हमें करना है। जब प्रकाश हो जायेगा अज्ञारूपी अंधकार स्वतः समाप्त हो जायेगा।

जगत में पुण्य व पाप रूपी द्रव्य निरंतर कार्य करते है जो पौदगलिक क्रिया हे जिसमें मन व इन्द्रियां तब तक प्रभावित होती रहती है जब तक आत्मा का उपयोग मन के माध्यम से बहिर्मुखी होता है। आत्मा और शरीर के बीच मनरूपी बर्तन है, जैसे बर्तन में रखा पानी अग्नि पर रखने से गर्म हो जाता है जबकि पानी का स्वभाव शीतलता है। यदि बीच में बर्तन न हो तो वही पानी गर्म होने के बजाय अग्नि को ठंडा कर दे। इसी प्रकार आत्मा व शरीर के बीच मन की चंचलता न हो तो आत्मा अपने स्वभाव में स्थिर होकर शाश्वत सुख शांति का अनुभव कर सकती है। परमात्मा आत्मा का ही विशुद्ध रूप है, परमात्मा की भक्ति स्वयं की आत्म शक्ति को प्रकट करने हेतु ही की जाती है। इसलिये जब ध्यान करना हो तो जगत में जीवों का ध्यान, मंदिर में परमात्मा का ध्यान व एकान्त में आत्मा का ध्यान करना चाहिये।

यदि कोई परमात्मा के ध्यान में लीन होकर परमात्म स्वरूप का चिंतन करता है व परमात्मा से जानने का प्रयास करता है व पूछता है कि प्रभु मैं तो आपका ध्यान करता हूं, परन्तु आप किसका ध्यान कर रहे है? तब परमात्मा करूणावश कहते है- मैं जगत के जीवों का, उनके पर्याय का नहीं, बल्कि जात का, मूल द्रव्य स्वरूप का जो तेरा मेरा एक समान है, मात्र विभावदशा के आवरण से तेरी अशुद्ध स्थिति बनी हुई है। जैसे खान में सोना व पत्थर एक साथ रहते हुए भी एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न है, यदि सोना एक बार शुद्ध कर दिया जाये तो सदा के लिये शुद्ध ही रहेगा, वैसे ही आत्मा यदि सहज स्वरूप को प्राप्त हो जाये तो सदा के लिये विभावदशा से मुक्त होकर अपने स्वभाव में स्थिर हो जायेगी। यही आत्मा का स्वभाव धर्म है, यही शुद्ध आत्मा परमात्मा है।

जैन धर्म का मूल सर्वज्ञ है, सर्वज्ञ प्ररूपित धर्म व वस्तु स्वभाव का यथार्थ श्रद्धान करना ही परम पुरूषार्थ है, जो आत्म सिद्धि का हेतु है। सभी जीव जाति, स्वरूप व स्वभाव से एक समान है, परमात्म स्वरूप ही है, मात्र जड़ व चेतन का भेद ज्ञान होना व शुद्ध स्वरूप को पहचानना है, यही तत्व का सार है। यह भाव जागृत होना चाहिये कि मैं और मेरी आत्मा ही सदा शाश्वत है, जैसा कि व्यावहारिक भाषा में भी कहा जाता है- 'मेरा सो जावे नहीं, जावे सो मेरा नहीं' अतः आत्मा से परे जो कुछ भी है सभी पर पदार्थ है। व्यवहारिक क्षेत्र में धर्म वही है जो आत्मशांति व मन की प्रसन्नता प्रदान करें। जगत के व्यवहार में धर्म, लोकाचरण का सही मार्ग-दर्शक है, जो सदा सहिष्णुता एवं सहानुभूति का सही पाठ पढ़ाता है जिससे सभी जीवों के साथ मैत्री एवं करूणा की भावना बनी रहे, इसी में सभी की प्रसन्नता निहित है।

ज्ञानी कहते है-जगत का परिचय सभी के लिये क्षणिक है, जगत जैसे चलता है चलता रहेगा, जगत के काम कभी कम न होंगे, मगर अफसोस तो यह होता है कि आखिर हम नहीं होंगे। जगत का संचालन निश्चित, नियमित क्रमबद्ध व्यवस्था में अरोपित है जो स्वयंमेव सदा गतिशील रहता है तथा नियमित

क्रम से जगत का वर्तमान भविष्य जो निश्चित है। जैसा सर्वज्ञ ने देखा है, वैसे ही होता है व होता रहेगा। जगत में द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव तद् नुरूप वस्तु स्वभाव, निमित्त, पुरूषार्थ, काल लब्धि व भवितव्यता (होनहार) स्वयंमेव पांचों समवाय क्रमबद्ध, व्यवस्था के अंतर्गत एकसाथ समाविष्ट हो जाते है, यही क्रमबद्ध पर्याय का शाश्वत सिद्धांत है जो प्रत्येक कार्य व कारण का मूलभूत आधार है। हमें यह जानना व मानना आवश्यक है कि कर्म का संयोग ही आत्मा के लिये संसार में परिभ्रमण का कारण है, संयोग में ही संसार के सुख-दुःख निहित है जहां एक से अधिक वहां संघर्ष, आत्मा कर्म के संयोग से ही संसार में सुख-दुःख अनुभव करता है। कर्म सत्ता प्रवृत्ति के नियमानुसार निश्चित न्याय करती है व यथावत फ ल देती है, सजा हो या मजा, सभी कर्माधीन है इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

सुख दियो सुख होत है, दुःख दीयो दुःख होय।
आप न हणे ओरन को, अपन हणे न कोय।।

भलाई की दीवार

✻ नमिरत्नसागर म.

सोचा इस पर कुछ लिखूं! आजकल समाचार पत्रों में पढ़कर इस पर कुछ चिंतन किया कि जगह-जगह गांवों में 'भलाई की दीवार' का शुभारंभ हुआ। तो क्यों न हम भी इस शुभकार्य रूपी हवन में अपनी भी कुछ आहुति दें। समाजजनों, बुद्धिजीवों एवं धर्मीजनों से आग्रह करूंगा कि वे भी इस कार्य में सहयोग दें। अपने नये-पुराने वस्त्र, बच्चों के खिलौने, पुरानी पड़ी सायकिलें, बच्चों के वाकर, पुस्तकें, क्राकरी, बर्तन, श्रृंगार की सामग्री, लेखन सामग्री, ड्राइंग बाक्स, कम्पास, बिजली का अनुपयोगी सामान, जिसका हम उपयोग कर चुके है और हमने नये-नये आयटम घर में बसा लिये है तो उन पुराने सामान को उस 'भलाई की दीवार' के यहां लाकर रख दें जिनको जरूरत होगी वे जायेंगे इससे उनके और बच्चों के जीवन में खुशियां आयेगी। बच्चों को खिलौने वस्त्र आदि मिल जायेंगे तो वो भी खुश होंगे, उनके जीवन में खुशी आयेगी, अन्य भी लोग इस कार्य की अनुमोदना करेंगे। अतः आप शीघ्र ही इस नेक काम को शीघ्रातिशीघ्र शुरू कर दें। ऐसी मेरी भावना है, क्या आप इस शुभ कार्य में भागीदार नहीं बनेंगे? धर्मलाभ!

वृत्ति, बुद्धि, विवेक

विवेक, बुद्धि और वृत्ति- इन्हीं तीनों के इर्द-गिर्द मनुष्य की समग्र चेतना घूमती है। इन्हीं तीनों से उसकी दशा और दिशा बदलती है, परिवर्तित होती है। विवेक मानव चेतना की श्रेष्ठतम भावदशा में अंकुरित एवं विकसित होता है। इसे यों भी कह सकते हैं कि- विवेक के अंकुरण से मानव चेतना अपनी श्रेष्ठतम अवस्था में पहुंच जाती है, जबकि बुद्धि मानव चेतना की मध्यवर्ती दशा है। इन दोनों से अलग वृत्ति मानव चेतना की निम्नतम अवस्था का प्रमाण है। निश्चित रूप से वृत्ति पाशविक है, बुद्धि मानवीय है और विवेक दिव्य है। वृत्ति सहज और अंधी है, इसे चेतना की सुप्तावस्था भी कह सकते हैं। यह अचेतन का जगत है। यहां न शुभ है, न अशुभ। न तो भेद है और न विकास के लिये कोई संघर्ष। यहां तो बस, वासनाओं की अंधी-अंधेरी आँधियाँ है। जबकि बुद्धि में न निंद्रा है और न जागरण है। यहां अर्द्धमूर्च्छा है। यहां वृत्ति और विवेक के बीच संक्रमण है। यह देहरी है। इसमें चैतन्यता का एक अंश है, लेकिन बाकी हिस्से में गहरी अचेतनता है। यहां शुभ और अशुभ का भेद है, वासना के साथ विचार भी विद्यमान है। विवेक मानव चेतना की पूर्ण जाग्रत अवस्था है। यहां शुद्ध चैतन्यता है, यहां केवल प्रकाश है, यहां भी कोई संघर्ष नहीं है। बस, शुभ का, सत का, सौंदर्य का सहज प्रवाह है। यहां बड़ी ही सजग सहजता है। सहज वृत्ति भी है और विवेक भी, परन्तु वृत्ति में अंधी सहजता है और विवेक में सजग सहजता। केवल बुद्धि भर असहज है। इसमें पीछे की ओर वृत्ति है और आगे की ओर विवेक है। उसके शिखर की लौ विवेक की ओर है, लेकिन आधार की जड़ें वृत्ति में है। शिखर कुछ,तलहटी कुछ,यही खिचाव है। पशु में डूबने का आकर्षण-परमात्मा में उठने की चुनौती, उसमें दोनों एक साथ है। उपाय एक ही है- बुद्धि का विवेक में परिवर्तन। वृत्ति का बुद्धि के संक्रमण पथ से गुजरते हुए विवेक में रूपांतरण। इसके लिये अंधेरे में दीया जलाना होगा, मूर्च्छा छोड़नी होगी। तभी वृत्ति की पाशविकता एवं बुद्धि की मानवीयता विवेक की दिव्यता में रूपांतरित हो सकेगी।

असफलता

असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो।
जो कमी रह गई है, देखो और सुधार करो ।।
सफलता तक मैदान न छोड़ भागो तुम।
कुछ किये बिना जय-जयकार नहीं होती।
कोशिश करनेवाले की कभी हार नहीं होती।।

श्री सिद्धचक्र महापूजन

आजकल अनेकविधि नये-नये पूजन पढ़ाये जाते है, मगर प्राचीनकाल में मुख्यतः श्री सिद्धचक्र महापूजन और श्री अष्टेत्तरी वृहत् शांतिस्त्रात ही पढ़ाये जाते थे। विविध महापूजनों की विधि करनेवाले विधिकारक आज अनेक है मगर जिनका श्री सिद्धचक्र महापूजन एकबार ध्यानपूर्वक देखने-सुनने के बाद आजीवन याद रह जाय ऐसे बेजोड़ विधिकार श्राद्धवर्य श्री हीरालालभाई मणिलालभाई शाह (उ.व. 72 करीब) भी नवकार सामायिक एवं मैत्रीभावना की महिमा को जैन संघ में विशिष्ट रूप से फैलानेवाले प.पू.पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकर विजयजी म.सा. के एक विशिष्ट कृपापात्र सुश्रावक है।

हर रोज श्री सिद्धचक्र पूजन करनेवाले, प्रतिदिन कम से कम बिआसन का पच्चक्खाण करनेवाले, करीब 4 बिगइयों के त्यागी, श्रीमंत होते हुए भी सादगी प्रिय, उभयकाल प्रतिक्रमण आदि श्रावक के आचारों का अच्छी तरह से पालन करनेवाले श्री हीराभाई कई वर्षों से अहमदाबाद में भी गिरधरनगर श्वे.मू.पू. तपागच्छ जैन संघ के अध्यक्ष के रूप में संघ का संचालन सुचारू रूप से करते हुए लोगों के अत्यंत आदर के पात्र बने हुए हैं।

जिनभक्ति और जीवमैत्री यह दो, संसार सागर को तैरने के लिए अद्भूत तुम्बे (काष्ठपात्र) है, यह उनके वार्तालाप एवं आचरण का मुख्य विषय होता है।

बीमार साधु-साध्वीजी भगवंतों की वैचावच्च के लिये उन्होंने अपना एक मकान अलग ही रखा है और उसमें प्रायः हमेशा किसी भी समुदाय के बीमार साध्वीजी भगवंतों को विज्ञप्ति पूर्वक स्थिरता करवाकर उनकी अनुमोदनीय वैयावच्च करते करवाते है।

गच्छ या समुदाय के भेदभाव बिना वे हरेक साधु-साध्वीजी भगवंतों की सुंदर भक्ति करते हैं। हीरालालभाई के विशिष्ट नेतृत्व से श्री गिरधरनगर संघ में अत्यंत ऐक्य भावना है। मतभेद या मनभेद का नामोनिशान नहीं है।

वि.सं. 2051 में गच्छाधिपति प.पू.आ.भ.श्री विजय जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.आदि मुनिवर एवं जिनको भी शास्त्राभ्यास करना हो ऐसे अलग-अलग साध्वी समूह के करीब 125 जितने साध्वीजी भगवंतों का चार्तुमास गिरधरनगर श्री संघ ने करवाया था, तब विद्वान पू.गणिवर्य श्री अभयशेखर विजयजी म.सा. तीन घंटे तक अलग-अलग तीन विषयों का सुन्दर अध्ययन करवाते थे।

गिरधरनगर से शंखेश्वरजी महातीर्थ एवं गिरनारजी महातीर्थ के छःरीपालक संघ भी निकले थे। प्रायः प्रत्येक चार्तुमास में अत्यंत अनुमोदनीय आराधनाएं श्री गिरधरनगर संघ में होती है। किसी भी जैन साधु-साध्वीजी भगवंत की निःशुल्क चिकित्सा करने की शर्त से वहां की चत्रभुज हॉस्पीटल में गिरधरनगर जैन संघ ने 11 लाख रूपये प्रदान किये है। यह सब मुख्यतः यथा राजा तथा प्रजा, उक्ति के अनुसार संघ प्रमुख श्राद्धवर्य श्री हीरालालभाई की विशिष्ट धर्मभावना, मैत्रीभावना और व्यवहार कुशलता का परिणाम है।

धर्मचर्चा के दौरान वे अपने परम उपकारी गुरूदेव श्री पन्यासजी महाराज को अत्यंत बहुमान पूर्वक बार-बार याद करते हैं।

अगर प्रत्येक संघों में हीरालालभाई जैसे धर्मनिष्ठ कुशल सुश्रावकों का नेतृत्व संप्राप्त हो जाय तो जिनशासन का कितना जय जयकार हो जाय!!!

हीरालालभाई के ज्येष्ठ सुपुत्र सुरेशभाई नारणपूरा चार रस्ता जैन मंदिर के सामने रहते हैं। वहां संघ में जो आयंबिलखाता है उसका संपूर्ण आर्थिक सहयोग सुरशभाई की ओर से होता है, इतना ही नहीं किन्तु आयंबिल के तपस्वियों की भक्ति वे स्वयं करते हैं।

ऐसे विशिष्ट श्राद्धवर्यों को तैयार करनेवाले प.पू.पंन्यासजी महाराज को अनंतशः वंदन एवं श्राद्धवर्य श्री हीरालालभाई की आराधना की हार्दिक अनुमोदना।

पता- विधिकारक श्री हीरालालभाई मणिलालभाई शाह, 77, गिरधरनगर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380004 (गुज.)

महात्मा गांधी के जीवन की एक घटना है। एक बार एक परिषद् की कार्यवाही आरंभ करने में उन्हें 45 मिनट की प्रतीक्षा करनी पड़ी। कारण था एक अन्य नेताजी, जिन्हें कार्यक्रम की अध्यक्षता करनी थी, उनका देरी से आना। उनके मंच पर आते ही गांधीजी कह उठे-यदि हमारे अग्रगामी नेतागणों की यही स्थिति रही तो स्वराज्य भी 45 मिनट देरी से आएगा। समय के पाबंद, कर्त्तव्यनिष्ठ बापू की यह अभिव्यक्ति उनके अंतःकरण से सहज ही स्फुरित हुई थी।

वर्ग पहेली क्रमांक-266

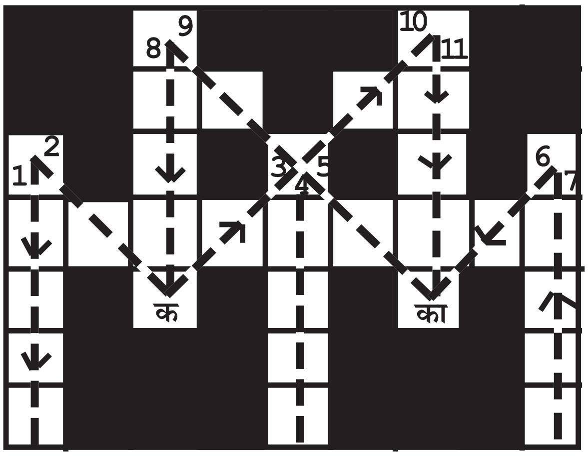

1- भरहेसर में जिसका नाम है ऐसी सती के पति का नाम (5)
2- शकटाल मंत्री के पूर्वज (3)
3- सुवर्ण का पर्यायवाची शब्द (3)
4- प्रभुवीर जहां पधारे थे उस आश्रम का नाम (5)
5- कमल का एक अंग (3)
6- देव-देवी का स्थान (3)
7- जहां तीन लोक में होनेवाली चीजें मिलती है, वह स्थान (5)
8- राजगृही का भयंकर पशु-घातक (5)
9- बहन की रक्षा के लिये शुद्ध करने वाले युगप्रधानाचार्य(3)
10- परमात्मा का उद्‌भूत स्वागत करने वाला पिता का घातक (3)
11- बरह व्रत धारण करनेवाली श्राविका (5)

✲ बालक जरथुस्त्र बड़े दयालु और जनसेवक थे। अपने गोदाम में भूसा निकालकर दूसरे भूखे पशुओं को खिला देते थे। जब घर में चारा न होता, तो जंगल से लाकर असहाय पशुओं को खिलाते। एक बार रास्ते से जाते हुए जरथुस्त्र ने देखा कि कोई उदार व्यक्ति गरीबों को आटा बांट रहा है। भीड़ अधिक होने से प्रबंध नहीं हो पा रहा है। जरथुस्त्र दौड़कर गए और उनकी मदद करने लगे। निवृत्त होने पर उस व्यक्ति ने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा- बड़े अच्छे बालक हो। जरथुस्त्र ने विनम्रता से उत्तर दिया-आप एक परोपकारी व्यक्ति है। मेरे लिये यही बहुत बड़ा परिचय है। आपको आटा बांटते देखकर मुझे ऐसा लगा जैसे आप हमारे स्वर्ग के साथी हैं और भूमि पर दीनों और असहायों की सहायता करने आए हैं। उस परोपकारी ने जरथुस्त्र में एक श्रेष्ठ आत्मा के दर्शन किये और आगे चलकर उनकी सेवा-साधना और लोकमंगल के कार्यों में बड़ा सहयोगी हुआ।

वर्ग पहेली क्रमांक-265 का परिणाम

1- सिद्धगिरी, 2- कंचनगिरी, 3- अचलगिरी 4- अभद्रकंद, 5- अजरामर, 6- अभयगिरी 7-शाश्वगिरी, 8- हेमगिरी 9- भद्रकर, 10- महागिरी, 11- विजयभद्र, 12- महानंद, 13- सिद्धराज, 14- सुरगिरी, 15- सुभद्र, 16- विमलाचलागिरी, 17- महाबलगिरी, 18- विशाल 19- कदबगिरी, 20- सिद्धराज, 21-गिरीराज।

राजा के यहां चोरी हुई तो ऋषि मांडव्य के आश्रम में छिपे डाकू पकड़े गए। डाकुओं के साथ राज्य अधिकारी आश्रय दिये जाने के अपराध में ऋषि को भी पकड़कर ले गए। न्यायालय में वहां के नियम के अनुसार सभी को सूली पर चढ़ाने का दंड मिला। अन्य ऋषियों ने राजा के दरबार में आकर मांडव्य की निर्दोषिता बताई। राजा ने फांसी तुरन्त रूकवा दी और तख्ते से नीचे उतार लिया गया। तब तक उन्हें काफी शारीरिक, मानसिक यातना मिल चुकी थी। राजा ने क्षमा मांगी। मांडव्य ने कहा- 'जब मैं सूली पर था, तब ध्यान में जाकर देखा- पूर्व जन्म में मैंने अनेक पशु-पक्षियों को सताया था। उसी के कारण भारी यातनाओं के साथ मरना मेरे विधान में लिखा था, पर मेरी इस जन्म की तपश्चर्या और सेवा ने उन कष्टों को घटा दिया। पूर्णतः शमन तो किसी पापकर्म का नहीं हो सकता। आप परेशान न हों। जितना भुगतना था, उतना मैंने भुगत लिया।

तप से, सेवा से कर्मबंधन शिथिल किए जा सकते हैं। कर्मों के फल से कोई बच नहीं सकता।

सूचना- **अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशःतीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रूपये 31/-, 21/-, 11/-एम.ओ.भेजें जावेंगे। सही उत्तर वाले नाम हम छांपेगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।**

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-266

✻ पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

हमें पहचानो तो जाने !

1- मैं डाकू था लेकिन गुरूदेव से 4 नियम लेकर बारहवें देवलोक में गया।

2- मैं स्वर्ण की पौषधशाला बनाने के लिये तैयार था पर चोरों के भय से चूने में केशर मिलाकर पौषधशाला बनवायी।

3- पूर्व भव में मैं हरिणगमेषी देव था, भगवान के गर्भ का परिवर्तन मैंने किया था।

4- मैं पूर्वभव में प्रतिदिन पुंडरिक-कंडरिक अध्ययन का 500 बार स्वाध्याय करता था।

5- मुझे खरीदने के लिए श्रेणिकराजा अपना राज्य देने को तैयार थे।

6- प्रभु भक्ति को अखंड रखने के लिये मैंने अपने शरीर की नस को काटकर वीणा का तार बनाया।

7- मैंने 18 करोड़ 53 लाख रूपये खर्च करके देलवाड़ा में मंदिर बनवाया।

8- शुद्ध भावों से दान देते-देते मैंने तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन किया।

9- मैं तो चारित्र में अस्थिर हो गया था पर भगवान महावीर ने मुझे पुनः चारित्र में दृढ़ किया।

10-मैंने शादी के प्रथम दिन ही भाई का मजाक से चारित्र ले लिया।

✻ एक था कुत्ता, सड़ गए थे कान जिसके। कई दरवाजों में घूमा, जहां भी गया वहां दुतकारा गया। वह दिन भर घूमा रोटी के लिये, कौर मिले दो, मार और फटकार का कोई ठिकाना नहीं था। इंद्रियों की लिप्सा में दर-दर भटकता हुआ अज्ञानी व्यक्ति भी इसी प्रकार सर्वत्र तिरस्कार पाता है। एक था हाथी, जंगल में मस्त घूमा करता था, न कोई अभाव था, न दुःख। एक दिन एक हाथिनी की आसक्ति में आ गया। वासना-भूत हाथी को हथिनी उधर ले गई, जहां शिकारी जाल बिछाए बैठे थे। हाथी पकड़ लिया। न रही मस्ती, न रहा वह मुक्त आनंद। वासना में फँसा अज्ञानी मनुष्य भी उसी प्रकार अपने शाश्वत आनंद से भटककर दुःखों के जाल में जा गिरता है। एक था कछुआ, कुछ शिकारियों ने उसे दूर से देखा और आक्रमण के लिए दौड़े। कछुआ समझदार था, ज्ञानी था अंग-प्रत्यंगों को समेटकर खाल के भीतर छिपा रहा। शिकारी इधर-उधर ढूंढते ही रहे। कछुए की तरह जो ज्ञानी जग बाहरी मोह और आकर्षणों से बचकर आत्मा का अनुसरण करते हैं, उनकी सब प्रकार रक्षा होती है।

वर्गपहेली क्रमांक-265 के विजेता

विजेता :-

1-शाहु दिलीपकुमार, नवसारी (गुज.) - प्रथम
2-समरथमल हवेलीवाला,मंदसौर (म.प्र.) - द्वितीय
3-प्रेक्षा धारीवाल,शुजालपुरसिटी (म.प्र.)- तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

जवाहरलाल जैन, उज्जैन, प्रीति जैन, रतलाम, स्नेहलता जैन, मंदसौर, शान्ता पोरवाल, उज्जैन कला मेहता, रतलाम, चंदनबाला जैन, उज्जैन श्रीमती सुधा धारीवाल, देवास, मोहनबाई डावड़ा, प्रतापगढ़, श्रीमती मंजुबाला, फाफरिया, नलखेड़ा, श्रीमती शशि भाण्डावत, शाजापुर, श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास, श्रीमती कुसुम गौतम जैन, आगर, प्रीयांशी जैन, नरवर झाला कि, अर्हम् जैन, मंदसौर, प्रीति हिंगड़, नरवर झाला कि, श्रीमती प्रभा जैन, देवास, सुशीला चौरड़िया, झारड़ा, प्रश्य मनोज हरडे, महेसना, पायल तड़वेचा, प्रतापगढ़।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-265 के परिणाम

सही उत्तर-

1-हाँ, 2- हाँ, 3- नहीं, 4- नहीं, 5- नहीं, 6- हाँ, 7- नहीं, 8- हाँ, 9- नहीं, 10-नहीं।

विजेता :-

1-स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) - प्रथम
2-शान्ता पोरवाल, उज्जैन (म.प्र.) - द्वितीय
3-प्रीति जैन, रतलाम (म.प्र.) - तृतीय

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डाले।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-2-2017 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी।

- सम्पादक

✱ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोध्दारक भविष्य फल फरवरी-2017

मेष :- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, धनलाभ के अवसर प्राप्त होंगे, उच्च अधिकारियों का बेहतर सहयोग मिलेगा परन्तु स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं उभर सकती है, विद्यार्थी वर्ग को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,2,9,10,18,19,20,28 ।

वृषभ :- आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, व्यापारिक प्रगति तो बेहतर रहेगी, परन्तु क्रोध की अधिकता बनते कार्य बिगाड़ सकती है, भौतिक सुख सुविधा पर व्यय की अधिकता रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय है।

महत्वपूर्ण तिथि- 3,4,11,12,13,21,22 ।

मिथुनः-आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, लाभ हेतु परिश्रम की अधिकता रहेगी, व्ययों की अधिकता भी परेशानी का कारण बन सकती है, परिवार में तनाव की स्थिति संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये प्रतिकूल समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 6,14,15,23,24,25 ।

कर्कः- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, आर्थिक मामलों में सतर्क रहने की आवश्यकता है, किसी प्रकार का नया निवेश सोच विचार कर करें, विद्यार्थी वर्ग को बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि- 7,8,16,17,18,26,27 ।

सिंहः-आपके लिये यह माह सामान्य फलदायक रहेगा, आर्थिक मामलों में सतर्क रहने की आवश्यकता है, किसी प्रकार का नया निवेश सोच विचार कर करें, विद्यार्थी वर्ग को बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि-1,2,9,10,18,19,20,28 ।

कन्याः-आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, व्यापार से बेहतर लाभ रहेगा, उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा, उच्च मनोबल से कार्य में सफलता मिलेगी, विद्यार्थीवर्ग को सफलता प्राप्त होगी।

महवपूर्ण तिथि-।3,4,11,18,20,27 ।

तुलाः-आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, लाभ की स्थिति बेहतर रहेगी, मित्रों का सहयोग मनोबल में वृद्धि करेगा, इस समय दूर स्थानों की यात्रा टालना बेहतर रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि-5,6,14,15,23,24,25 ।

वृश्चिकः- आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, व्यापार से अच्छा लाभ रहेगा, नये निवेश की योजना फलीभूत होगी, परिवार में कोई मंगल कार्य संभावित है, विद्यार्थी वर्ग को कार्य के अवसर प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि-7,8,16,17,18,26,27।

धनुः-आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, आते हुए लाभ में बाधा आ सकती है, प्रतियोगी हानि देने का प्रयास कर सकते है, किसी प्रकार का ऋण आदि भी संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय है।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,2,9,10,18,28 ।

मकरः-आपके लिये माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापार में बेहतर लाभ रहेगा परन्तु प्रतियोगी मानक्क परेशानी का कारण बन सकते है, मित्रों का सहयोग मनोबल वृद्धि देगा, विद्यार्थी वर्ग को शुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि-3,4,11,12,13,21,22 ।

कुम्भ :- आपके लिये माह सामान्य रहेगा, व्यापार से सामान्य लाभ होगा परन्तु व्ययों की अधिकता रहेगी, स्वास्थ्य संबंधी समस्या परेशानी का कारण बन सकती है, विद्यार्थी वर्ग के लिये किसी प्रकार का परिवर्तन संभावित है।

महत्वपूर्ण तिथि- 5,6,14,15,23,24,25 ।

मीनः-आपके लिये यह माह शुभ फलदायक रहेगा, व्यापार में अधूरे कार्य पूर्ण होंगे तथा नयी योजना भी कार्यान्वित होगी, अधिकारी वर्ग से संपर्क मान सम्मान में वृद्धि करेंगे, विद्यार्थी वर्ग को शुभ परिणाम मिलेंगे।

महत्वपूर्ण तिथि-7,8,16,17,18,26,27 ।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

जीरावला में जाजम चढ़ावे, शंखेश्वर में दीक्षा महोत्सव और जीरावला में प्रतिष्ठा के बाद युवा जैनाचार्य मालवा में पधारेंगे, बड़ोद में पहला कार्यक्रम होगा

*** जीरावला में जाजम खूब जमी, अच्छे चढ़ावे हुए।**
*** 18 जनवरी को श्री शंखेश्वर में संयम महोत्सव का रंग जमा।**
*** 6 फरवरी को जीरावला में प्रतिष्ठा में निश्रा रहेगी।**
*** मालवा की ओर विहार, मालवा में चार्तुमास होगा।**
*** 28 जनवरी को वरमाण तीर्थ में महामांगलिक हुई।**

शंखेश्वर- पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के देवलोक के बाद आपश्री के सुशिष्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. ने गुरू पम्परा को जीवित रखते हुए सभी गुरूभाई शिष्य-प्रशिष्य परिवार को एक साथ रखते हुए श्री शंखेश्वर महातीर्थ में यशस्वी चार्तुमास उपधान तप में गुरूदेव की कमी होते हुए भी आपका एहसास न हो यह ध्यान में रखते हुए शासन प्रभावना को नई ऊंचाईयां प्रदान करी, यह बहुत ही अनुमोदनीय है। उपधान माल होने के तुरन्त बाद आपका विहार श्री जीरावला महातीर्थ के लिये हुआ। जहां अनेक शासन प्रभावक आचार्य भगवंतों की निश्रा में प्रतिष्ठा की जाजम का आयोजन हुआ। यहां अपने गुरू की अनुपस्थिति के बाद भी सागर समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हुए समुदाय और गुरू की गरिमा को सम्मानित तरीके से आगे बढ़ाया। यहां से आपश्री का पुनः आगमन श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ आगम मंदिर में हुआ जहां 18 जनवरी को पूज्यपाद आचार्य श्री हेमप्रभसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की मंगल निश्रा में 16 से 18 जनवरी तक संयम महोत्सव का आयोजन किया गया। 18 जनवरी को भाई पंकजजी गांधी तथा संयम की दीक्षा क्रिया विधि बहुत ही उत्साह और उमंग के साथ ठसाठस भरे हाल में हुई। इसके पूर्व मुंबई में भी त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन गांधी परिवार के द्वारा मुंबई के ईलो जैन उपाश्रय में मनाया गया। श्री पंकजभाई गांधी और श्राविका अलका बहन के साथ बाल संयमी संयम का दीक्षा प्रसंग शंखेश्वर महातीर्थ में यादगार बन गया। यहां से दीक्षा सम्पन्न होने के बाद श्री जीरावला तीर्थ के लिये विहार आरंभ हो गया। 28 जनवरी को वरमाण तीर्थ में आपश्री की महामांगलिक का आयोजन जोरदार रहा। जीरावला में 3 फरवरी तक स्थिरता के उपरांत मालवा की ओर विहार होगा। प्रथम कार्यक्रम बड़ेद में 27 फरवरी के आसपास होगा। आगामी चार्तुमास भी मालवा में ही होगा।

पूज्यपाद मालव विभूति आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगलरत्नसागर सूरीजी महाराजा के संयचम जीवन के 42 वर्ष पूर्ण हुए

*** मालव भूषण आचार्यश्री नवरत्नसागरसूरीजी के पट्टधर सुशिष्य है।**
*** दक्षिण भारत से मालवा के लिये विहार चल रहा है।**
*** आगामी चार्तुमास मालवा में ही करेंगे।**

विहार यात्रा से- मालव भूषण आचार्य भगवंत पूज्यपाद श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा के पट्टधर सुशिष्य आचार्य देवेश मालव विभूति श्री अपूर्वमंगलरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के संयम जीवन के 42 वर्ष पूर्ण हो गये है। आपका संयमोत्सव श्री वासुपूज्य श्री संघ अनंतपुर में मनाया गया। मैसूर में यशस्वी चार्तुमास पूर्ण कर अब आपश्री का विहार बैंगलोर से आगे की ओर नागपुर होते हुए मालवा के लिये चल रहा है। आपका आगामी चार्तुमास भी मालवा में ही होगा। संयम जीवन के 42 वर्ष (23-1-2017) को पूर्ण होने पर आगमोद्धारक परिवार आपकी खूब-खूब अनुमोदना करता है।

श्री जीरावला महातीर्थे भव्य प्रतिष्ठोत्सव 2 फरवरी को सम्पन्न हुई

जीरावला- जग जयवंत जीवित स्वामी अनन्त आस्थाओं के केन्द्र अति प्राचीन श्री जीरावला पार्श्वनाथ जैन महातीर्थ की पुनः प्राण प्रतिष्ठा 2 फरवरी को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ आयोजित हुई।

तीर्थ ट्रस्ट अध्यक्ष श्री रमणलाल जैन एवं महामंत्री व प्रतिष्ठा महामहोत्सव समिति के संयोजक श्री प्रकाश के. संघवी सिरोड़ीवाला ने बताया कि- प्राण प्रतिष्ठा महामहोत्सव निमत्ते जाजम महोत्सव का भव्यातिभव्य आयोजन 6 जनवरी को हुआ। उन्होंने बताया कि -प्रतिष्ठा महोत्सव संबंधित जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव 28 जनवरी से 3 फरवरी तक हुआ। कुमकुम पत्रिका संबंधित नवकारसी आदि की जाजम समारोह 6 जनवरी एवं विविध साधना संकुली का नामकरण व शेष चढ़ावे 7 जनवरी को हुए। इस भव्य महामहोत्सव में देशभर से कई जैनाचार्य भगवंत, गच्छाधिपतिश्री श्रमण-श्रमणीवृंद श्री जीरावला तीर्थ पधारे। जाजम महोत्सव व प्रतिष्ठा महा महोत्सव दौरान पूरे तीर्थ परिसर की आकर्षक सजावट के साथ नित्य प्रभु भक्ति के कार्यक्रम आयोजित हुए। इस पावन प्रसंग पर देश-विदेश से जैन समाज के कई गणमान्य शीर्ष उद्योग पतियों के साथ हजारों तीर्थभक्त पधारे। ट्रस्ट मंडल एवं प्रतिष्ठा महामहोत्सव समिति द्वारा जाजम व प्रतिष्ठा महा महोत्सव को ऐतिहासिक भव्य तैयारियां की गई थी।

राजगृही वीरायतन में प्रतिष्ठा 17 फरवरी को

राजगृही- राजगृही पूज्य उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.सा. के आर्शीवाद से एवं आचार्य श्री चन्दनाजी महाराज की पावन प्रेरणा से वीरायतन के पावन परिसर में श्री पार्श्वनाथ परमात्मा का भव्य शिखरबद्ध जिनमंदिर का निर्माण चल रहा है। इस मंदिर निर्माण का संपूर्ण लाभ पूना निवासी दानवीर श्री रसिकलालजी सौ. शोभादेवी धारीवाल परिवार ने लिया है। इस मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरूदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.आदि विशाल साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में 17 फरवरी को सम्पन्न होगा। त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। इस अवसर पर शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबुमल जी हरण पधारेंगे। विधि विधान हेतु जयपुर निवासी सुप्रसिद्ध विधिकारक श्री यशवंत गौलेच्छा पधारेंगे।

पदयात्री तीर्थ में गुरू सप्तमी मेला का भव्य आयोजन

थाने- थाने तीर्थ के समीपस्थ मानपाड़ा स्थित श्री शांतिधाम पदयात्री तीर्थ में राजेन्द्र ग्रुप के संयोजन में प्रतिवर्ष की तरह अभिधान राजेन्द्र कोष के रचयिता दाद गुरूदेव कलिकाल कल्पतरू श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का 190 वां जन्म एवं 110 वां स्वर्गारोहण दिवस पर पोष सुद-7 गुरू सप्तमी दिनांक 5 जनवरी को भव्य मेले का आयोजन किया गया। प्रातः थाने तीर्थ से भव्य रथयात्रा, गुरूगुणानुवाद, श्री राजेन्द्रसूरी अष्टप्रकारी पूजा, महा आरती, भव्य आंगी एवं गुरूभक्ति के साथ ही पूर्ण दिवस साधर्मिक भक्ति का आयोजन रखा गया। आयोजन का लाभ खिंवाड़ निवासी संघवी श्रीमती कुसुमबाई बक्षीरामजी ढेलरियावोरा परिवार-थाने को मिला।

चार्तुमासों की घोषणा 16 अप्रेल को रायपुर में होगी

रायपुर- पूज्य गुरूदेव खरतर गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणि प्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने फरमाया है कि पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. के समुदाय के साथ साधु-साध्वीजी भगवंतों के आगामी चार्तुमास की घोषणा रायपुर नगर में 16 अप्रेल 2017 को की जायेगी। पालीताना खरतरगच्छ सम्मेलन में लिये गये निर्णय में इस वर्ष यह परिवर्तन किया गया है। सम्मेलन में यह निर्णय किया गया था कि समुदाय के समस्त चार्तुमासों का निर्णय पूज्य गच्छाधिपतिश्री द्वारा ही फाल्गुन सुदी-चर्तुदर्शी के दिन किया जायेगा। चूंकि इस वर्ष पूज्य गच्छाधिपतिश्री होली चार्तुमास की अवधि में विहार में रहेंगे। वे 17 फरवरी को राजगृही नगर में प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाकर रायपुर की ओर विहार करेंगे। अतः होली चार्तुमास के दिन चार्तुमासों की घोषणा नहीं हो पायेगी। रायपुर में देवेन्द्र नगर में 17 अप्रेल 2017 को प्रतिष्ठा है। उस अवसर पर प्रतिष्ठा से एक दिन पूर्व 16 अप्रेल 2017 वैशाख वदि-5 को चार्तुमास घोषित किये जायेंगे। चार्तुमास की विनंती करने हेतु सकल संघ 16 अप्रेल 2017 को रायपुर पहुंचेंगे।

पूज्य साध्वीश्री इन्दुश्रीजी के जन्म शताब्दी पर महोत्सव

देवास- यहां श्री आदिनाथ परमात्मा जिनालय में पूज्य साध्वीवर्या श्री इन्दुश्रीजी म.सा. के जन्म शताब्दी वर्ष में श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई। आयोजन पूज्य साध्वीश्री कुसुमश्री म.सा. कारूण्योदयाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में 1 से 6 दिसंबर के मध्य मनाया गया। इस अवसर पर श्री पार्श्व पद्मावती श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई।

आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी की प्रथम पुण्यतिथि पर हुई गुणानुवाद सभा

जन्मभूमि से समाधि स्थल तक आठ कि.मी.पैदल चले श्रद्धालु

राजगढ़- आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी की प्रथम पुण्यतिथि पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु नगर से पैदल संघ के साथ 8 कि.मी. दूर 19 जनवरी को भोपावर पहुंचे। पैदल यात्रा आचार्यश्री की जन्मभूमि से समाधि स्थल पर निकाली गई। गुरू मंदिर पर गुरू गुणानुवाद सभा हुई। इस दौरान संघपति का ट्रस्ट मंडल ने बहुमान किया।सुबह श्रद्धालुओं ने नवरत्न आराधना भवन से नगर में भ्रमण करते हुए भोपावर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में संघपति दिनेशचंद्र बाघमल संघवी परिवार द्वारा सभी संघयात्रियों के लिये नवकारसी की व्यवस्था की थी।

भोपावर पहुंचने पर संघपति व संघ यात्रियों की अगवानी ट्रस्ट मंडल सचिव सुरेन्द्र जैन व अन्य ट्रस्टियों ने की। भगवान श्रीशांतिनाथ के दर्शन-वंदन और पूजन के बाद गुरूदेव आचार्यश्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी के समाधि मंदिर पर साध्वीश्री अमितगुणा श्रीजी की निश्रा में गुरू गुणानुवाद सभा हुई। इसके पूर्व सभी ने गुरूदेव के समाधि स्थल पहुंचकर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किये।

गुणानुवाद सभा में साध्वीश्री अमितगुणा श्रीजी ने कहा कि- गुरूदेव नवरत्नसागर सूरीश्वरजी की महिमा अपरमपार थी। वे वचनसिद्ध आचार्य माने जाते थे। महापुरूषों के गुणगान ये यदि उनके जीवन का कुछ अंश भी हमारे जीवन में आ जाए, तो हमारा जीवन धन्य हो सकता है। इसलिये हम सब गुणानुवाद करते हैं।

मालवांचल के प्रमुख तीर्थ श्री श्रीनागेश्वर पार्श्वनाथ, श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की प्रसिद्धि पर चर्चा करते हुए साध्वीश्री ने कहा श्रीनागेश्वर तीर्थ अभयसागरजी की वजह से प्रसिद्ध हुआ। वहीं जैन तीर्थ मोहनखेड़ा जैनाचार्य श्री राजेन्द्र सूरीजी के समाधि स्थल की वजह से प्रसिद्ध हो गया। इसी क्रम में अब भोपावर तीर्थ आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी के अग्निसंस्कार से प्रसिद्धि में आ गया है।

साध्वीश्री अमितगुणा श्रीजी की निश्रा में निकले पैदल संघ के लाभार्थी दिनेश बाघमल संघवी का बहुमान श्री शांतिनाथ जैन श्वेतांबर ट्रस्ट भोपावर की ओर से ट्रस्ट कोषाध्यक्ष जीवाजीरावजी सिंघी ने किया। वहीं कैलाश संघवी का स्वागत ट्रस्ट के हिम्मत जैन व दिलीप पुराणी ने किया। संघवी परिवार की अर्चना संघवी का बहुमान पवन बसंत मुठरिया ने किया। गुणानुवाद सभा को समाजसेवी प्रकाश कावड़िया, दिलीप पुराणी, सुरेश कांग्रेसा आदि ने संबोधित किया। ट्रस्ट द्वारा सकल जैन श्रीसंघ के स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया। दोपहर में ट्रस्ट द्वारा गुरूपद महापूजन का आयोजन किया गया।

थराद में सामुहिक संयमोत्सव राष्ट्रसंत श्री जयंतसेन सूरीजी म.सा.की निश्रा में आयोजित होगा

थराद- पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्री जयंतसेनसूरीजी म.सा. की पावन निश्रा में यहां सामुहिक रूप से 25 संयमी श्रावक-श्राविका का संयमोत्सव 15 फरवरी से आरंभ होगा। सामुहिक वर्षीदान यात्रा 18 तथा आत्मोद्धार दिवस 19 फरवरी है। संपूर्ण कार्यक्रम के लिये राज-राजेन्द्र संयम सहसावन बनाया गया है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रहेगी।

भेरूतारकधाम में चैत्र ओली एवं तीर्थों की यात्रा

पूना-श्री जय जिनेन्द्र सेवा संघ के द्वारा श्री भेरूतारक धाम में चैत्रमास की ओली आराधना के साथ 52 तीर्थों की यात्रा करवाने का भागीरथ आयोजन किया जायेगा। 2 अप्रेल को पारणा, 3 अप्रेल से ओली, 9 अप्रेल को चरम तीर्थंकर परमात्मा प्रभुवीर का जन्म कल्याणक तथा 11 अप्रेल को श्री सिद्धचक्र महापूजन के साथ समापन होगा। ओली आराधना आचार्य श्री जिनेश रत्नसूरीजी म.सा. की निश्रा में होगी। 2018 से सेवा संघ के द्वारा श्री शंखेश्वर तीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ निकाला जावेगा।

स्नेह सम्मेलन का आयोजन

उन्हेल- श्री रसिकलाल धारीवाल पब्लिक स्कूल के स्नेह सम्मेलन दिनांक 22 जनवरी के उपलक्ष्य में श्री सुमतिज्ञान शिक्षण समिति के द्वारा स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि मालवा महासंघ के अध्यक्ष श्री दिलसुखलालजी कटारिया तथा विशेष अतिथि श्री प्रकाशजी जैन बड़नगरवाला तथा डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष श्री शांतिलालजी मारू ने की। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा पुरस्कार वितरण किया गया।

*** लाअत का मुद्दा समझते है हम।**
हर सजदे को एक रिया समझते है हम।।
कैसा बुत खाना और काबा कैसा।
जर्रे-जर्रे को जब खुदा समझते है हम।।

दुजाणा में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव की निश्रा जैनाचार्य श्री रविशेखरसूरी की रही

दुजाणा-राणावत परिवार के आयोजित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन पूज्य आचार्य श्री रविशेखरसूरीजी म.सा. की निश्रा में 25 से 30 जनवरी तक मनाया गया।

भव्य वरघोड़े का आयोजन 29 जनवरी को तथा अंजन भी 29 जनवरी को हुआ। प्रतिष्ठा 30 जनवरी को भव्य महोत्सव के साथ सम्पन्न हुई। फले चुन्दड़ी का लाभ भी राणावत परिवार ने लिया।

श्री जम्बुदीप परिसर में उपाध्याय श्री सौमचंद्रसागरजी एवं पंन्यास श्री मतिचंद सागरजी को आचार्य पर आरूढ़ किया गया

✻ आचार्य पद और उपधान तप की क्रिया साथ में हुई।

पालीताना- सागर समुदाय में एर्व और अभिमान करनेवाली सुमंगल घटना जम्बुद्वीप परिसर से नवम्बर 2016 माह में गठिन हुई जब पूज्यपाद आचार्यदेवेश श्री अशोकसागरसूरीजी म.सा., आचार्य श्री चन्द्रशेखरसागरसूरीजी म.सा.,आ. श्री जयरत्नसागर सूरीजी म.सा., आ.श्री अक्षयचंद्रसागर सूरीजी आदि विशाल संख्या में उपस्थित साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में आचार्य पद प्रदान तथा उपधान तप मालारोपण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 22 से 29 नवंबर तक सम्पन्न कार्यक्रम में पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अभयसागरजी म.सा. की पुण्यतिथि पर गुणानुवाद सभा, 27 नवंबर को उपधान तपस्वियों की शोभायात्रा तथा 28 नवंबर को पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री सौम्यचंद्रसागरजी म.सा. एवं पंन्यास प्रवर श्री मतिचंदसागरजी म.सा.को पूज्य आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीजी म.सा.के वरद हस्ते आचार्य पद प्रदान के साथ उपधान तप की मालारोपण विधि भी सम्पन्न हुई। इस प्रसंग पर सूरिमंत्र तथा श्री शांतिस्नात्र महापूजन भी पढ़ाई गई।

अष्टापद जैन तीर्थ में ध्वजारोहण मेला लगा

रानी- श्री अष्टापद जैन तीर्थ सुशील विहार में प्रतिष्ठा एवं 18 वीं ध्वजा पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। 8 से 10 फरवरी तक आयोजित महोत्सव में श्री घंटाकर्ण महावीर तथा अंबिकादेवी प्रतिमा की प्रतिष्ठा ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न है। पूज्य आचार्य श्री त्रिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा ने निश्रा प्रदान की। प्रतिष्ठा 9 फरवरी को हुई।

डीन्डोरी में 81 इंच पंच धातु प्रतिमा घड़न हुआ

नासिक- यहां के समीप एम.आई. टी.सी. रोलिंग मिल के परिसर में पूज्यपाद आचार्यश्री सागरचंद्रसागर सूरीजी म.सा. की प्रेरणा से 81 इंच पंच धातु के श्री आदिश्वर परमात्मा की प्रतिमा घड़न का शुभारंभ हुआ।

उज्जैन में श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरव पूजन पढ़ाई गई

उज्जैन- अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा से श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरवपूजन का आयोजन 25 दिसंबर को किया गया। श्री मंछालाल पुष्पाबहन ने लाभ लिया। 108 जोड़ें के साथ पूजन श्री प्रवीण जैन रूनीजा, श्री अनिल जैन, लीमड़ी तथा संगीतकार श्री संजय छाजेड़ ने पढ़ाई। श्री मनोजजी हरण ने पूजा में चार चांद लगा दिये। डॉ. सुभाष जैन ने संचालन किया।

मेला लगा

पेदमीरम्-श्री आंध्रप्रदेशान्तर्गत भीमावरम समीपवर्ती दक्षिण भारत का शत्रुंजयावतार अति प्राचीन महाचमत्कारी दिव्य ऊर्जावंत दादा श्री आदिनाथ परमात्मा से सुशोभित नूतन जिनमंदिर में परमात्मा के गादीनशीन (आरूढ़) होने के बाद द्वितीय कार्तिक पूर्णिमा के दिन मेले का आयोजन बड़े ही धर्मामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आसपास व दूर-दूर प्रांतों से अच्छी संख्या में देव भक्तों ने पधारकर दर्शन, सेवा, पूजा नवकारसी, आयंबिल का लाभ लिया। मेला का आयोजन संघवी शा.पुखराजजी मोनाजी सालेचा परिवार, नरसापुर मुरूघर में गोडनवालों ने किया था। चढ़ावे भी काफी ऐतिहासिक रहे। वार्षिक अखंड दीपक चढ़ावा का लाभ में श्री जड़वी ज्वेलर्स तणुकु मरूधर में आहोरवालों ने अच्छी बोली लगाकर लिया।

✻ अरिहंत की आराधना, उनके अतिशयों से आकर्षित होकर नहीं- अपितु उनके वीतराग भाव से आकर्षित होकर करनी चाहिये।

श्री मेघचंद्रसागरजी म.सा. को आगमोद्धारक परिवार की भावांजलि

पालीताना- विगत चार्तुमास इन्दौर पिपलीबाजार में सम्पन्न कर पूज्य गणिवर्य श्री मेघचंद्रसागरजी म.सा.,श्री नागेश्वर महातीर्थ में श्री अभयसागरजी म.सा. की गुणानुवाद सभा सम्पन्न कर रतलाम पधारे थे। यहां से पालीताना का छःरि पालित संघ में सम्मिलित हो पालीताना आगमन हुआ था। दादा के दरबार में संघ माल का आयोजन होना था। आपश्री सिद्धगिरी की यात्रा पर पधारे यही दिनांक 19 जनवरी को श्री पद्मावती टुंक पर आप देह त्याग कर मुक्ति मार्ग के राही बने। आपश्री के साथ उस समय मुनिश्री आनंदसागरजी म.सा., श्री पद्म सागरजी (पुत्र मुनि) थे। अन्य मुनि भी साथ ही थे। शाम को आपश्री का अग्नि संस्कार किया गया। संसारी से संत जीवन तक आप स्वाध्याय लेखन से जुड़े रहे। 'युवा प्रबोधन' भी आपकी देखरेख में छपता रहा है। आगमोद्धारक परिवार आपको सादर भावांजलि अर्पित करता है।

सिरोडी में 55 वीं ध्वजारोहण एवं 40 वां दीक्षा दिवस

सिरोडी- श्री गोडी पार्श्वनाथ भगवान की 55 वीं वर्षगांठ एवं पू.आ.श्री रविरत्नसूरीजी म.सा.की 40 वीं दीक्षा वर्ष के उपलक्ष में श्री 108 पार्श्वनाथ पूजन,18 अभिषेक, सत्तरभेदी आदि के आयोजन में गुरू भगवंतों का नगर प्रवेश, प्रवचन, संघपूजन एवं पू.आ. श्री रविरत्न सूरीजी म.की 100 वीं वर्धमान तप ओलीनिमित्ते, सामुहिक 350 आयंबिल तप एवं 400 रूपये की प्रभावना हुई। दिनांक 5-12-2016 श्री केवलबाग श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी की ध्वजारोहण एवं श्री गोडी पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर पर ध्वजारोहण श्रीमती लाखीबाई दीपचंदजी परिवार ने किया। तीन दिन का भव्य महोत्सव सिरोडी जैन संघ में उत्साह पूर्वक मनाया। पूज्यश्री विहार करके दिनांक 14-12-2016 को खेदर में मुमुक्षु जस्मीनाकुमारी के दीक्षा महोत्सव में पधारे।

बसंत पंचमी पर मेला लगा

माततोर- श्री त्रिभुवन भानु पार्श्वनाथश्री मणिभद्रवीर जैन श्वेतांबर महातीर्थ में 1 फरवरी को बसंत पंचमी पर भव्य मेले का आयोजन किया गया। पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा.की निश्रा में आयोजित महोत्सव में श्री मणिभद्रवीर का जन्मोत्सव मनाया गया। महापूजन हवन हुआ। 7 फरवरी को इन्दौर के अनुराग नगर में आपका 53 वां दीक्षा महोत्सव 11 फरवरी को उन्हेल में श्री कामितपुरा पार्श्वनाथ जिनालय का प्रवेश द्वार उद्घाटन चौमहला में 1 मार्च को जन्म दिन मनाया जावेगा। 21 अप्रेल को शिवपुर, मातमोर में अंजन प्रतिष्ठा होगी।

संक्षिप्त-समाचार

✻ रायपुर में श्री मनमोहन पार्श्वनाथ धाम कुर्णशनगर से श्री पार्श्वनाथ जन कल्याण मेला 22 दिसंबर को आयोजित हुआ।

✻ घसाई में पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा, श्री आचार्य श्री नंदीवर्धनसागरसूरीजी म.सा. तथा आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी ठाणा की निश्रा में उपधान तप की मोक्षमाला 6 दिसंबर को सम्पन्न हुई।

✻ श्री जैन श्वेतांबर तीर्थ, श्री पार्श्वमणी पेदतुम्बलम् आदोनी में आचार्य श्री चन्द्रजितसूरी की निश्रा तथा मार्गदर्शक प्रेरक शासनरत्न श्री मनोज कुमार बाबूमलजी हरण के निर्देशन में पंचान्हिका महोत्सव 24 से 28 नवम्बर तक मनाया गया।

✻ श्री उवसग्गहरं पार्श्वनाथ महातीर्थ श्री पार्श्वप्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर अट्ठम तपाराधना का आयोजन 22 से 24 दिसंबर को किया गया। निश्रा श्री महेन्द्रसागर प्रशिष्य श्री विवेकसागरजी की रही।

✻ चैनपुरा- श्री चंदलेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ से अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा से श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्मदीक्षा कल्याणक पर 22 से 23 दिसंबर को महोत्सव पूर्वक मनाया गया।

✻ श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में श्री पार्श्वनाथ प्रभु जन्म-दीक्षा कल्याणक अट्ठम तपाराधना के साथ 22 से 23 दिसंबर तक मुनिश्री ऋषभ-विजयजी म.सा. की निश्रा में मनाया गया।

✻ श्री पार्श्वमणि महातीर्थ पेद्दम्बलम् आदोनी में श्री पार्श्वनाथ प्रभु का जन्म दीक्षा कल्याणक पर त्रि दिवसीय आयोजन श्री सुलक्षणा श्रीजी म.सा. की निश्रा में अंतर्राष्ट्रीय विधि कारक श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा से मनाया गया। 22 से 23 दिसंबर तक कार्यक्रम हुआ।

✻ भीलवाड़ मेवाड़में पूज्य आचार्य भगवंत श्री रविशेखर सूरीजी म.सा. की निश्रा में कोठारी परिवार के द्वारा आयोजित उपधान तप की मोक्ष माल 1 दिसंबर को सम्पन्न हुई।

गुरूकृपा तीर्थ की प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न

रामजी का गोल- गुरूकृपा की स्मृति स्वरूप बाड़मेर जालोर जिले का संगम नवोदित श्री आर्य गुण गुरूकृपा जैन तीर्थ रामजी का गोल की भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महामहोत्सव राजस्थान दीपक, साहित्य दिवाकर, तीर्थ प्रेरक प.पू.आचार्य भगवंत श्री कलाप्रभ सागर सूरीश्वरजी म.सा., प.पू. शासन प्रभावक मधुरभाषी खरतरगच्छीय आचार्य भगवंत श्री जिनपीयूषसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि विशाल साधु-साध्वीवृंदों की पावनकारी निश्रा 21 जनवरी को शुभ मुहूर्त में सम्पन्न हुआ।

गुरूकृपा तीर्थ की अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के साथ 11 जनवरी से प्रारंभ हुआ। बारह दिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के साथ कई भक्ति रस के कार्यक्रम आयोजित किये गये। प्रतिष्ठा महोत्सव के दौरान पूरे तीर्थ परिसर को दुल्हन की तरह से सजाया गया। पूरे तीर्थ को रंग-बिरंगी रोशनी, फूलों की रंगोली, तारण द्वार, मुख्य द्वार पर आकर्षक रोशनी, स्वागत द्वार सहित कई तरह की आधुनिक सजावट की गई। विभिन्न समिति के सदस्य अपने अपने काम में जुटे हुए है। महोत्सव में आने वाले हजारों श्रद्धालुओं के आवास, भोजन, चिकित्सा रोशनी आदि की व्यवस्था की गई। महोत्सव के दरम्यान तीनों टाईम साधार्मिक भक्ति का भी आयोजन हुआ। प्रतिष्ठा के दिन सकल संघ की फलेचुंदड़ी का आयोजन हुआ। इस पूरे महोत्सव के दौरान प्रतिदिन प्रभुजी की भव्य अंगरचना के साथ नित्य रात्री को देश के ख्याति नाम संगीतकारों भक्ति संध्या सहित कई धार्मिक आयोजन आयोजित किये गये। इस प्रसंग पर देशभर से कई राजनैतिक, प्रशासनिक, उद्योगपति, हस्तियों सहित आस-पास कई नगरों से हजारों श्रद्धालु गण पधारे।

कालन्द्री में जीवित महोत्सव मनाया गया

कालन्द्री-पू. आचार्यश्री रविशेखर सूरीजी म.सा. की पावन निश्रा में रूपचंदजी मानाजी पटनी परिवार के द्वारा माता किरण बेन तथा पिता कांतिलाल रूपचंदजी के जीवित महोत्सव पर जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया। 17 से 21 जनवरी के आयोजित कार्यक्रम में विविध पूजन, भक्तामर महापूजन पढ़ाई गई। आपकी निश्रा में यहां श्री मणिभद्र मंदिर का खनन एवं शिलान्यास का आयोजन भी 14 से 16 जनवरी तक किया गया। इस अवसर पर श्री सिद्धचक्र, मणिभद्र महापूजन पढ़ाई गई।

तन्डलम् में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

तन्डलम् (पेरम्बत्तूर)- आत्म वल्लभ नगर में स्वद्रव्य से निर्मित श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ चौमुखी जिनालय का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव तथा साधर्मिक वात्सल्य भवन का लोकापर्ण कार्यक्रम 21 जनवरी को हुआ। पूज्य आचार्य श्री नित्यानंदसूरी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में सम्पन्न कार्यक्रम को मार्गदर्शन तथा प्रेरणा अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई शासनरत्न मनोज कुमार बाबूमलजी हरण की प्राप्ति हुई। 17 से 22 जनवरी तक सम्पन्न महोत्सव में थाईलैंड अमेरिका प्रतिष्ठित होनेवाली श्री शांति नाथ परमात्मा की प्रतिमा की अंजन शलाका हुई।

दयालशाह किलामंदिर में प्रतिष्ठा 2 मार्च को होगी

कांकरोली- दयाल शाह किला मंदिर में प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन पूज्य आचार्य श्री गुणरत्नसागर सूरीजी आदि विशाल ठाणा साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में 27 फरवरी से 3 मार्च तक होगा। जीर्णोद्धार का लाभ सेठ जीवनदास गोड़ीदास शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन देरासर ट्रस्ट, अहमदाबाद ने लिया है।

आचार्यश्री जयानंदसूरीजी की निश्रा में 4 दीक्षाएं सम्पन्न

पालीताना- श्री शत्रुंजय महातीर्थ की छाया में सौधर्मबृहत्पोगच्छीय जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयानंद सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 23 नवंबर 2016 को अ.सौ.मंजूदेवी भूरमलजी बंदामुथा (धाणसा),कु. पायल कमल चंदजी वजावत (अहोर), कु. सुहानी (धाणधार-सुरत) कु. श्रद्धा संजयजी रामाणी (गुडाबालोतान-नेल्लोर) की भगवती प्रवज्या उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुई। नूतन साध्वीजी का क्रमशः साध्वीजी मुक्ति चैत्याश्रीजी, साध्वीजी मुक्तिअभया श्रीजी, साध्वीजी आदियशा श्रीजी, साध्वी मुक्तिश्रेया श्रीजी नामकरण हुआ।

उदयपुर में चार्तुमास तय

उदयपुर- सौधर्मबृहत्पोगच्छीय आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका प्रवर्तिनी गुरूणीजी मुक्तिश्रीजी की शिष्या साध्वीजी श्री कुशलप्रभा श्रीजी, वसंत बाला श्रीजी आदि ठाणा का सन् 2017 का चार्तुमास आहोर निवासी शा. छगन राजजी नगराजजी वजावत परिवार आहोर की ओर से होना तय हुआ है। परिवार की ओर से शत्रुंजय तीर्थ में दीक्षोत्सव के अवसर पर जय बोलायी गई।

डेहलवाला पूज्यपाद श्री रामसूरीजी की जन्म शताब्दी-दीक्षा और आचार्य पद से सुशोभित हुई गुरूराम पावन भूमि

पाल- पूज्यपाद आचार्य भगवंत गच्छाधिपति श्री रामसूरीश्वरजी महाराजा डेहलवाला की जन्म शताब्दी की पूर्णता पर गुरूराम पावन भूमिपाल में भावाचार्य वंदनावली सात मुमुक्षुओं की प्रवज्या और पूज्य पंन्यास प्रवर श्री मोक्षरत्न विजयजी को आचार्य पद पर आरूढ़ होने के उपलक्ष में 1 से 6 फरवरी तक पावन महोत्सव का आयोजन किया गया। पूज्य आचार्यदेव गच्छाधिपति श्री अभयदेव सूरीजी, पूज्य आ. श्री रत्नचंदसूरीजी, पू.आ. श्री यशोभद्रसूरीजी, पू.आ.श्री जगतचंदसूरीजी, पू.आ.श्री जयानंद सूरीजी, पू.आ.श्री पीयूषभद्रसूरीजी म.सा. की स्वीकृति के साथ सम्पन्न होनेवाले इस आयोजन में गच्छाधिपतिजी एवं आचार्य श्री रत्नचन्द्रसूरीजी के साथ बड़ी संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा रही। 1 फरवरी को गुरूराम शताब्दी महोत्सव का समापन 2 फरवरी को 7 मुमुक्षुओं की प्रवज्या एवं 6 फरवरी को पंन्यास श्री मोक्षरत्नविजयजी की आचार्य पदवी सम्पन्न हुई इसके पूर्व 5 फरवरी को भावाचार्य वंदनावली समारोह भी हुआ।

खेदर में दीक्षा महोत्सव सम्पन्न

खेदर (राज.)- प.पू. दीक्षा दानेश्वरी आचार्यदेव श्री गुणरत्न सूरीजी म. के शिष्य प.पू. सूरिमंत्र आराधक आचार्यदेव श्री रविरत्न सूरीश्वरजी म. पंन्यास श्री जयेशरत्न विजयजी म.आदि एवं साध्वी 300 शिष्या की गुरूमाता पू. पुण्यरेखाश्रीजी म. साविरागरेक्षा श्रीजी म., साध्वी मोक्षित रेखाश्रीजी म.आदि 31 की शुभ निश्रा में मुमुक्षु जस्मिनाकुमारी गेनमलजी की दीक्षा प्रसंगे गुरू भगवंतों का 63 बेड़ (कलश) से स्वागत सामैया, प्रवचन-पगले श्री पंच कल्याणक पूजा, नवपद पूजन भव्य वरसीदान का वरघोड़, बहुमान, विदाई समारोह, विजय तिलक आदि किया गया। प्रातः शुभ मुहूर्त में 14 दिसंबर को गृहांगण त्याग कर दीक्षा मंडप प्रवेश करके पूज्य गुरूदेवश्री ने क्रिया कराई और रजोहरण ग्रहण को दीक्षार्थी का मनमपुर नाच उठा। झुमती हुई जस्मिनाकुमारी ने ओघो लेकर वेष परिवर्तन करके साध्वीजी वेश में पधारी। नूतन नाम जिनार्थी रेखाश्रीजी रखा गया व साध्वी श्री मोक्षितरेखा श्री की शिष्या साध्वी श्री देशनारेखा की शिष्या बनी। इस महोत्सव का आयोजन श्री गमनाजी जगाजी टापरानी परिवार ने किया।

कापरड़ा तीर्थ का नौ दिवसीय अंजन प्रतिष्ठा, प्रवज्या महोत्सव हर्षोल्लास पूर्ण सम्पन्न

कापरड़ा- सूर्यनगरी जोधपुर से मात्र 50 कि.मी. दूर 500 वर्ष प्राचीन मरूप्रेदश का गौरव, भूतल से 95 फीट ऊंचा भव्य गगनचुम्बी शिखर 108 पार्श्व प्रभु के जिनालयों में प्रमुख सम्पूर्ण विश्व में एक मात्र अतिप्राचीन चौमुखा चौमंजिला में विराजित धरेणेन्द्र, पद्मावती के युगल द्विफणों से सुशोभित जहर मौहरा नीलवर्णीय पाषाण से निर्मित भूमि से स्वतः प्रकार श्री सवयंभू पार्श्वनाथ मंदिर का सम्पूर्ण जीर्णोद्धार के साथ शासन सम्राट परम पूज्य आचार्य श्री विजय नेमिसूरीश्वरजी म. के समुदायवर्ती आचार्य श्री विजय सोमचन्द्रसूरीजी, आचार्य श्री श्री चन्द्रसूरीजी, आचार्य श्री कुलचन्द्रसूरीजी, आचार्य श्री प्रशमचन्द्र सूरीजी म.आदि 50 से अधिक साधु-साध्वी म.सा. के पावन सानिध्य में 27 नवंबर से 5 दिसंबर 2016 तक अजंन-शलाका प्रतिष्ठा एवं प्रवज्या महा महोत्सव देश के विभिन्न भागों से पधारे श्रद्धालुगणों की सहभागिता से उत्साह-उमंग-हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

आचरण का प्रभाव

एक बार एक स्त्री महाराष्ट्र के महान सन्त ज्ञानेश्वर महाराज के पास अपने छोटे पुत्र को लेकर आयी और उसने कहा- महाराज इसे अपच की बीमारी है। मैंने इसे कई दवाईयां दी किन्तु उनका कुछ भी असर नहीं हुआ। ज्ञानेश्वर महाराज ने उससे कहा, बहन, इसे कल ले आना। दूसरे दिन जब वह लड़के को लेकर उनके पास गयी, तो उन्होंने लड़के से पूछा, तू ज्यादा गुड़ खाता है न? उसके द्वारा हाँ, कहने पर उन्होंने कहा, तू गुड़खाना बन्द कर दे, तू जल्द ही अच्छा हो जाएगा। बच्चे ने स्वीकृति में सिर हिला दिया। किन्तु उसकी माँ सोचने लगी कि यह बात महाराज ने कल ही क्यों नहीं बता दी। उन्होंने आज नाहक ही बुलाया। उससे न रह गया और उसने पूछ ही लिया, महाराज! यह बात तो आप कल ही बता सकते थे?सन्त बोले- बहन! कल जब तुम आयी थी, तो मेरे सामने ही गुड़ रखा हुआ था। यदि मैंने इसे गुड़ खाने से मना किया होता, तो यह सोचता कि यह खुद तो गुड़ खाता है और मुझे खाने के लिये मना करता है। इसी कारण मैंने स्वयं गुड़ खाना बन्द कर दिया है और अब इस स्थिति में हूं कि इसे भी गुड़ खाने से मना कर सकता हूं। यह सुन स्त्री ने उनके पैर छुपे और संतुष्ट हो चली गयी।

✻ *अरिहंत भगवंत स्वयं शक्ति का परिचय किसी को नहीं देते ऐसा नहीं है। वे अपना परिचय कर्म राजा को देते हैं। वे कर्म राजा को कहते हैं कि तू अपने को सर्वसत्ताधीश मानकर अनंत आत्माओं को कारागृह में रखता है परन्तु तेरे देखते-देखते मैं उन आत्माओं की तेरी कैद से मुक्त कर मुक्ति पूरी में भेज देता हूं जहां तेरा वश नहीं चलता।*

हमारे तीज-त्यौहार

1- माघ सुदी-5	बुधवार	1/2/2017	1-श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ एव श्री अमीझरा पार्श्वनाथ तीर्थ की वर्षगांठ 2- पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीजी महाराजा का दीक्षा दिन (लीमड़ी)
2-माघ सुदी-10	सोमवार	6/2/2017	रोहिणी
3- माघ सुदी-14	गुरूवार	9/2/2017	कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य की दीक्षा तिथि
4- फाल्गुन वदी-11	बुधवार	22/2/2017	श्री आदिनाथ प्रभु का केवलज्ञान कल्याणक

पुष्प नक्षत्र-	आरंभ-माघ वदी-14	दिनांक 9/2/2017,	समयः- 10.49 बजे
	समाप्त-माघ वदी-15	दिनांक 10 /2/2017,	समयः- 09.40 बजे

संसार में तो दुःख ही होता है

✽ पं. गुणसुंदरविजयजी गणी

उस भले भाई को उसकी माँ ने आज्ञा फरमाई, कॉलेज से वापस आते समय बाजार से अच्छी से अच्छी चालनी लेकर आना। शाम को वह चालनी के बिना ही वापस आया। माता ने कारण पूछा तो भला कहने लगा- माँ! बाजार में खूब-खूब घूमा लेकिन एक भी चालनी अखंड नहीं थी, सभी छिद्रवाली ही थी।

इस भले भाई को माता समझा सकी कि चालनी छिद्र बिना की होती ही नहीं। लेकिन इस जगत में ऐसे कितने ही भला भाई है जिन्हें समझाया गया कि संसार दुःख विनाका-त्रास विनाका-पीड़ा विनाका-जन्म-मृत्यु-आधि-व्याधि-उपाधि विनाका होता ही नहीं पर वे समझने को तैयार ही नहीं। भगवन् ऐसे भले भाईयों का भला करें। यही शुभाभिलाषा!

✽ आगमकारों ने अरिहंत भगवंत की शक्ति का जो वर्णन किया है वह संपूर्ण सत्य ही है। भौतिक सामग्री का उपयोग जहां सर्वोत्तम हो, वहां शारीरिक शक्ति सर्वोत्कृष्ट होगी ही।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम २५ सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✽पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चातुर्मास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें। ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सके।

✽आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✽पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव,मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✽अंक आपके तक नियमित रूप से नवीन स्वरूप के साथ १० तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक